इतिहास

- प्राचीन
- मध्यकालीन
- आधुनिक

पुरातत्व (Archaeology)
→ लिखित साक्ष्य ×
खुदाई (Excavation)

इतिहास - लिखित साक्ष्य ✓

पुरातत्व

- पाषाण युग
- ताम्र युग
- कांस्य युग → हड़प्पा काल

→ आयरन/लौह युग

पाषाण युग, ताम्र युग → प्रागैतिहासिक काल
↓
लिखित साक्ष्य ×

कांस्य युग → आद्य ऐतिहासिक काल
↓
लिखित साक्ष्य ✓
(अपठनीय)

पाषाण काल

(पत्थरों के उपकरणों के आधार पर)

- पुरापाषाण काल (5 लाख - 10,000 BC)
- मध्यपाषाण काल (9000 BC - 4000 BC)
- नवपाषाण काल (7000 BC - 1000 BC)

BC ←—— ——→ AD (Anno Domini)

CE - Common era

10,000 BC | ईसा मसीह का जन्म

ईसा मसीह के जन्म से पहले

ईसा मसीह के जन्म के बाद

PARMARSSC

पृथ्वी- 4000 M साल पुरानी

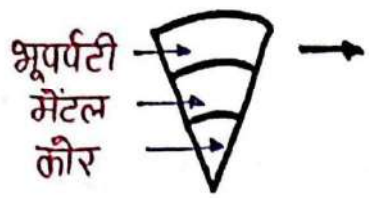

4th stage - चतुर्धातुक अवस्था

(10000 BC तक) प्लीस्टोसीन → हिमयुग

होलोसीन

शिकारी & भोजनसंग्रह ← **पुरापाषाण काल**

पुरापाषाण = पुराना + पत्थर

पूर्व पुरापाषाण काल	मध्य पाषाण काल	उत्तर पुरापाषाण काल
(5 लाख - 50,000 BC)	(50,000 - 40,000 BC)	(40,000 - 10,000 BC)

↳ प्लीस्टोसीन का अंतिम चरण

पूर्व पुरापाषाण कालीन स्थान :

- सोन/सोहन घाटी → पंजाब
- बेलन घाटी → उत्तर प्रदेश (गुफा/चट्टानीय आवास)
- डिडवाना → राजस्थान
- नेवासा → महाराष्ट्र
- हुन्सगी → कर्नाटक
- पहलगाम → कश्मीर
- पटने → महाराष्ट्र

↳ शुतुरमुर्ग के साक्ष्य सबसे पहले मिले।

PARMAR SSC

INDIA AT THE TIME OF STONE AGE
AFGHANISTAN
N
Gilgit Hoard
San Ghao
Shalozan
Jhelum
Chenub
Soan Valley
Beas Valley
TIBET
Ravi
Sutlej
Panipat
Fort Munro
Sonepat
Indus
Rajpur Parsu
NEPAL
Alamgirpur
Ganga
Fatehgarh
Mathura
BHUTAN
Bairat
Jamuna
Kaushambi
Rajghat(Babaras)
Noh
Dooti
Chirand
Khurdi
Soorajpur
Buxar Kaushav
EAST
BENGAL
Sidhpur
Sonpur
Ahar
Pondi
Saguna
Baragunda
Nagda
Morhan Pahar
Kunti
BURMA
Eran
Jabalpur
Sarhat
Santal
Lothal
Ujjain
Bassia
Narbudda
Rajkot
Tapti
Singhanpur
Adamgarh
Bhagrapit
Nevasa
Jorwa
Godavari
Pochampad
Chandoli
Bhong
Kondapur
Ralgir
Yelleshwara
Kallor
Krishna
Piklihal
Krishna
Jadigenhall
Nagarjun Konda
Gundla-Brahmeshwaram
Brahmagiri
Pallavaram
Savanadurg
Perumbair
Attirampakkam And Gudiyam Cave
Suttukeni
Porkalam
Mutrapaloon
Gaurimedi
Perumal hills
Adichannalur
CEYLON
Rocks & Cave Paintings
Middle Stone Age
Late Stone Age
Early Stone Age
Finds of Copper & Bronze Implements
Iron Age
Extent of Iron Age Graves
Map not to Scale
Copyright © 2022 www.mapsofindia.com

मध्य पुरापाषाण काल :

फ्लेक (flake) तकनीक पर आधारित
↳ दो पत्थर टकराकर नया धारदार उपकरण बनाना

उत्तर पुरापाषाण काल :

होमोसेपियन की उपस्थिति
भीमबेटका की गुफायें → MP

'Flint तकनीक का विकास'

इनामगाव, नेवाड़ा → महाराष्ट्र
डिडवाना → राजस्थान

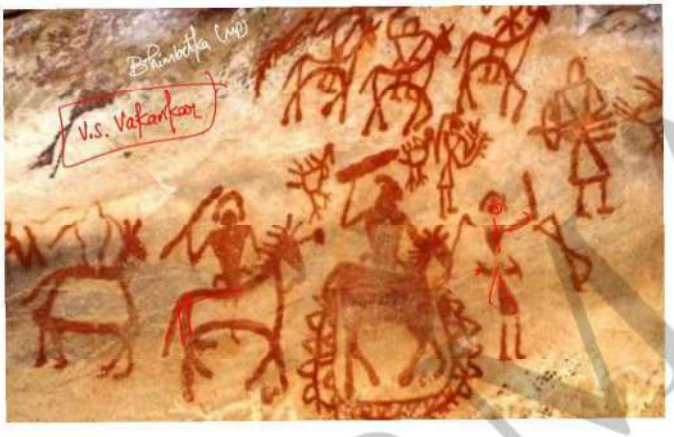

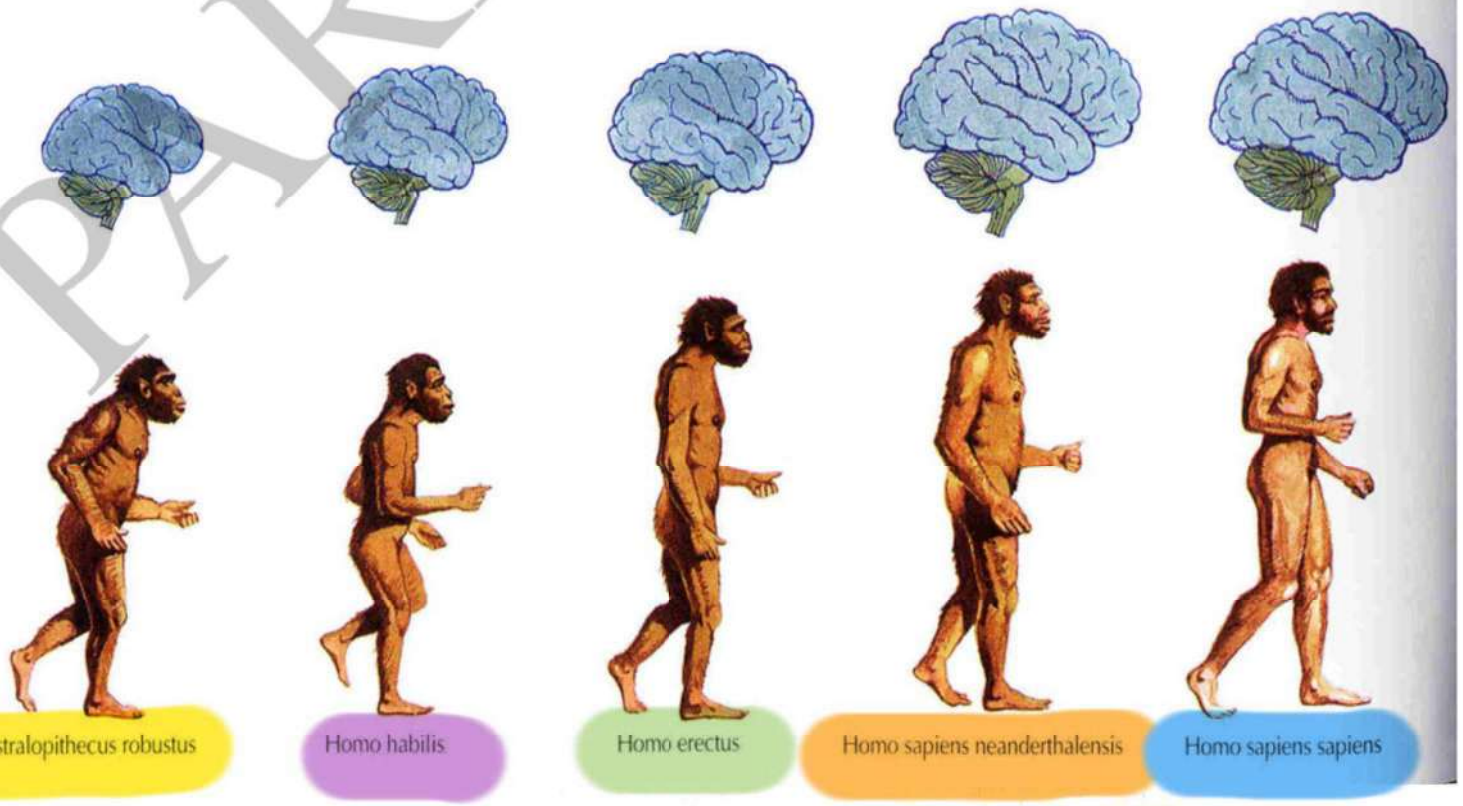

PARMAR SSC

मध्यपाषाण काल
(9000 BC - 4000 BC)

→ पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच का संक्रमणकालीन चरण

→ गर्म जलवायु के परिणामस्वरूप वनस्पतियों (flora) और जीवों (fauna) में वृद्धि।

- लंघनाज → मेहसाना जिला, गुजरात
- भीमबेटका → मध्यप्रदेश (भोपाल के निकट)
- चोपनीमांडो → UP (इलाहाबाद के निकट बेलन घाटी में)
- वीरभानपुर → पश्चिम बंगाल (वर्धवान जिला)
- बागोर → राजस्थान
- संगनकल्लू → कर्नाटक
- तूतीकोरीन → दक्षिणी तमिलनाडु

'शिकारी & समुदाय'

→ Microliths, छोटे पत्थरों के उपकरणों का प्रयोग।

साक्ष्य → आदमगढ → MP
बागोर → राजस्थान
↳ सबसे पहले जानवरों को पालतू बनाया।

नवपाषाण काल
(7000 BC - 1000 BC)

नवपाषाण
नये पत्थर

→ खाद्य उत्पादक

→ मेहरगढ - बलूचिस्तान
- सबसे पहले गेहूं के साक्ष्य, जौ & कपास के साक्ष्य
- घरों के साक्ष्य

→ कश्मीर घाटी -
- हड्डियों के बने उपकरण & हथियार
- बुर्जहॉम
  - झील के किनारे गड्ढे में निवास
  - श्रीनगर से 16 KM पश्चिम में
  - इंसान के साथ पालतू कुत्तों का शव दफन
- गुफ्कराल
  - कुम्हारों की गुफा
  - श्रीनगर के 41 KM दक्षिण-पश्चिम में
  - कृषि & पशुपालन

→ बिहार → चिरांद → हड्डियों के उपकरण

PARMAR SSC

→ कर्नाटक → संगनकल्लू, ब्रह्मगिरी, मास्की, पिक्लीहल, हल्लूर
(बाजरा की खेती)

→ उत्तरप्रदेश → इलाहाबाद, चोपनी
चावल की खेती

→ आन्ध्रप्रदेश → भीमा, कृष्णा & तुंगभद्रा नदी के पास
वुदिहाल
उत्नूर → सबसे पुरानी साइट
नागार्जुनकोंडा

→ तमिलनाडु → परयामपल्ली & कावेरी

→ वेलनघाटी → कोल्डिहवा & महागरा
सबसे पहले (7000 BC) चावल के साक्ष्य

→ मेघालय → गारो पहाड़ी

→ असम → दाओजली हेडिंग → जेडाइट पत्थर (हरा) पाया गया।

{ कैटल हुयुक (तुर्किये)
नवपाषाणकालीन शहर }

- मिट्टी के बर्तन (Pottery) : लाल & काले
- कला (Art) : भीमबेटका (भोपाल से 45 km दक्षिण)
  ↳ चट्टानों में चित्रकला (मानवों के चित्र)

→ नवपाषाणकालीन लोग संम्पत्ति भी धारण करते थे।

मानवों द्वारा पहली धातु की खोज- **तांबा** (copper)

PARMAR SSC

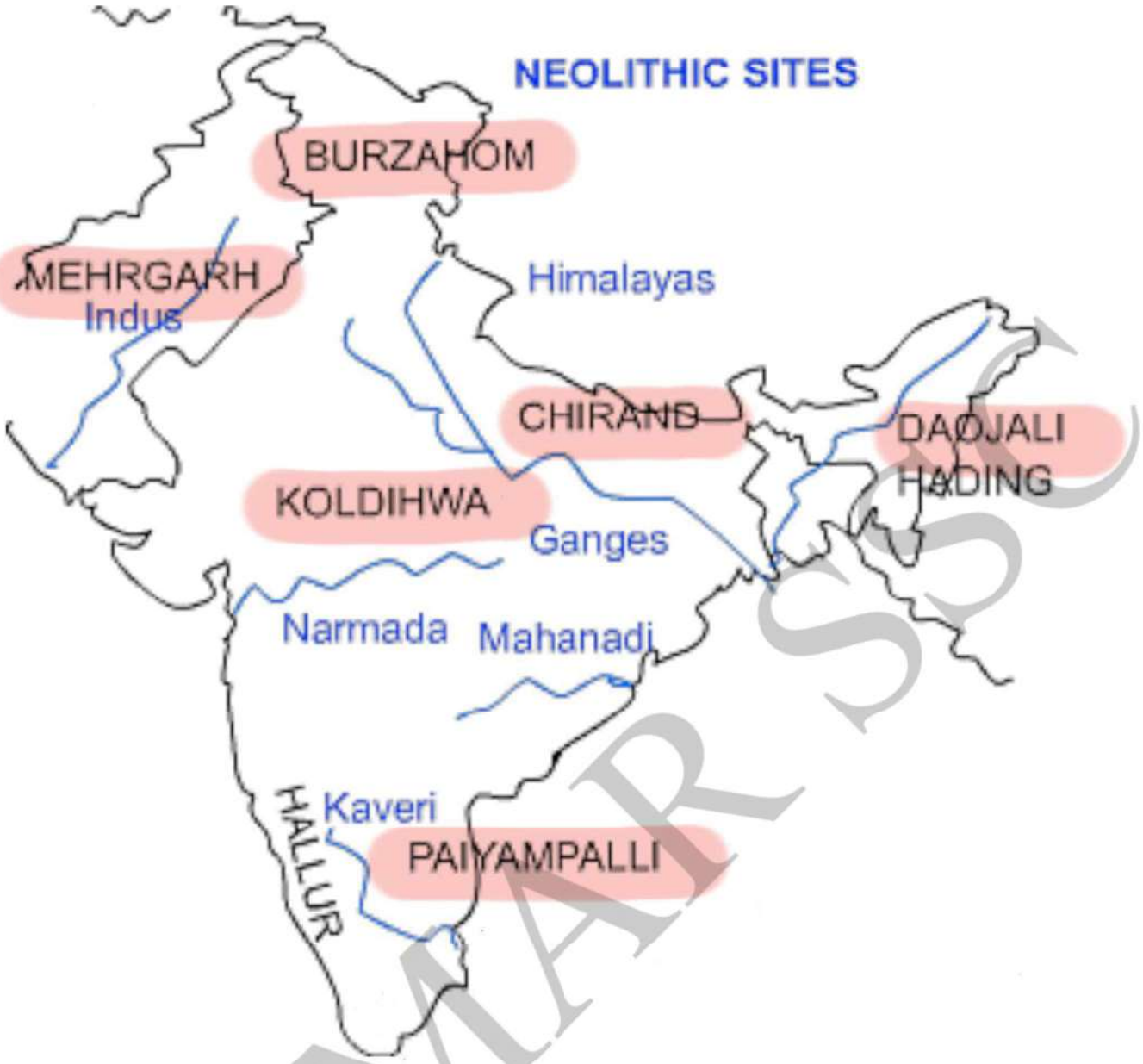

PARMAR SSC

ताम्रयुग (Chalcolithic age)

→ ग्रामीण समुदाय

→ दक्षिण पूर्वी राजस्थान (बनासघाटी)
- अहर - (सबसे पहला)
- गिलुण्ड

खेत्री खान - राजस्थान
मलजखंड - MP
स्वाल्टा - ताप्तीनदी

→ पूर्वी भारत
- चिरांद → गंगानदी
- वर्धवान जिला } WB
- मिदनापुर जिला } WB

→ मध्यप्रदेश → मालवा, कायथा, इरान → कालीसिंध

→ महाराष्ट्र → जोर्वे संस्कृति, नेवासा, दायमाबाद, चंदोली, इनामगांव, नासिक, नवदाटोली → नर्मदा
- जोर्वे → प्रवरा (गोदावरी की सहायक)

दायमाबाद - सबसे बड़ी साइट (ऑर्वे के अंतर्गत)

गनेश्वर - राजस्थान (तांबे के बने बहुत उपकरण मिले)

- कलश में अस्थियाँ (Urn Burial) पाई गई।
- पकी ईंटों & घोड़े से अंजान
- बर्तन (Pottery) { काली & लाल / गेरुआ रंग की भी

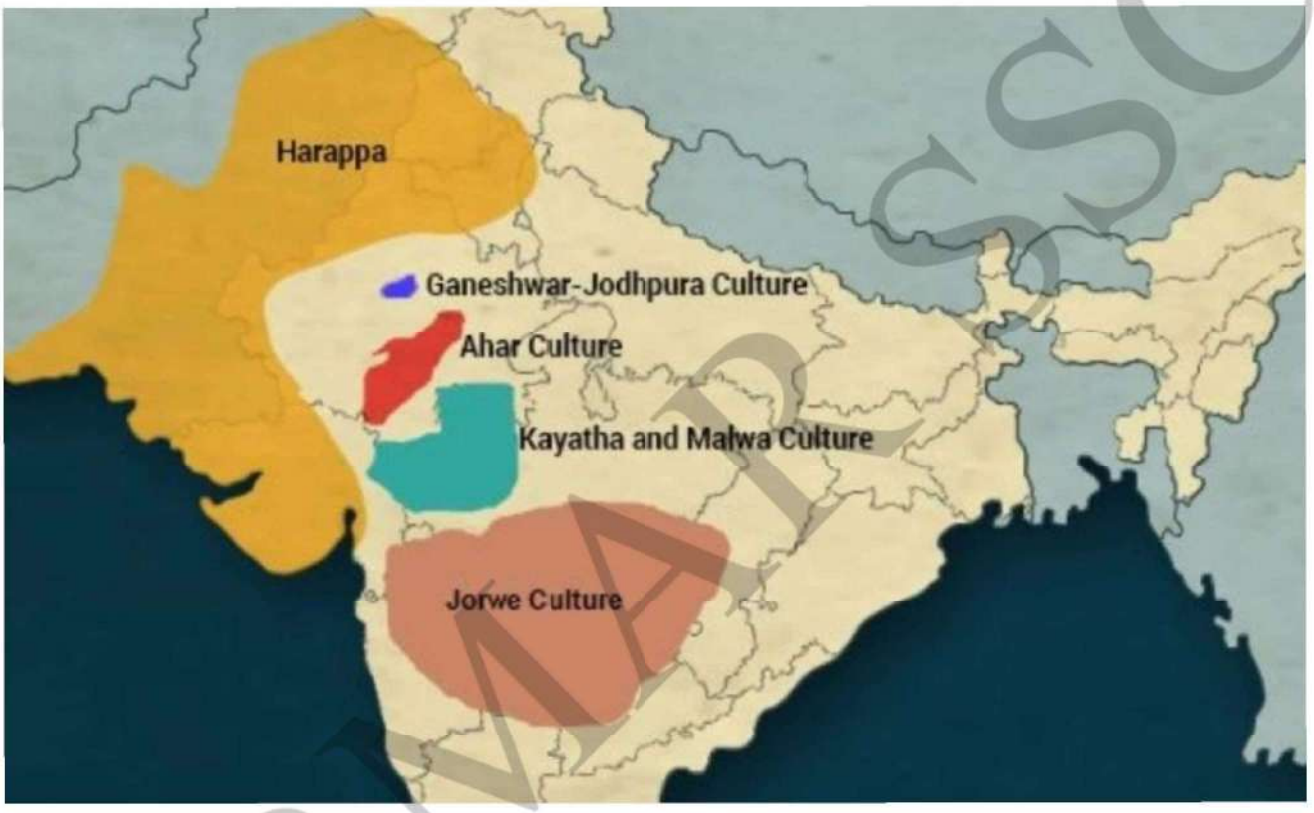

अन्य:

- इंडिया शब्द सिंधु से आया है जिसे संस्कृत में कहा जाता - सिंधु
- किस प्रकार के मेगालिथ (कब्र/स्मारक) में पत्थर के टुकड़े कब्र के चारों ओर गोलाकार आकार में स्थापित किये गये थे - केयर्न सर्कल
- मेगालिथ खड़ा करने की प्रथा लगभग 3000 वर्ष पहले शुरु हुई थी।
- सेल्ट नवपाषाणकाल का एक औजार है।
- 'होमो इरेक्टस' की खोपड़ी किस प्रागैतिहासिक भारतीय स्थल में पाई गई थी - हथनोरा (MP)

PARMAR SSC

PARMAR SSC

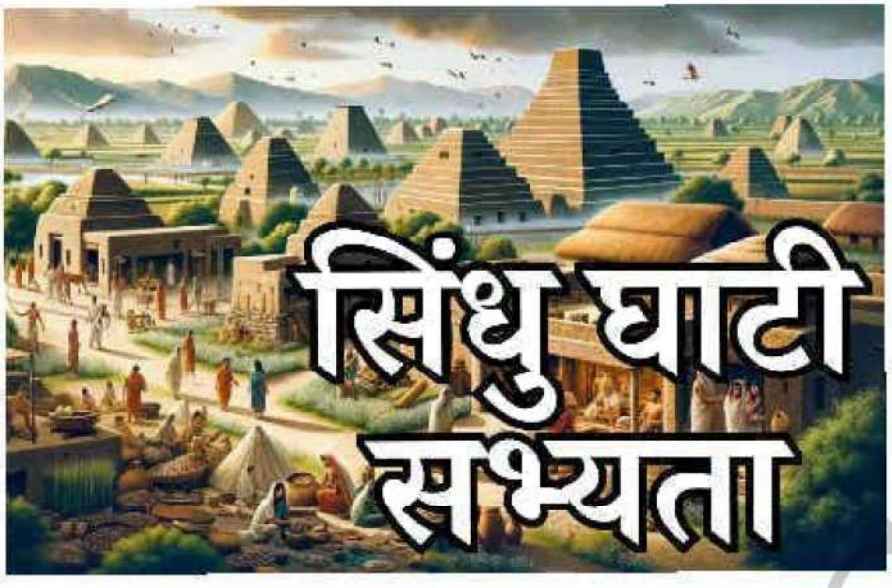

Indus Valley Civilisation OR Harrapan Civilisation

- Early Harappan phase- 3000-2600 BCE
  प्रारंभिक हड़प्पा चरण- 3000-2600 ईसा पूर्व
- Mature Harappan phase- 2600-1900 BCE
  परिपक्व हड़प्पा चरण- 2600-1900 ईसा पूर्व
- Late Harappan phase- 1900-1700 BCE
  उत्तर हड़प्पा चरण - 1900-1700 ई.पू.

→ सिंधु घाटी सभ्यता - कांस्य युग (2600BC-1700BC)

→ सिंधु घाटी सभ्यता का नाम → जॉन मार्शल ने दिया।

→ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के प्रथम अध्यक्ष - अलेक्जेंडर कनिंघम

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के पिता

हड़प्पा - पहला खोजा गया स्थल

{ पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी UP, बलूचिस्तान, सिंध } → सिंधु घाटी सभ्यता स्थल

(परिपक्व काल - 2600BC-1900BC)

PARMAR SSC

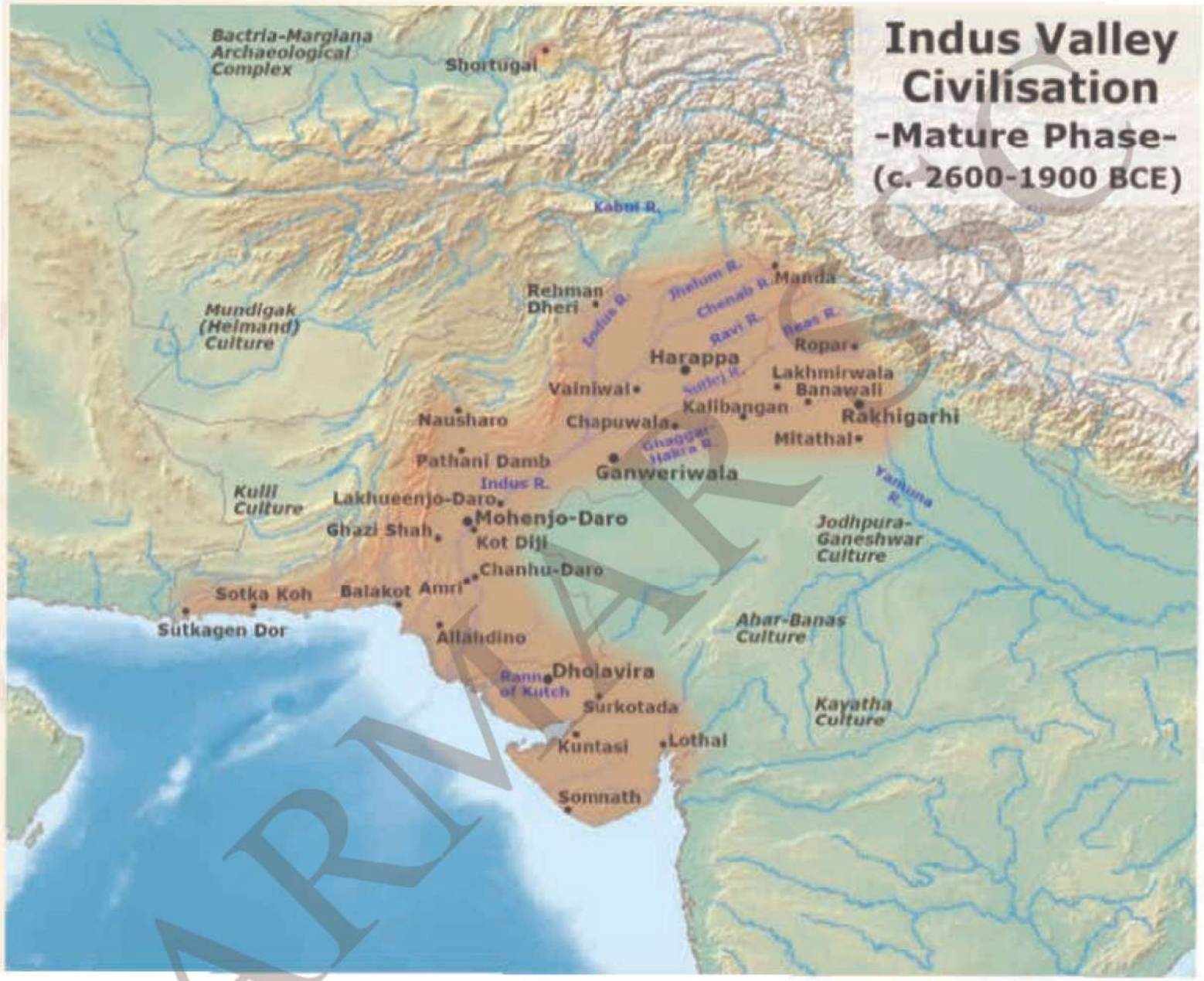
Indus Valley Civilisation
-Mature Phase-
(c. 2600-1900 BCE)
Bactria-Margiana Archaeological Complex
Shortugai
Kabul R.
Rehman Dheri
Indus R.
Jhelum R.
Chenab R.
Manda
Ravi R.
Beas R.
Mundigak (Helmand) Culture
Harappa
Ropar
Lakhmirwala
Banawali
Vainiwal
Sutlej R.
Kalibangan
Rakhigarhi
Nausharo
Chapuwala
Mitathal
Ghaggar Hakra R.
Pathani Damb
Ganweriwala
Indus R.
Yamuna R.
Kulli Culture
Lakhueenjo-Daro
Mohenjo-Daro
Ghazi Shah
Kot Diji
Jodhpura-Ganeshwar Culture
Chanhu-Daro
Sotka Koh
Balakot
Amri
Sutkagen Dor
Allahdino
Ahar-Banas Culture
Rann of Kutch
Dholavira
Surkotada
Kayatha Culture
Kuntasi
Lothal
Somnath
PARMAR

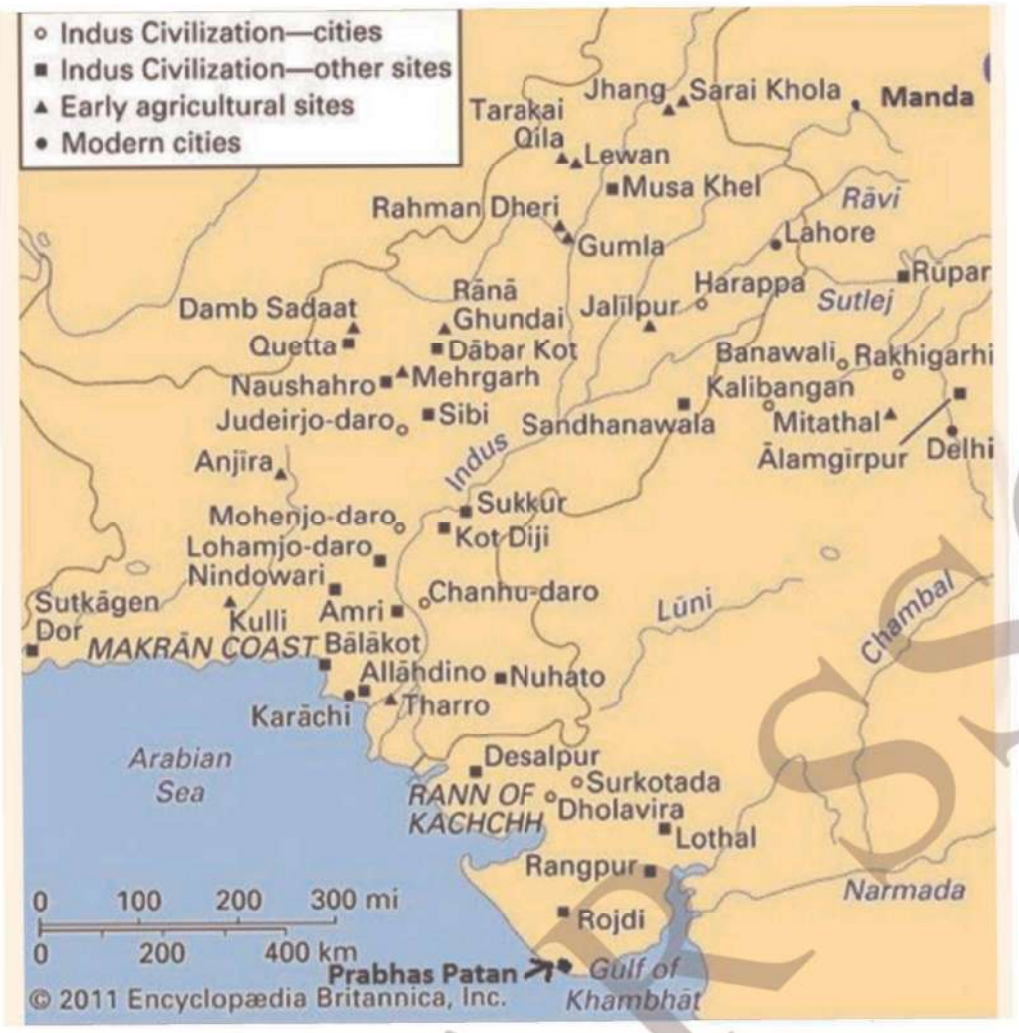

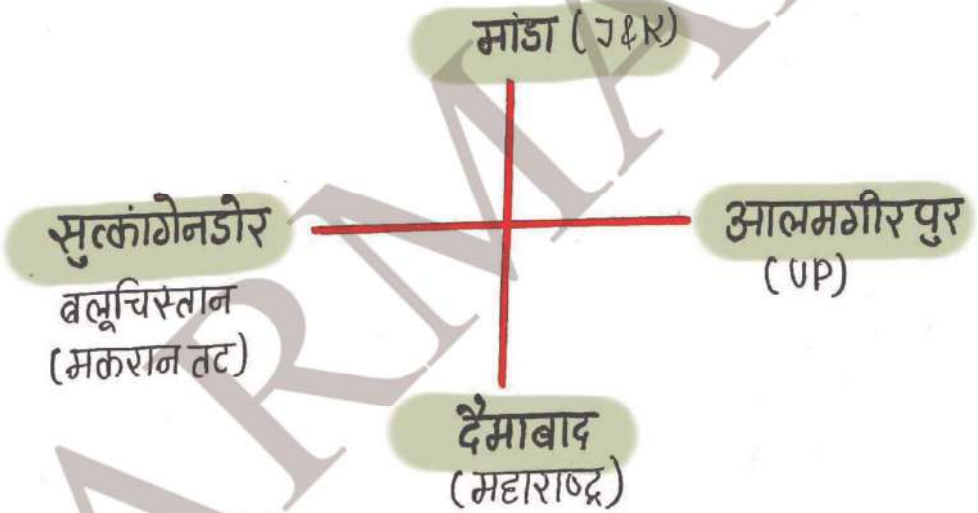

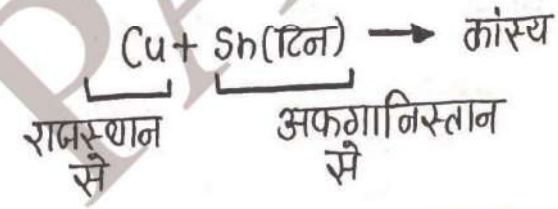

Cu + Sn(टिन) → कांस्य

Cu — राजस्थान से

Sn — अफगानिस्तान से

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल:

हड़प्पा :
- पंजाब प्रांत में (वर्तमान पाकिस्तान)
- खोज - 'दयाराम साहनी' द्वारा 1921 में
- रावी नदी के तट पर
- 12 अन्नागार (6 एक पंक्ति में)

PARMAR SSC

Early Harappan Sites

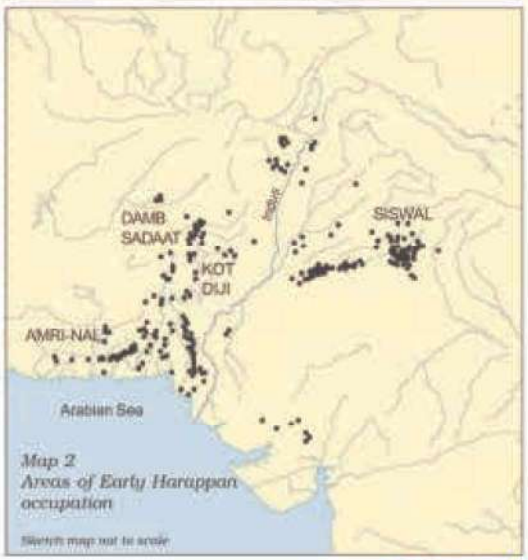

Late Harappan Phase

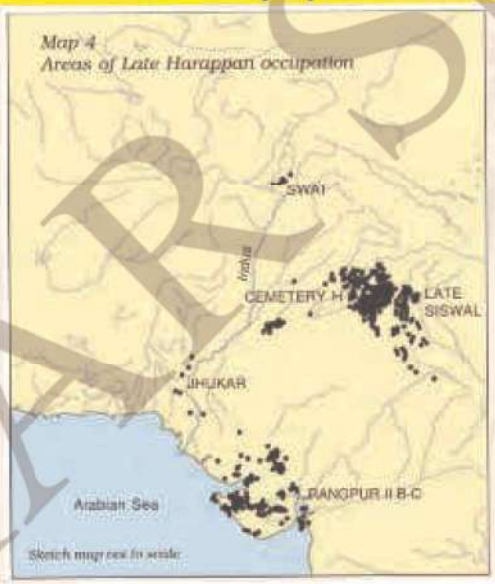

प्रारंभिक हड़प्पा

- विशिष्ट मिट्टी के बर्तन, कृषि और पशुपालन तथा कुछ शिल्प के साक्ष्य
- कोई बड़ी इमारत नहीं
- बी/डब्ल्यू ब्रेक प्रारंभिक हड़प्पा और हड़प्पा सभ्यता
- कुछ स्थलों पर बड़े पैमाने पर जलाने के साक्ष्य तथा कुछ बस्तियों के त्याग के साक्ष्य

उत्तर हड़प्पा

- हड़प्पा सभ्यता की विशिष्ट कलाकृतियाँ (वजन, मुहरें, मोती) गायब हो गईं
- लेखन, लंबी दूरी के व्यापार और शिल्प विशेषज्ञता भी गायब हो गई।
- घर निर्माण तकनीक खराब हो गई
- कोई बड़ी सार्वजनिक संरचना नहीं और ग्रामीण जीवन शैली

PARMAR SSC

हड़प्पा सभ्यता की विशेषताएँ :

1. कृषि
2. पशुपालन
3. नगर नियोजन
4. जल निकासी प्रणाली
5. घरेलू वास्तुकला
6. सामाजिक अंतरों पर नजर रखना
7. शिल्प उत्पादन
8. व्यापार & वाणिज्य
9. धार्मिक अभ्यास
10. मुहर, लिपि, बाट
11. हड़प्पा सभ्यता का अंत

कृषि

- प्रमुख फसलें: गेंहू & जौ, कपास, मसूर, चना, तिल, बाजरा, चावल (दर)
- आहार संबंधी प्रथाएँ - जले हुये अनाज & बीजों से।

कृषि प्रौद्योगिकियां :

- बैल
  - मुहरों और टेराकोटा पर
  - जुताई के लिए इस्तेमाल
- हल का टेराकोटा मॉडल - चोलिस्तान & बनावली में पाया गया।
- जुता हुआ खेत - कालीबंगा में
- दो समकोण पर खांचे के सेट बताते हैं कि अलग-अलग फसलें एक साथ उगाई जाती थी।
- नहरें - शोर्तगई / शोर्टुगई (अफगानिस्तान)
- जलाशय - धौलावीरा
- सैंडल क्वर्न - अनाज पीसने के लिए
- तांबे के औजार - कटाई के लिए

PARMAR SSC

कृषि व्यवस्था :

→ गेहूँ, ज्वार, मटर, सरसों इत्यादि के साक्ष्य
→ खेत जोतने का हल → कालीबंगा से मिला
→ ये गवरबन्द/नाला का प्रयोग करते थे जल एकत्रित करने के लिए/
→ चावल के साक्ष्य → लोथल (गुजरात) से
→ सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कपास की खेती करने वाले प्रथम थे।
↳ सिंडन भी बोलते हैं।
→ भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, गधे के साक्ष्य मिलते हैं।
घोड़े के साक्ष्य → सुरकोटदा

पशुपालन

- भेड़, बकरी, भैंस, सुअर, बैल जैसी मवेशी
- सुअर, घड़ियाल, हिरण, मछली और मुर्गी की हड्डियाँ भी पाई गई।
- नोट : घोड़े और गाय के साक्ष्य नहीं मिले हैं।

नगर नियोजन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे अनोखी विशेषता - शहरी केंद्रों का विकास

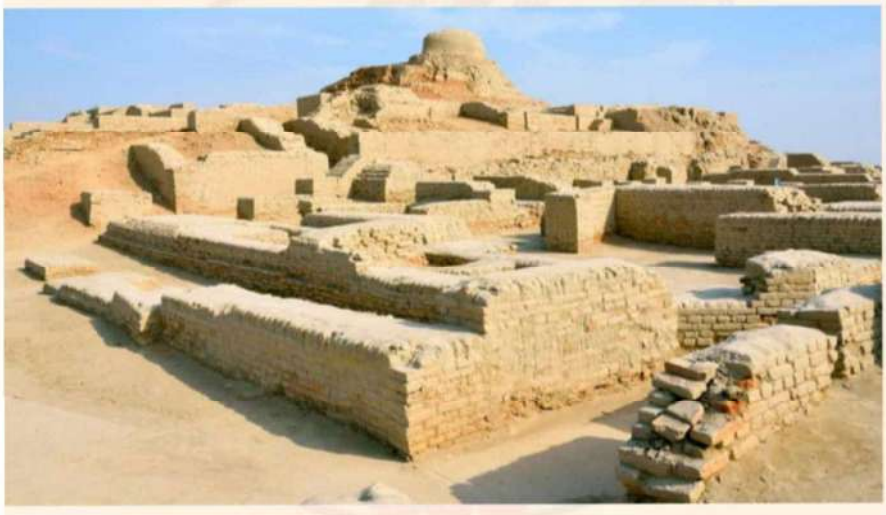

RMAR SSC

गढ़ और निचला शहर :

- **गढ़ :** ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया था।
  आकार निचले शहर की अपेक्षा छोटा था।
- **निचला शहर :** यह शहर के निचले हिस्से में था।
  नगर का यह भाग गढ़ से कहीं अधिक बड़ा था।
  आवासीय आवास था।
- चन्हूदड़ो में गढ़ नहीं पाए गए हैं।
- धौलावीरा- 3 भागों मे विभाजित था।
  गढ, मिडल टाउन, निचला शहर

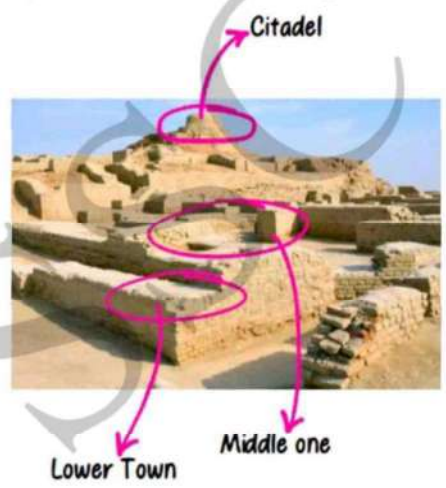

विशाल स्नानागार :

- मोहनजोदड़ो में मिला।
- यह गढ़ में स्थित टीला था।
- निर्माण - पक्की ईंटो से किया गया।
- यह आयताकार बना हुआ था। (11.88 m लम्बा व 7 m चौंडा)
- मोटरि और जिप्सम का उपयोग करके जलरोधी

विशाल अन्नागार :

- मोहनजोदड़ो में पाया गया है।
- अन्न की कोठरी कहा जाता है।

हड़प्पा का अन्नागार :

- 12 अन्नागार पाए गए।
- 6-6 अन्नागार की दो पंक्तियाँ पायी गयी।

PARMAR SSC

अपवाद : धोलावीरा और लोथल

- पूरी बस्ती किलेबंद थी और शहर के भीतर के हिस्से भी दीवारों से अलग थे।
- लोथल के भीतर गढ़ को दीवार से नहीं घेरा गया था, बल्कि उसे ऊंचाई पर बनाया गया था।

नोट: 1. बस्तियों की पहले योजना बनाई गई और फिर उसके अनुसार कार्यान्वयन किया गया।

2. ईंटें: धूप में पकाई गई (मानकीकृत अनुपात , 4:2:1)

जल निकासी प्रणाली

→ ग्रिड पद्धति वाली सड़कें/गलियाँ, जो समकोण पर प्रतिच्छेद करती हैं।
→ नाली प्रणाली बड़े शहरों तथा छोटी बस्तियों में भी पाई जाती थी। (लोथल)
→ जली। पकी हुई ईंटों से निर्मित।
→ ठोस अपशिष्ट को साफ करने के लिए नालियों के बीच में नाबदान/सेसपिट था।
→ ढक्कनों के लिए चूना पत्थर का उपयोग किया जाता था।

→ रसोई व स्नानघरों में भी नालियाँ होती थी जो सड़क की नालियों से जुड़ी होती थी। नालियाँ पत्थर की ईंटो से ढकी रहती थी।
→ मैनहोल भी होते थे।

ग्रिड पद्धति :

→ समांतर रेखाओं को प्रतिच्छेद करने का एक नेटवर्क है। सड़के उत्तर- दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में चलती थी जिससे एक सुव्यवस्थित लेआउट बनता था।

PARMAR SSC

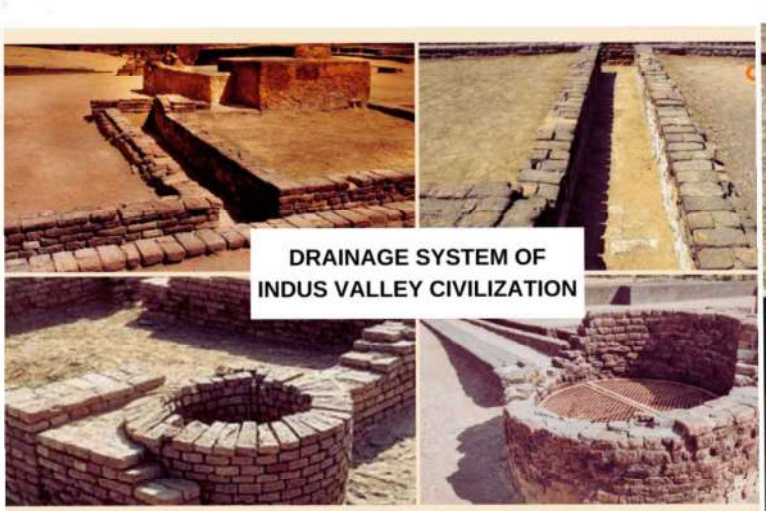

घरेलू वास्तुकला

आवासीय भवन

- हर घर का अपना बाथरूम था
- कई घर एक आंगन के ऊपर केन्द्रित थे, जिसके चारों ओर कमरे थे
- कई घरों में कुएँ थे
- गोपनीयता की चिंता
  - ज़मीनी स्तर पर दीवारों में कोई खिड़की नहीं
  - प्रवेश द्वार से अंदर या आंगन का सीधा दृश्य नहीं दिखता

सामाजिक अंतरों पर नज़र रखना

दफ़न का अध्ययन

- कुछ कब्रों में मिट्टी के बर्तन और आभूषण पाए जाते हैं, ऐसी मान्यता है कि इनका उपयोग मृत्यु के बाद किया जा सकता है
- कुछ उदाहरणों में, मृतकों को तांबे के दर्पणों के साथ दफनाया जाता था।
- पुरुषों और महिलाओं दोनों के शवों के दफन में आभूषण मिले
- हड़प्पावासी मृतकों के साथ कीमती चीजें दफनाने में विश्वास नहीं रखते थे

नोट:- हड़प्पा में एक पुरुष की खोपड़ी के पास तीन शंख की अंगूठियां, एक जैस्पर मनका और सैकड़ों सूक्ष्म मोतियों से युक्त आभूषण पाए गए थे।

PARMAR SSC

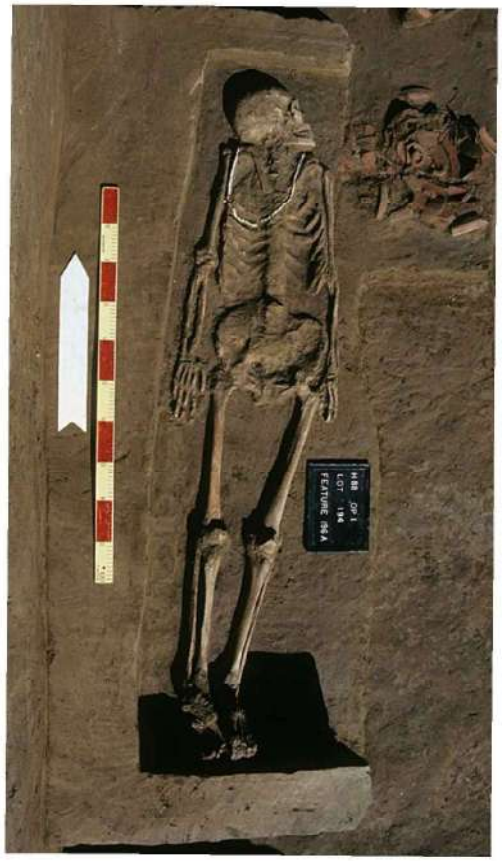

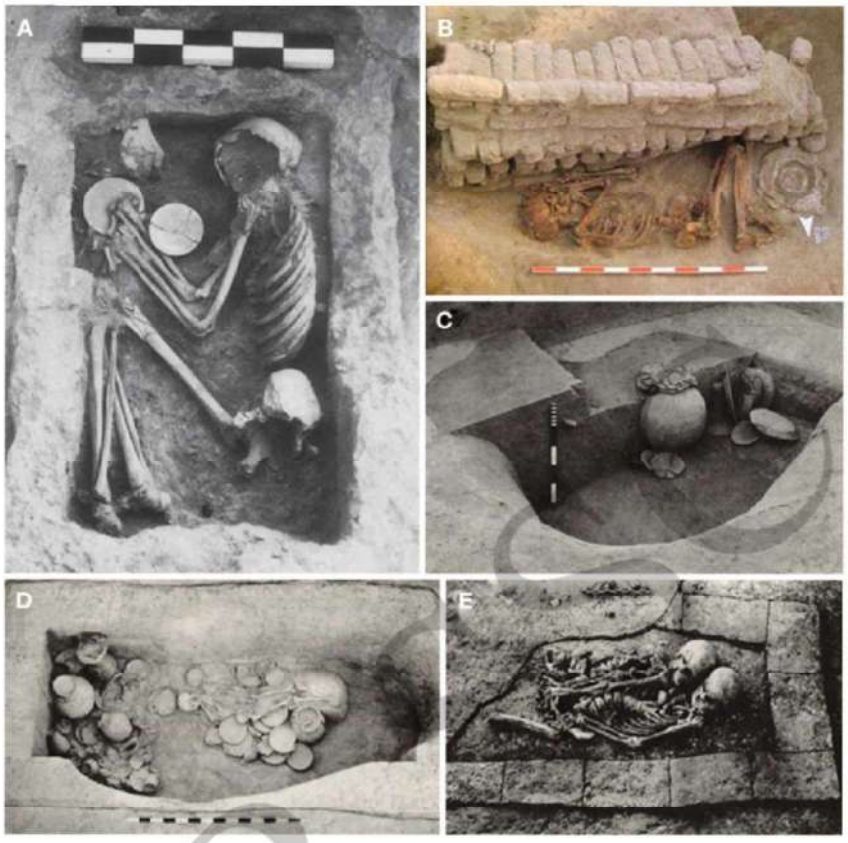

शिल्प उत्पादन

चन्हूदड़ो: शिल्प उत्पादन के लिए समर्पित जिसमें मनका बनाना, शंख काटना, धातु का काम, मुहर बनाना और बर्तन बनाना शामिल है।

नागेश्वर & बालाकोट: शैल निर्माण के केंद्र
(चूड़ियाँ, करदुल, जड़ाई)

चन्हूदड़ो, लोथल & धौलावीरा: विशेष ड्रिल पाए गए।

तकनीक और शिल्प:

- चरखा के साक्ष्य मिले
- ईंटे बनाने का काम
- नांव बनाने का काम
- आभूषण बनाने का काम (सोना - कर्नाटक से)
- बर्तन बनाने के साक्ष्य मिले। (लाल एवं काले)

Ornaments of IVC

PARMAR

व्यापार एवं वाणिज्य

नागेश्वर और बालाकोट → शैल

शोरतुगई → लैपिस लाजुली

भरूच → कार्नेलियन

दक्षिण राजस्थान, उत्तरी गुजरात → स्टीटाइट

खेतड़ी और ओमान → तांबा

दक्षिण भारत → सोना

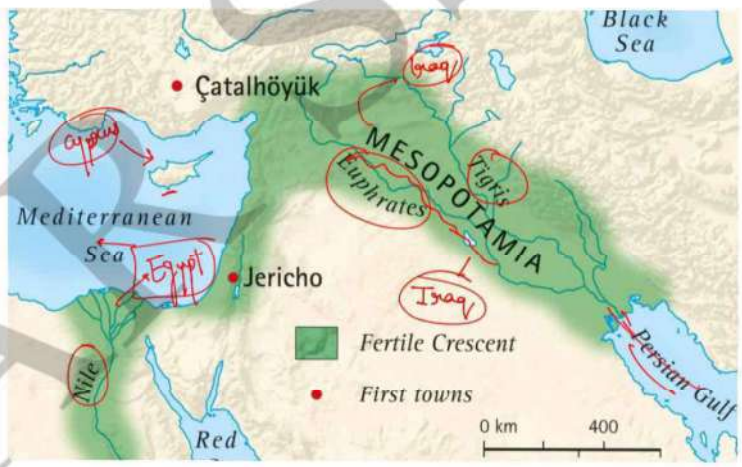

व्यापार :

मुहर → शैलखड़ी, टैराकोटा, एगेट

- मेसोपोटामिया में हड़प्पा की टूटी मुहर मिली है।
- नापतौल के यंत्र मिले। (16 के गुणज में)
- लेन-देन प्रणाली का प्रयुक्त। प्रयोग होता था।
- Lapis Lazuli - नीला पत्थर

दूर देशों से संपर्क :

मेसोपोटामिया के ग्रंथ :

मगन (ओमान) → तांबा

दिलमुन → बहरीन का द्वीप

PARMAR SSC

मेलुहा → हड़प्पा

दाजा पक्षी → मोर

मेलुहा → नाविकों की भूमि

मुहर , लिपि , बाट

सील :

आयताकार → हड़प्पा

बेलनाकार → मेसोपोटामिया

गोलाकार → बहरीन

हड़प्पा की मुहरें :

- स्टेटाइट से बनी।
- इसमें जानवरों की आकृतियाँ & एक लिपि शामिल हैं।
- आमतौर पर इसमें लेखन की एक पंक्ति होती है, जिसमें संभवतः मालिक का नाम और शीर्षक होता है।

सील- पशुपति की सील - प्रोटो शिव बैठे हुये हैं योग मुद्रा में
(मुहर)

Ⓑ Ⓔ Ⓣ Ⓡ Ⓓ

भैंसा हाथी शेर एक सींग वाला गैंडा हिरन

लिपि: चित्रात्मक लिपि

बौस्ट्रोफेडन कहा गया।

(दाँये से बायें फिर बाँये से दाँये फिर दाँये से बाँये)

PARMAR SSC

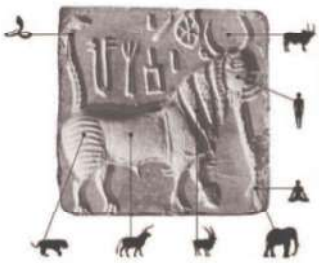

मुहर, लिपि, बाट

कथानक

वर्णानुक्रम में नहीं

अधिकांश शिलालेख छोटे हैं और सबसे लंबे शिलालेख में लगभग 26 चिह्न हैं

दाएं से बाएं लिखा गया

हड़प्पा लिपि

आभूषण, हड्डी की छड़, मुहरें, तांबे के औजार, जार और एक प्राचीन साइन बोर्ड पर पाया गया

बहुत अधिक संकेत हैं (375-400)

तौल :

विनिमय को वजन की एक सटीक प्रणाली द्वारा विनियमित किया जाता था, जो आमतौर पर चर्ट नामक पत्थर से बना होता था।

सुक्कुर और रोहरी पहाड़ियाँ : चूना पत्थर और चर्ट ब्लेड का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता था और सिंध में विभिन्न हड़प्पा बस्तियों में भेजा जाता था।

वजन का निम्न मूल्यवर्ग- बाइनरी

वजन का उच्च मूल्यवर्ग- दशमलव

PARMAR SSC

Harappan Weights

राजनीति : व्यापारी वर्ग का शासन होता था।

धार्मिक प्रथाएं :

- टेराकोटा की मादा मूर्ति मिली है। जिसके भ्रूण से एक पेड़ जन्म ले रहा है।
  पृथ्वी की पूजा एक देवी के रूप में।

यूनिकॉर्न - एक सींग वाला जानवर

लिंग - शिव के प्रतीक के रूप में पूजी जाने वाली शंक्वाकार पत्थर की वस्तुएं।

प्राचीन शिव मुद्दर (पशुपति)

मूर्ति : नृत्य करती हुई लड़की (त्रिभंग मुद्रा में)

10.5m

PARMAR SSC

चन्हूदड़ो :

- मोहनजोदड़ो के दक्षिण में
- खोज- गोपाल मजूमदार ने
- सिंध प्रांत में
- बिना गढ वाला शहर

मोहनजोदड़ो :

- सिंध प्रांत में
- सिंधु नदी के तट पर
- खोज- राखलदास बनर्जी (1921 में)
- नृत्य करती युवती की मूर्ति
- दाढी वाला पुरुष (शैलखडी की बनी)
- मां देवी की मिट्टी की मूर्ति मिली।
- विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ।
- विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ।
- मृतकों का टीला प्राप्त हुआ।
- पशुपति सील मिली।

लोथल :

- गुजरात में
- प्राकृतिक बंदरगाह
- जहाज बनाने का स्थान
- टैराकोटा जहाज
- आग की वेदी
- संयुक्त दफन

कालीबंगा :

- राजस्थान में
- घग्घर नदी के तट पर
- काले कंगन मिले
- जुते हुये खेत के साक्ष्य मिले
- हर घर में कुआँ मिला।

सुत्कांगेनडोर :

- तटीय शहर मिले
- घोड़े के साक्ष्य मिले।

धौलावीरा :

- गुजरात में
- 3 भाग मे विभाजित (गढ, मिडल टाउन व निचला शहर)

PARMAR SSC

राखीगढ़ी :
- सबसे बड़ा हड़प्पा स्थल (भारत में)
- टेराकोटा के बने खिलौने मिले
- हरियाणा में

बनावली :
- हरियाणा में
- रंगपुर नदी के तट पर
- ग्रिड प्रणाली नहीं थी।

भिड़ाना :
- सबसे पुराना सिंधु घाटी सभ्यता का स्थल है।

हड़प्पा का पतन

संभावित कारण :

- जलवायु परिवर्तन
- वनों की कटाई
- अत्यधिक बाढ़
- नदियों का बहना या सूखना
- भूदृश्य का अत्यधिक उपयोग

शवों को दफनाने के तरीके :

- संयुक्त शव / युगल शवाधान → लोथल से प्राप्त
- ताबूत दफन (Coffin) → हड़प्पा से प्राप्त
- शव के साथ कुत्ते का शव → रोपड़ से
- विस्तारित अंत्येष्टि → सनौली (UP) में

PARMAR SSC

PARMAR SSC

वैदिक सभ्यता

1500 - 600BC

पूर्व वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल
1500 - 1000 BC	1000 - 600BC

- द आर्कटिक होम ऑफ वेदाज (पुस्तक) → बाल गंगाधर तिलक
- इसी समय वेदों का संकलन हुआ इसलिए इसे वैदिक सभ्यता कहते है।

इंडो आर्यन सिद्धांत: आर्यों का निवास स्थान मध्य एशिया माना गया है।

वैदिक ग्रंथो की रचना = इंडो-आर्यों ने की

→ सभी भारतीय आर्य जाति से संबंधित है।

बोगजकोई शिलालेख: 4 वैदिक देवताओं व उनके जन्म स्थल के बारे मे तुर्की में खोजा गया था।

- भाषा के आधार पर - कुछ शब्द जो समान है-
  (यूरोप & भारत के शब्दकोश में) → भ्राता, सप्त, अंदर

वेद: → सबसे पुराने ग्रंथ → इसी समय का

वेद = ज्ञान

ज़ेंद अवेस्ता
(ईरान का ग्रंथ)
पारसी समुदाय का

→ श्रुति

→ अपौरुषेय
(मानव द्वारा निर्मित X)
(ईश्वर का उपहार)

वेदो के उपखंड:

- संहिता → मंत्रो का संग्रह
- ब्राह्मण → अनुष्ठान, समारोह, बलिदान
- आरण्यक → तपस्वी, जंगल
- उपनिषद → दर्शन और आध्यात्मिक ज्ञान
  → वेदांत भी कहते है।

108 उपनिषद (परंपरागत)
मुख्य - 10

PARMAR SSC

सभी वेदों का आखिरी पाठ - ब्राह्मण

वेदों के प्रकार :

ऋग्वेद :
- सबसे बड़ा और पुराना वेद है।
- 10 मण्डल व 1028 सूक्त है।
- 10600 छंद है।

- वैदिक मंत्रों का आख्यान करने वाले और कर्मकाण्ड करने वाले पुरोहित को होत् कहा जाता था।
- चार देवताओं के बारे में → इंद्र, अग्नि, विष्णु, वरुण

गायत्री मंत्र → 3वें मंडल में → विश्वामित्र द्वारा
↳ मंत्र की संख्या = 24

10वें मण्डल में → पुरुषसूक्त → 4 वर्णों का उल्लेख है।
- ब्राह्मण (मुख)
- क्षत्रिय (भुजा)
- वैश्य (जांघ)
- शूद्र (पैर)

9वें मण्डल में → भगवान सोम → पेड़-पौधो का देवता
↳ सोमरस

→ 2 से 7 तक मण्डल पहले बने थे जबकि 1, 8, 9, 10 वां बाद में बना।

सामवेद :
- संगीत की सबसे पुरानी पुस्तक
- 2 उपनिषद है
  - छन्दोग्य उपनिषद
  - केन उपनिषद
- सामवेद का गायन करने वाला पुरोहित → उद्गात्

यजुर्वेद :
- मंत्रों का संग्रह
- 2 भागो में विभाजित
  - शुक्ल यजुर्वेद
  - कृष्ण यजुर्वेद

PARMAR SSC

- शतपथ ब्राह्मण भी इसी में दिया गया है।
- प्रमुख उपनिषद → बृहदारण्यक उपनिषद (सबसे पुराना)
  कठोपनिषद (नचिकेता की कहानी)

अथर्ववेद :
- 20 खण्ड में विभाजित है।
- सबसे नया वेद है।
- इसमें जादू-टोना और तन्त्र-मंत्र का उल्लेख है।

- प्रमुख उपनिषद → मुण्डकोपनिषद → सत्यमेव जयते का उल्लेख
  महाउपनिषद → वसुधैव कुटुम्बकम् का उल्लेख
- पुरोहित = ब्रह्मा

भारतीय दर्शन - परंपरावादी

सांख्य दर्शन	→	कपिल मुनि
न्याय दर्शन	→	गौतम
वैशेषिक दर्शन	→	ऋषि कणाद
योग दर्शन	→	पतंजलि
उत्तर मीमांसा (वेदांत)	→	बदरायण (उपनिषदो का दार्शनिक शिक्षण)
पूर्व मीमांसा	→	जैमिनी

वेदांग : वेद को समझने के लिये वेदांग है।
कुल 6 वेदांग है।

शिक्षा	→	ध्वनि का अध्ययन
कल्प	→	अभ्यास का अध्ययन
व्याकरण	→	व्याकरण का अध्ययन
निरुक्त	→	व्युत्पत्ति का अध्ययन (शब्दो का ज्ञान)
ज्योतिष	→	प्रकाश का अध्ययन
छन्द	→	काव्य का अध्ययन

PARMAR SSC

पूर्व वैदिक काल :

- ऋग्वैदिक काल भी कहा जाता था।
- ऋग्वेद से पता चलता है।

हिमवंत → हिमालय
मुंजावत → हिन्दुकुश

- ये लोग सप्त सिंधु में रहते थे।

सिंधु	→	सिंधु
झेलम	→	वितस्ता
चिनाव	→	अस्किनी
व्यास	→	बिपासा
रावी	→	पुरुष्णी
सतलज	→	शुतुद्री
सरस्वती	→	सरस्वती

- दशराजन युद्ध → रावी नदी के किनारे
  [भरत कबीले (राजा सुदास व सात कबीले)
  (नेता पुरुष कबीले का राजा) के बीच]

समाज :

4 वर्णों में विभाजित था-

1. ब्राह्मण
2. क्षत्रिय
3. वैश्य
4. शूद्र

} कामके आधार पर

- बाल विवाह प्रचलन में नहीं था।
- विधवा पुनर्विवाह होते थे।
- [नियोग - विधवा पति के छोटे भाई से शादी करती थी।]
- पितृसत्तात्मक समाज था।
- गाय को पवित्र व अमूल्य संपत्ति माना गया।
  ↳ अघन्य कहा गया

गोमत → धनी व्यक्ति

राजनीति :

राजतन्त्र शासन प्रणाली थी

1. सभा - कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों का समुदाय।
2. समिति - आम लोगों का समुदाय।
3. विदथ/ विधाता - धार्मिक उद्देश्य के लिए।

PARMAR SSC

सेनानी - सेना प्रमुख पुरोहित - पुजारी

ग्रामिणी - गांव प्रमुख

धर्म : प्रकृति की पूजा करते थे।

इंद्र - (पुरंदर) → सबसे अधिक बार नाम आया है।

पृथ्वी

अग्नि - (भगवान व मनुष्यों के बीच कड़ी)

सोम

वायु

रुद्र - (पशुओं का देवता)

अदिति - देवताओं का माँ

सावित्री - गायत्री मंत्र इन्ही को समर्पित था।

- पशु पूजा X

बाली - राजा को स्वैच्छिक भेंट

- → गेरु रंग के मिट्टी के बर्तन पाए गए है।
- → आर्य ग्रंथो की भाषा - संस्कृत
- → ऋग्वेद में ऋषि विश्वामित्र और देवी के रूप मे पूजी जाने वाली दो नदियाँ व्यास और सतलज के बीच संवाद के रूप में एक भजन है।
- → 1800 - 1500 ई० पू० की 30 ऋग्वेद पांडुलिपियों को UNESCO के memory of the world register में 2007 में शामिल किया गया।

उत्तर वैदिक काल (1000BC - 600BC)

आर्यों ने अब अपना निवास स्थल पंजाब से पश्चिमी UP गंगा - यमुना दोआब तक विस्तारित कर लिया।

ऊपरी हिस्से में → कुरु
निचले हिस्से में → पांचाल
} मिलकर हस्तिनापुर राजधानी बनायी

कुरु कबीला < पांडव, कौरव

{ महाभारत हुआ - 950 ई०पू०
जबकि महाभारत ग्रन्थ - 400 वीं शताब्दी मे लिखा।

- उत्तर वैदिक काल में और आगे आर्यों ने दोआब से पूर्वी उत्तर प्रदेश तक क्षेत्र विस्तारित कर लिया।
  ↓
  लोहे के हथियार + घोड़ी की वजह से संभव हुआ
  ↳ कृष्ण/श्याम प्रकार का लोहा

कृषि : राजा भी खेतों में शारीरिक श्रम करते थे।
- → vrihi - चावल
- → लकड़ी के हल (ग्रामीण इलाके में)

राजनीतिक व्यवस्था : केन्द्रीयकृत
- सभा - औरतो को बैठने की अनुमति नहीं थी।
- समिति
- विदाथा

समाज :
- वर्ण मे विभाजित था।
  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र
  (वैश्य ↓ व्यापार; शूद्र ↓ नौकर)
- महिलाओ की स्थिति अच्छी नही थी।
- गौत्र प्रणाली का उदय हुआ।
- 4 आश्रम में विभाजित - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास

1. अनुलोम विवाह → लड़का ऊँची जाति का + लड़की नीची जाति की
2. प्रतिलोम विवाह - उच्च जाति की लड़की + नीची जाति का लडका

PARMAR SSC

8 प्रकार के विवाह

ब्रह्म विवाह	→	वैदिक रीति से समान वर्ग में विवाह
गन्धर्व विवाह	→	प्रेम विवाह
दैव विवाह	→	पिता ने दक्षिणा में पुजारी को दान की अपनी बेटी।
अर्ष विवाह	→	एक गाय & एक बैल का प्रतीकात्मक वधू मूल्य दिया गया।
प्रजापति विवाह	→	दहेज रहित विवाह
असुर विवाह	→	खरीदकर विवाह
राक्षस विवाह	→	अपहरण द्वारा विवाह
पिशाच विवाह	→	इसविवाह में, जो लड़की अपने होश में नहीं होती, उसका जबरदस्ती विवाह कर दिया जाता है।

One Liners

- आर्यों की भाषा - संस्कृत
- ऋग्वेद में ऋषि विश्वामित्र और दो नदियों के बीच संवाद के रूप में एक स्तोत जिन्हें देवी के रूप में पूजा जाता है। ↳ व्यास & सतलज
- किसी व्यक्ति का वैदिक दृष्टिकोण और समाज के साथ उसका संबंध जीवन के चार लक्ष्यों से निर्धारित होता है- अर्थ, मोक्ष, धर्म, काम
- रामायण में रत्नाकर का दूसरा नाम था - वाल्मीकि
- वैदिक युग में एक समय राजा को 'गोपति' कहा जाता था जिसका अर्थ था- मवेशियों का स्वामी।
- 'अनुष्ठान' को दर्शाने वाला शब्द - कल्प
- ऋषि व्यास ने पुराणों और महाभारत का संकलन किया

PARMAR SSC

PARMAR SSC

बौद्ध धर्म & जैन धर्म

उत्पत्ति के कारण :

→ ब्राह्मणवादी वर्चस्व

→ कृषि अर्थव्यवस्था → जानवरों की बलि के कारण कृषि प्रभावित

→ पंच-चिन्हित सिक्कों का प्रयोग → व्यापार में वृद्धि → वैश्यों द्वारा

(जैन & बौद्ध धर्म में सभी वर्णों के साथ समान व्यवहार)
(वर्ण जन्म के जगह कर्म के आधार पर)

→ अहिंसा पर विश्वास

जैन धर्म

महान शिक्षक - तीर्थंकर → 24

- पहले - ऋषभ देव → अयोध्या → बैल
- 23वें - पार्श्वनाथ → वाराणसी → सर्प
- 24 वें - वर्धमान महावीर → वैशाली → शेर
  - ↳ वास्तविक संस्थापक

◉ वेदो मे केवल 2 तीर्थंकरो का उल्लेख
- ऋषभदेव (पहले)
- अरिष्टानेमी (22वें)

वर्धमान महावीर :

जन्म → 540 BC (लगभग), कुण्डग्राम (वैशाली, बिहार)
मृत्यु → 468 BC (72 वर्ष मे), पावापुरी (बिहारशरीफ, बिहार)
(मोक्ष)
पिता → सिद्धार्थ (ज्ञातक कुल से - क्षत्रिय)
माता → त्रिशला
पत्नि → यशोदा
पुत्री → अनोज्जा प्रियदर्शिनी → पति जमालि → महावीर के प्रथम अनुयायी

PARMAR SSC

गृह त्याग → 30 वर्ष की अवस्था में → मक्खली गोसाल
↓
आजीवक सम्प्रदाय

ज्ञान प्राप्त → 42 वर्ष की अवस्था में, साल वृक्ष के नीचे
ऋजुपालिका नदी के तट पर
↳ कैवल्य

{ केवलिन - पूर्ण ज्ञान
{ जितेन्द्रिय - इन्द्रियों पर विजय पाने वाला

प्रथम उपदेश - पावा

बसादिस - जैन मठ (दक्षिण भारत)

जैन दर्शन

मोक्ष - 3 उपदेश
→ सम्यक ज्ञान
→ सम्यक आचरण
→ सम्यक दर्शन

जीवन के 5 सिद्धांत: अणुव्रत

- अहिंसा → हिंसा न करना
- सत्य → सत्य बोलना
- अस्तेय → चोरी न करना
- ब्रह्मचर्य → ब्रह्मचर्य का पालन करना
- अपरिग्रह → भौतिक सुख से दूर रहना

जैन विभाजन

चंद्रगुप्त मौर्य & भद्रबाहु
↓ उत्तर भारत मे अकाल के कारण दक्षिण भारत (कर्नाटक) चले गये।
↳ 303 BC
कर्नाटक, श्रवणबेलगोला
संलेखना व्रत से प्राण त्याग

भद्रबाहु → दिगम्बर

स्थूलभद्र - अकाल मे भी उत्तर भारत मे ही रहे।
श्वेत (सफेद) वस्त्र धारण किये (श्वेताम्बर)

प्रथम जैन संगीति - 298 BC, 12 अंग संकलित
संरक्षण - बिंदुसार (चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र)

PARMAR SSC

द्वितीय जैन संगीति - 512 ई०, वल्लभी (गुजरात)

जैन साहित्य - प्राकृत भाषा में

वास्तुकला :

सौंकत गुफा मंदिर → हाथीगुंफा गुफायें → खारवेल, उड़ीसा
उदयगिरी & खण्डगिरी गुफायें → ओडिसा

दिलवाड़ा जैन मंदिर → माउण्टआबू, राजस्थान
↳ वास्तुपाल बंधुओं द्वारा निर्माण

गोम्तेश्वर / बाहुबली की प्रतिमा → श्रवणबेलगोला, कर्नाटक
↳ ऋषभदेव के पुत्र (महामत्स्य अभिषेक)

अनुयायी :

- चन्द्रगुप्त मौर्य & पुत्र बिंदुसार
- बिम्बिसार (महावीर स्वामी & गौतम बुद्ध के समकालीन) & पुत्र अजातशत्रु

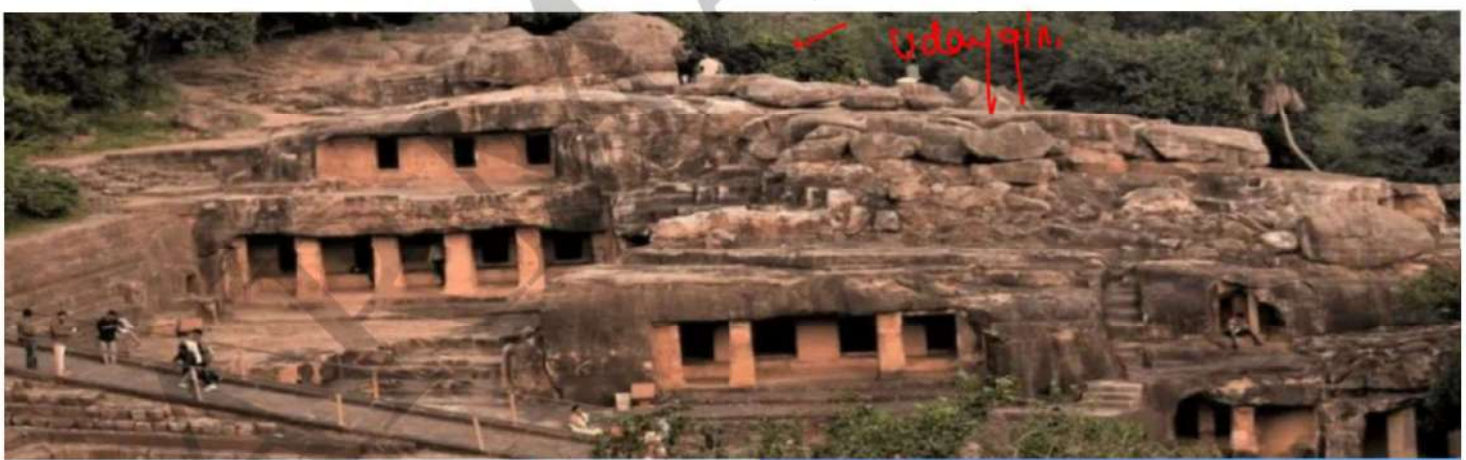

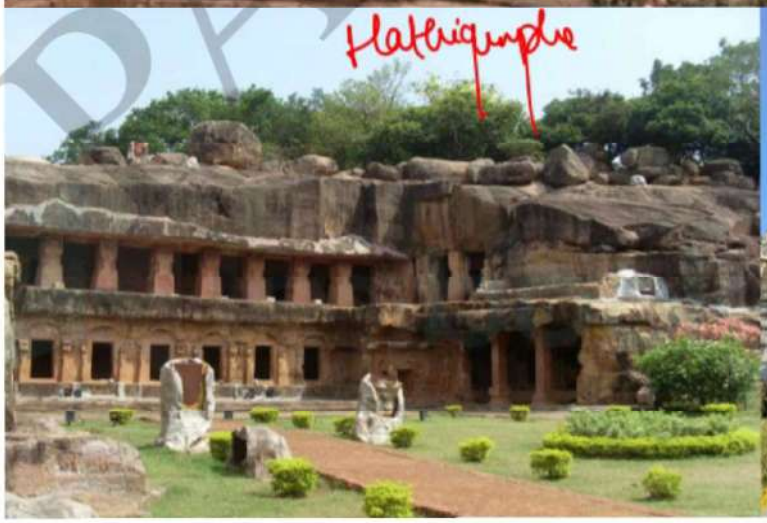

PRATAR SSC

Jain Temple

Architecture

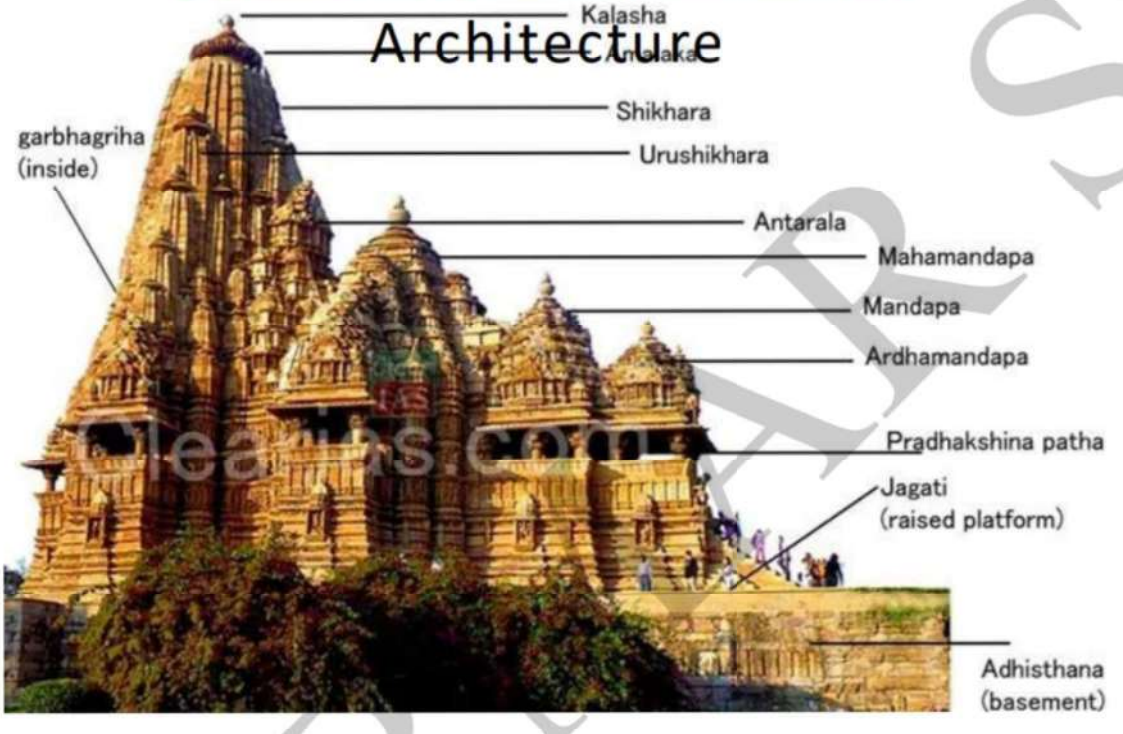

Temples

Dilwara Jain Temple

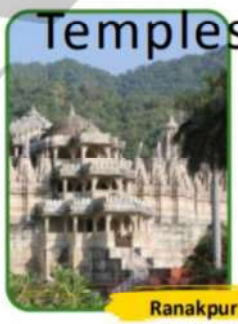

Ranakpur Temple

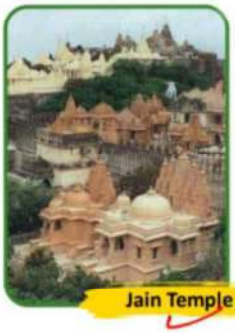

Jain Temple Guja

Mt Mangi Tungi

Shikar Ji (JHARKHAND)

Khajuraho

Other Jain Architecture

Ellora Caves (Maharashtra)

Sittanavasal Caves (Tamil Nadu)

Udaygiri Caves (Odisha)

Jain ✓
Buddhist ✓
Hindu ✓

" बौद्ध धर्म "

गौतम बुद्ध : → शाक्य वंश से, क्षत्रीय

जन्म → 563 BC, लुम्बिनी, नेपाल
मृत्यु → 483 BC, कुशीनगर
बचपन का नाम → सिद्धार्थ
पिता → शुद्धोदन
माता → महामाया
सौतेली मां/मौसी → महाप्रजापति गौतमी
↓
प्रथम भिक्षुणी

पत्नि → यशोधरा
बेटा → राहुल
गृहत्याग → 30 वर्ष में
शिक्षक { 1st → अलारकलाम
2nd → उद्दकरामपुत्र

ज्ञानप्राप्त → बोधिवृक्ष के नीचे, उरुवेला (बोधगया, बिहार)
निरंजना नदी के निकट

प्रथम उपदेश- सारनाथ, वाराणसी

PARMAR SSC

बुद्ध के जीवन के महत्वपूर्ण प्रतीक :

कमल	→	जन्म का प्रतीक	
घोड़ा	→	गृहत्याग	→ महाभिनिष्क्रमण
बोधिवृक्ष	→	ज्ञानप्राप्ति	→ निर्वाण
पहिया	→	पहला उपदेश	→ धर्मचक्रपरिवर्तन
स्तूप	→	मृत्यु	→ महापरिनिर्वाण

Lotus

Birth

Horse

House Renunciation
(Mahabhinishkramana)

Bodhi Tree

Enlightenment
(Nirvana)

Wheel

1st Sermon
Dharmachakrapravartana

घोड़ा - कंथक
रथ - चन्ना

Stupa

Death
(Parinirvana)

4 आर्य सत्य :

Four Noble Truths

1. दुख का सत्य
2. दुख के कारण का सत्य
3. दुख के अंत का सत्य
4. दुख के अंत की ओर ले जाने वाले मार्ग का सत्य

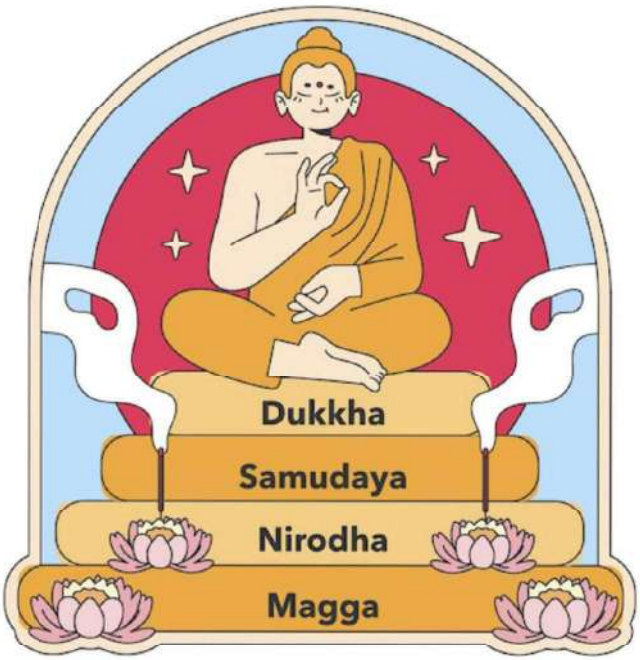

PARMAR SSC

अष्टांगिक मार्ग :

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाक्
4. सम्यक कर्म
5. सम्यक् जीविका
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

सम्यक दृष्टि

सम्यक दृष्टि का अर्थ है कि हम जीवन के दुःख और सुख का सही अवलोकन करें।

सम्यक समाधि
निर्वाण पाना और स्वयं का गायब होना।

सम्यक संकल्प
मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना।

सम्यक स्मृति
स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना।

सम्यक वचन
हानिकारक बातें और झूठ न बोलना।

सम्यक प्रयास
अपने आप सुधरने की कोशिश करना।

सम्यक कर्म
हानिकारक कर्म न करना।

सम्यक जीविका
कोई भी स्पष्टतः या अस्पष्टतः हानिकारक व्यापार न करना।

Mudras of the Buddha: A Guide to Enlightenment

1 Dharmachakra Mudra

"Teaching Wheel" - Represents the Buddha's teachings.

2 Abhaya Mudra

"Fearless" - Signifies protection and overcoming fear.

3 Bhumisparsha Mudra

"Touching the Earth" - Represents the Buddha's enlightenment.

4 Varada Mudra

"Generosity" - Represents giving and compassion.

5 Dhyana Mudra

"Meditation" - Signifies contemplation and inner peace.

6 Vitarka Mudra

"Wheel of Law" Represents reasoned discussion and the transmission of Buddhist teachings.

PARMAR SSC

बौद्ध संगीति

पहली	राजगृह	483 BC	अजातशत्रु	महाकश्यप
दूसरी	वैशाली	383 BC	कालाशोक	सबकामी
तीसरी	पाटलीपुत्र	250 BC	अशोक	मोग्लीपुत्त तिस्स
चौथी	कुण्डलवन (कश्मीर)	72 AD	कनिष्क	वसुमित्र → बौद्ध धर्म का विभाजन

बौद्ध धर्म

हीनयान

मूर्तिपूजा में अविश्वास

साहित्य - पाली भाषा में

महायान

मूर्तिपूजा में विश्वास

साहित्य - संस्कृत में

बोधिसत्व - वज्रपाणि, अवलोकितेश्वर, अमिताभ

बौद्ध ग्रंथ:

पाली में → त्रिपिटक

- सुत्तपिटक - बुद्ध की शिक्षायें
- विनयपिटक - मठ के नियम
- अभिधम्मपिटक - सुत्तपिटक की व्याख्या

मिलिन्दपन्हो (पाली) → मिलिन्द (मियांडर) & नागसेन संवाद

बुद्धचरित (संस्कृत) → अश्वघोष द्वारा रचित

जातक कथाएं → बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियाँ

वज्रयान - तांत्रिक विद्या में विश्वास

PARMAR SSC

बौद्ध पद :

- चैत्य → पूजा गृह
- विहार → निवास स्थान
- धम्म → धर्म
- स्तूप → मृत्यु

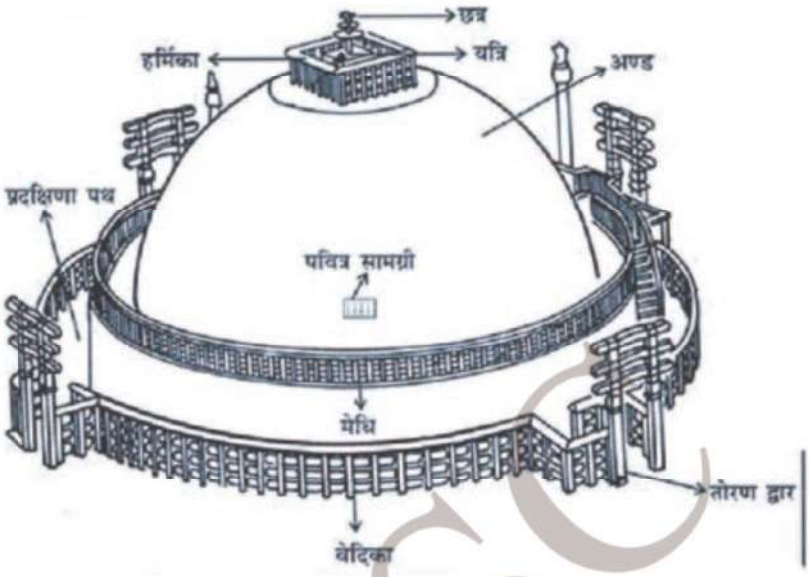

- सबसे बड़ा स्तूप - केसरिया, बिहार
- धमेक स्तूप - सारनाथ, UP
- रामभर स्तूप - कुशीनगर, UP
- सांची स्तूप - MP
- बोरोबुदुर स्तूप - इण्डोनेशिया

केसरिया स्तूप

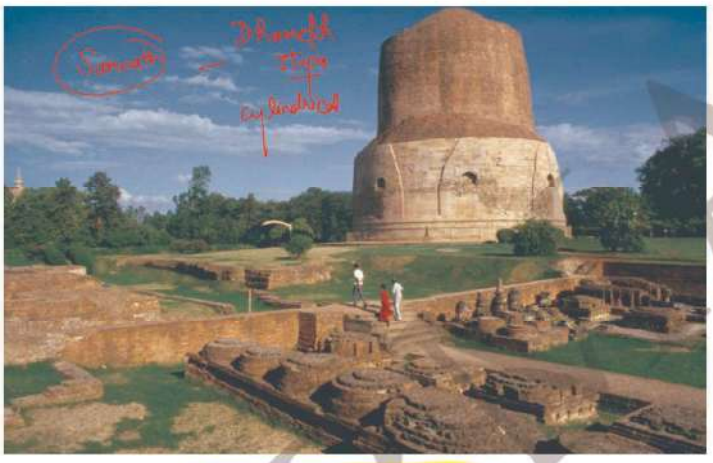

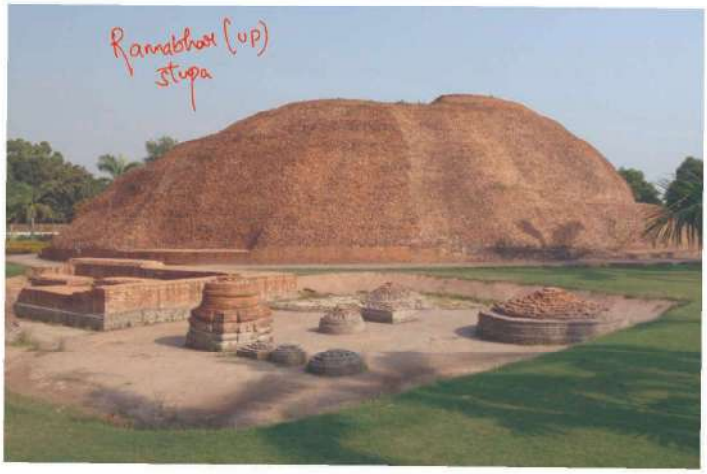

धमेक स्तूप

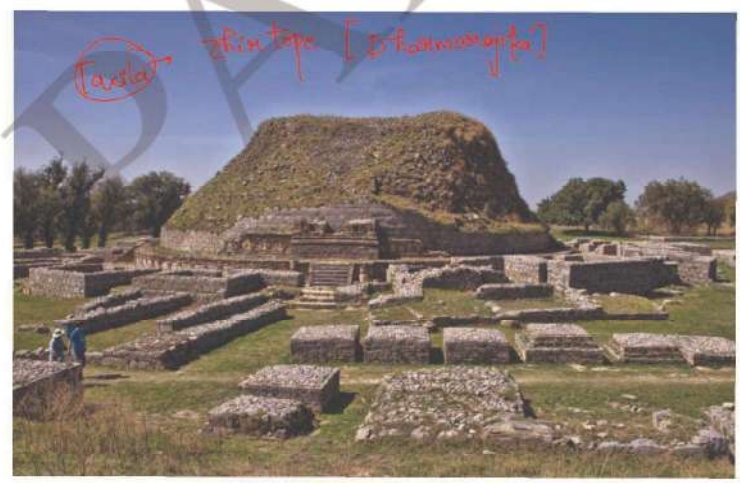

रामभर स्तूप

धर्मराजिका स्तूप

पिपरहवा स्तूप

Shanti stupa – Ladakh

Bharhut stupa (M.P.)

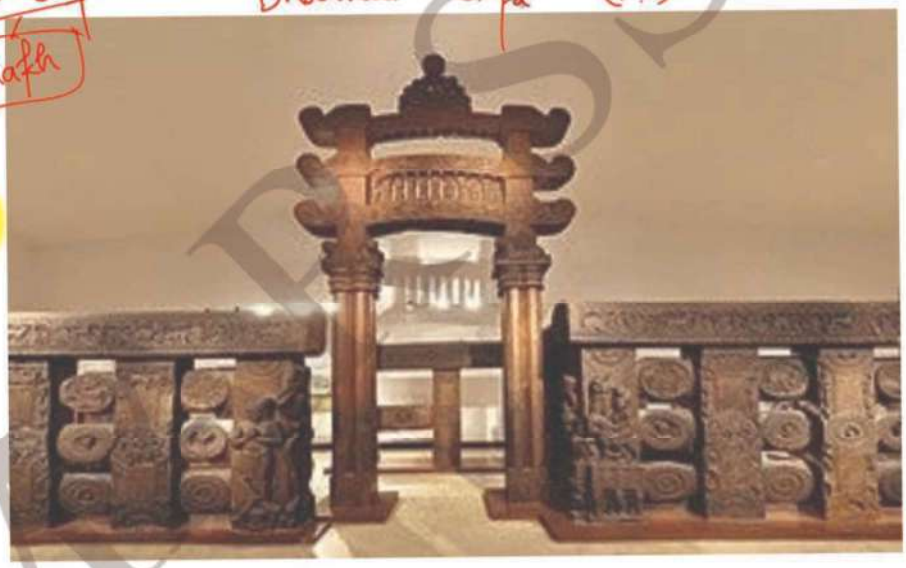

भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश

Buddhism Across the World

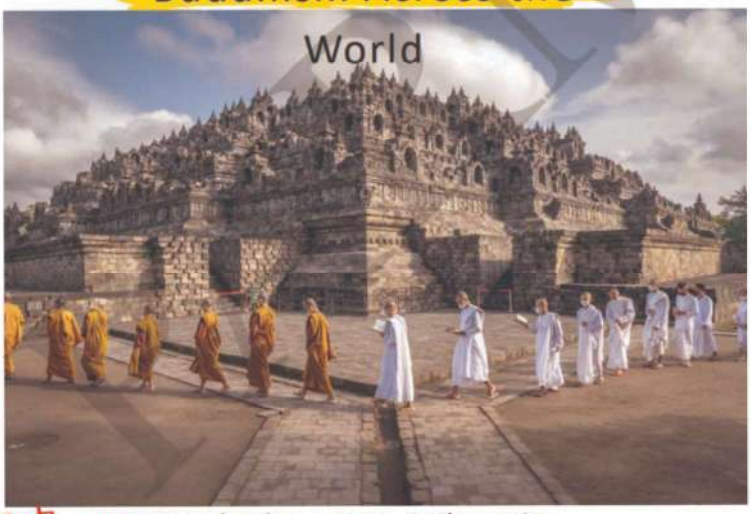

largest in the world — Borobudur : Java, Indonesia

Lomas Rishi Cave

बौद्ध विश्वविद्यालय :

1. नालंदा विश्वविद्यालय → कुमारगुप्त I
2. विक्रमशिला ,, → धर्मपाल
3. ओदंतपुरी ,, → गोपाल

बौद्ध धर्म के आठ पवित्र स्थल :

1. लुंबिनी
2. बोधगया
3. सारनाथ
4. कुशीनगर
5. राजगीर
6. श्रावस्ती
7. वैशाली
8. संकस्सिया

अन्य :

- लायन कैपिटल का निर्माण बुद्ध की पहला उपदेश की ऐतिहासिक घटना की स्मृति में किया गया था।
- भरहुत स्तूप (MP) - जातक कथाओं & कहानियों का वर्णन
- चैत्यागिरी विहार त्योहार - सांची, MP (बौद्ध धर्म)
- बौद्ध गुफा मंदिर, बराबर गुफाएँ - बिहार
- पहले & चौबीसवें जैन तीर्थंकरों के जन्मस्थान - अयोध्या
- कल्पसूत्र - पार्श्वनाथ & महावीर की जीवनियाँ शामिल

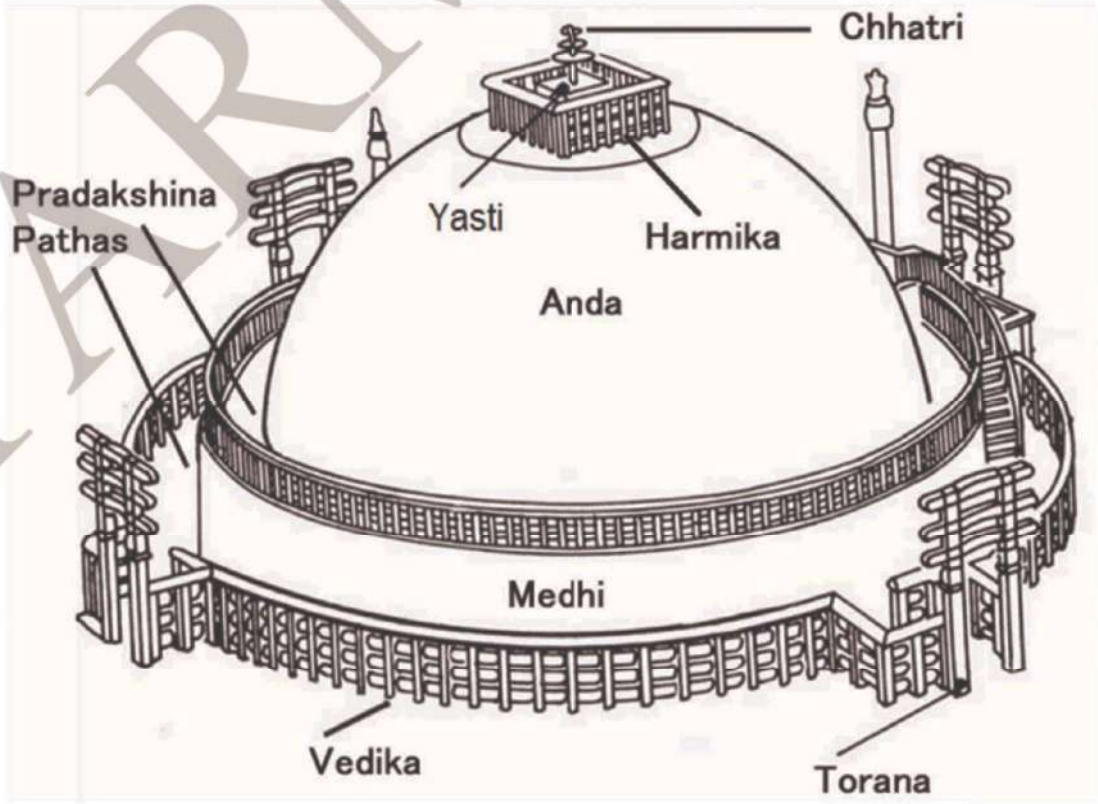

PARMAR SSC

PARMAR SSC

महाजनपद

PARMAR SSC

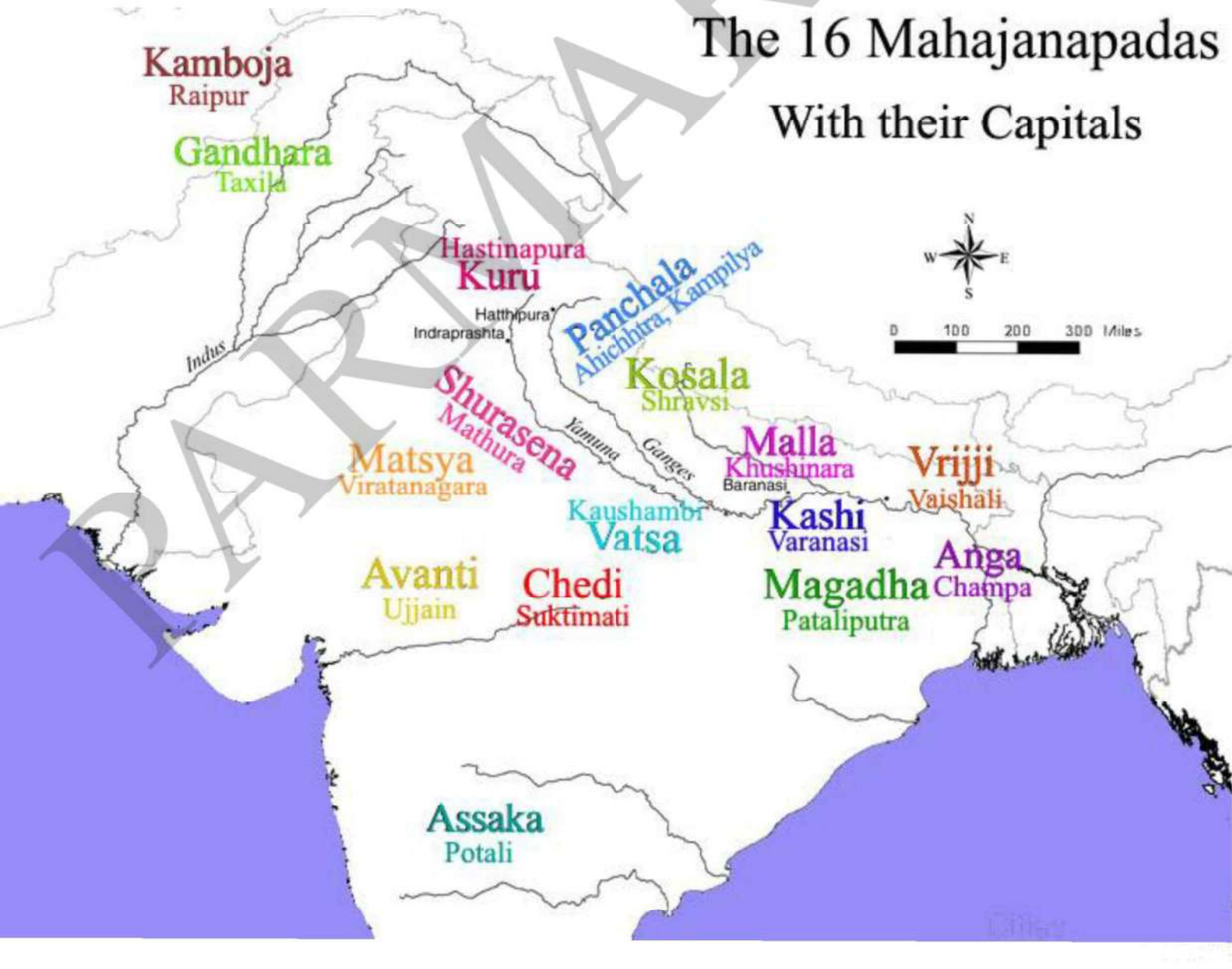

महाजनपद & मगध साम्राज्य

भारत, 600 ई० पूर्व (16 महाजनपद)

आर्य → मध्य एशिया से आय
→ अलग-अलग जातियों मे विभाजित
→ जन → (क्षेत्र) → जनपद
→ कईजनपद मिलकर → **महाजनपद** (कुल = 16)

सबसे शक्तिशाली - मगध

महाजनपदों का उल्लेख:

- अष्टाध्यायी → पाणिनी द्वारा रचित
  संस्कृत भाषा
  कुल 40 जनपदों का वर्णन
- बौद्ध साहित्य
  - अंगुत्तर निकाय → कुल 16 महाजनपदों का उल्लेख (सोलासा महाजनपद)
  - दीघ निकाय → सिर्फ 12 महाजनपदों का उल्लेख
- जैन साहित्य → भगवती सूत्र → कुल 16 महाजनपद

महाजनपद

गणराज्य

अध्यक्ष का निर्वाचन
(प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से)

(5) वज्जी, मल्ल, कुरु,
कम्बोज, अस्मक

(विजय माल्या कम बीज कर दिया अस्सी रु.का)

राजतंत्रशाही

राजा का शासन (वंशानुगत)

(11)

PARMAR SSC

महाजनपद	राजधानी	आधुनिक स्थिति
अंग →	चम्पा →	मुंगेर & भागलपुर
मगध →	राजगीर/पाटलीपुत्र →	गया & पटना
काशी →	वाराणसी →	बनारस
वत्स →	कौशाम्बी →	इलाहाबाद
कौशल →	श्रावस्ती/अयोध्या →	पूर्वोत्तर UP
सूरसेन →	मथुरा →	मथुरा
पांचाल →	अहिच्छत्र/कांपिल्य →	पश्चिमी UP (बरेली)
कुरु →	इंद्रप्रस्थ →	मेरठ और दक्षिण-पूर्व हरयाणा
मत्स्य →	विराटनगर →	जयपुर
चेदी →	सोत्थीवती/बांदा →	बुंदेलखण्ड
अवंती →	उज्जैन/महिष्मती →	MP & मालवा
गांधार →	तक्षशिला →	रावलपिंडी
कम्बोज →	पूंछ/हाटक →	राजौरी & हजरा
अश्मक →	प्रतिष्ठान/पैठान →	गोदावरी के तट पर
वज्जी →	वैशाली →	वैशाली
मल्ल →	कुशीनारा/कुशीनगर →	देवदार/देवरिया & UP

मगध के उत्थान के कारण :

- लाभप्रद स्थिति, गंगा के दक्षिण में।
- इसकी राजधानी राजगृह 5 पहाड़ियों से घिरी है और पाटलिपुत्र गंगा और
- सोन के संगम पर स्थित है।
- हाथियों की बड़ी संख्या में उपलब्धता।
- महान/पराक्रमी नेता
- लौह खदानें (झारखंड क्षेत्र में)
  - ↳ हथियार की उपलब्धता

PARMAR SSC

मगध

हर्यंक राजवंश :

1. बिम्बिसार (544 ई.पू - 492 BC)

→ आगरा विजय

→ कूटनीतिक रूप से → विवाह के माध्यम से (3 पत्नियाँ)
- कौशल राजा का पुत्र प्रसेनजित की बहन
- चेलाना (लिच्छवी)
- मद्र कबीला (पंजाब)

→ अपने चिकित्सक 'जीवक' को उज्जैन (शासक - पीलिया से ग्रसित) भेजा।

उपाधि - सेनिया (SENIYA)

2. अजातशत्रु :

→ चेलाना का पुत्र

→ लिच्छवी पर विजय प्राप्त की

→ कौशल को हराया (राजा की बेटी से विवाह)

→ प्रथम बौद्ध संगीति का संरक्षक

→ पिता बिम्बिसार की हत्या

→ युद्ध इंजन / गुलेल (Catapults) का उपयोग करके वैशाली पर विजय

3. उदयिन :

→ राजधानी राजगीर (राजगृह) से पाटलिपुत्र परिवर्तित

पाटलीपुत्र → वर्तमान नाम - पटना

शिशुनाग वंश :

→ अवंती को हराया और मगध मे विलय किया।

→ शासक कालाशोक ने द्वितीय बौद्ध संगीति को संरक्षण दिया।

नंद वंश:

1. महापदमनन्द : शीर्षक/उपाधि (एकराट → साम्राज्य निर्माता)

'सभी क्षत्रियों को उखाड़ने वाला'

PARMAR SSC

2. **धनानंद :** मैसेडोनिया का शासक अलेक्जेंडर का इसके शासनकाल (326 ई० पू०) के दौरान आक्रमण

अलेक्जेंडर महान → कई स्थानों पर विजय
→ सेना ने आगे युद्ध के लिये मना किया

हाइडेस्पेस / हाइडेस्पीज का युद्ध - सिकंदर & पौरस के बीच (विजयी)

झेलम नदी के तट पर

समाप्त:

मिट्टी के बर्तन: उत्तरी काले पॉलिश बर्तन (NBPW)

नवपाषाणकाल - Cord impresses
- सिंधु घाटी सभ्यता / IVS - OCP / BRW
- पूर्व वैदिक काल / EVA - BRW / PGW
- उत्तर वैदिक काल / LVA - PGW / NBPW

- पंचमार्क चांदी के सिक्के (धन का रूप)
  - ↓ व्यापार करने में सुविधा
  - निश्का
  - कार्षापण

PARMAR SSC

कारीगर & व्यापारी :

गिल्ड / श्रेणियाँ (संगठन) → व्यापारियों का समुदाय

- शिल्पकला वंशानुगत थी।
- लोहे के फाल → कृषि अधिशेष (हड़प्पा के बाद दूसरा शहरीकरण)

पद :

- ग्राम प्रधान - भोजक
- धनी किसान - गृहपति (अधिकांश वैश्य)
- किसानों को कर के रूप में उपज का 1/6 भाग देना होता था।

→ बली - राजा को स्वैच्छिक भेंट

→ टोल टैक्स - शौल्लिका / शुल्काध्यक्ष के नाम से, अधिकारियों द्वारा वसूला जाना

नंद वंश का अंतिम शासक - धनानंद

विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना - धर्मपाल (पालराजा)

→ मगध, गंगा के दक्षिण में एवं गंगा और सोन नदी के मिलनस्थल पर स्थित था। (शक्तिशाली होने का कारण)

→ वाराणसी - वरुण और अस्सी नदियों के नाम पर

→ मथुरा - उत्तरपथ (कंबोज, गांधार) और दक्षिणपथ के मिलनस्थल पर था।

→ मगध के बाद सबसे शक्तिशाली महाजनपद - अवंती

→ वज्जी → कुल 8 गण → ज्ञात्रिका, विदेह, लिच्छवी

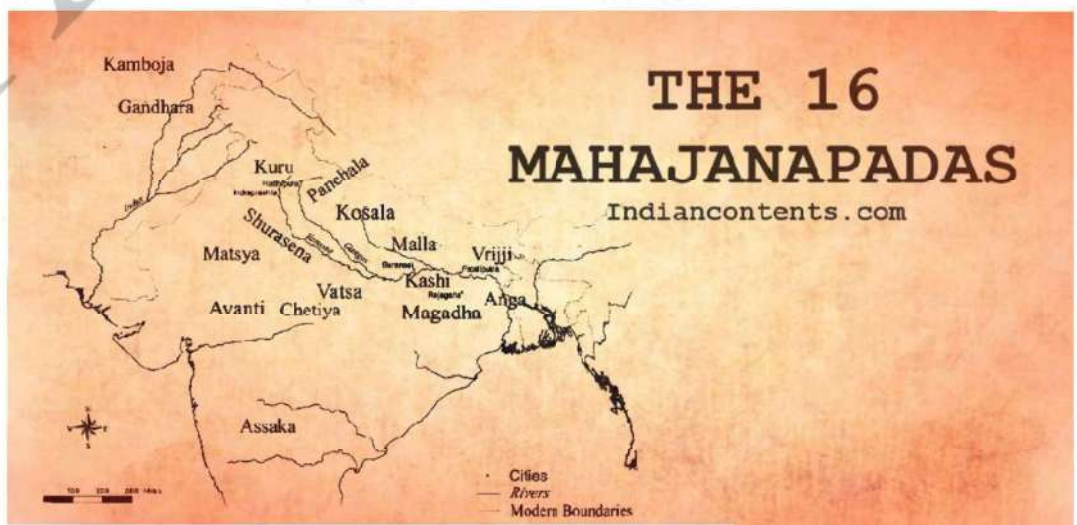

PARMAR SSC

PARMAR SSC

मौर्य साम्राज्य

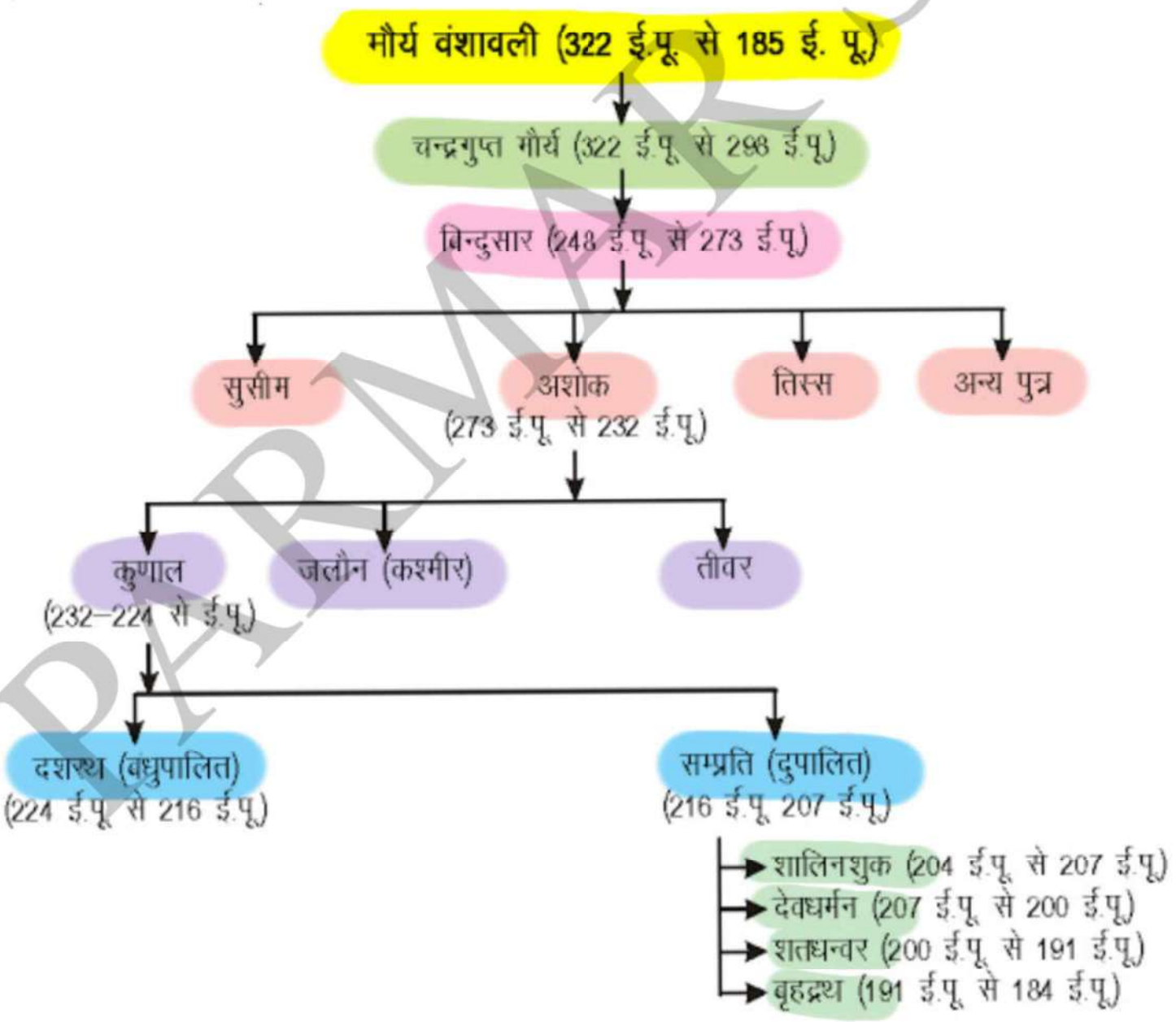

PARMAR SSC

मौर्य साम्राज्य के स्त्रोत :

1. **कौटिल्य की अर्थशास्त्र :** मौर्यसाम्राज्य का प्राथमिक स्त्रोत, यह पुस्तक ब्राह्मण के घर मे मिली।
   - चंद्रगुप्त मौर्य को सिंहासन पर बैठाने मे मुख्य भूमिका
2. **विशाखदत्त का मुद्राराक्षस :** गुप्त साम्राज्य के समय लिखित पुस्तक
   - संस्कृत के विद्वान

मौर्य साम्राज्य ने लगभग सम्पूर्ण भारत पर कब्जा कर लिया था। (कुछ दक्षिण भारत को छोड़कर) → भारत + अफगानिस्तान तक

3. **मेगस्थनीज की इण्डिका :**
   - यात्री, भारत आया (ग्रीक से)
4. **बौद्ध साहित्य :** मौर्य साम्राज्य का स्त्रोत, मौर्य के समकालीन
   अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाया (मुख्य कारण)
   इसलिय बौद्ध साहित्य अशोक एवं मौर्य साम्राज्य का वर्णन करते है।

जातक कथायें { दीपवम्स, महावम्स, दिव्यदान } (मौर्य साम्राज्य का वर्णन)

मौर्यो की उत्पत्ति : ठोस सबूत नहीं।

विशाखदत्त की मुद्राराक्षस के अनुसार

चंद्रगुप्त मौर्य → धनानंद (नंद वंश का अंतिम शासक) के दरबार मे एक शूद्र कुल की महिला के साथ अवैध संबंध से चंद्रगुप्त मौर्य एक अवैध बालक

↓

बौद्ध धर्म मे उच्च कुल का बताया गया।

→ क्योंकि अशोक ने बौद्ध धर्म अपनाया था तो बौद्ध धर्म मे उसे निम्न कुल की जगह उच्च कुल का बताया गया।

PARMAR SSC

→ शूद्र कुल की उस महिला के नाम मोरी के कारण मौर्य नाम पड़ा।

- मेगस्थनीज की इंडिका → मौर्य निम्न कुल के
- पुराण → शूद्र बताते है।
- मुद्राराक्षस { विशाल बताया गया / कुलहीन (निम्न कुल का)
- जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात) → वैश्य बताया

शासक :

→ नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को हराकर चंद्रगुप्त मौर्य ने कौटिल्य की मदद से मौर्य वंश की स्थापना की।

कौटिल्य → अन्यनाम → विष्णुगुप्त, चाणक्य

→ चाणक्य के पिता (चणक्य) - धनानंद के दरबारी

चाहते थे → गद्दी पर
- धनानंद ✗
- धनानंद का छोटा भाई ✓

→ धनानंद ने चाणक्य के पिता को मरवा दिया।
  ↳ जिसका बदला कौटिल्य ने लिया।

→ कौटिल्य अपनी सेनाओं मे विषकन्याओं को रखते थे।
- शत्रुओं के खिलाफ प्रयोग
- → अनाथ लडकियाँ
- → सूक्ष्म / अल्प मात्रा मे विष दिया जाता था।
- → ओंठ व लार मे विष रहता था

→ चाणक्य नागासाधु के भेष मे धनानंद के दरबार में गये
  ↳ बेइज्जती कर दी चाणक्य की

चाणक्य ने बोला → पाटलिपुत्र की जनता बहुत संख्या में मरेगी।
  ↳ पाटलिपुत्र की झील मे जहर मिलाया → असंख्य मृत्यु हुई
  ↳ मृत्यु रोकने के लिये धनानंद को वन जाने को कहा।

→ वन मे बिषकन्याओं द्वारा धनानंद की मृत्यु। (चंद्रगुप्त मौर्य शासक बना)

PARMAR SSC

चंद्रगुप्त मौर्य :

- संस्थापक
- धनानंद को हराया
- सेल्यूकस निकेटर (अलेक्जेंडर महान का कमांडर) को हराया।
  - ↳ उत्तर पश्चिमी भारत पर शासन
- मगध मे अकाल पड़ा → चंद्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म अपनाया
  - ↓
  - दक्षिण भारत, भद्रबाहु के साथ गये।
  - (संलेखना व्रत से मृत्यु)
- सेल्यूकस निकेटर ने मेगस्थनीज को चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार मे भेजा।
  - ↳ अपना पूरा क्षेत्र चंद्रगुप्त मौर्य को दिया (500 हाथी के वापिसी में)
  - ↳ बेटी हेलिना की शादि चंद्रगुप्त मौर्य से की। (चाणक्य की सलाह पर)

बिंदुसार :

- चंद्रगुप्त मौर्य का बेटा
  - ↳ अमित्रघात के नाम से जाना जाता।
- इन्होंने आजीवक संप्रदाय को संरक्षण दिया।
- उसने मीठी शराब, सूखे अंजीर और एक दार्शनिक की मांग सीरिया के एंटिओकस I से की।
- वह दो समुद्रों के बीच की भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिए जाने जाते हैं।
- पुत्र - अशोक

(आजीवक संप्रदाय → मखली गोशाल)

PARMAR SSC

अशोक :

- बिंदुसार का पुत्र
- सर्वाधिक क्षेत्र पर शासन
- चंद्रगुप्त मौर्य के समय, उडीसा (कलिंग) को भी कब्जा किया।
  (स्वतंत्र था कलिंग) → कलिंग युद्ध

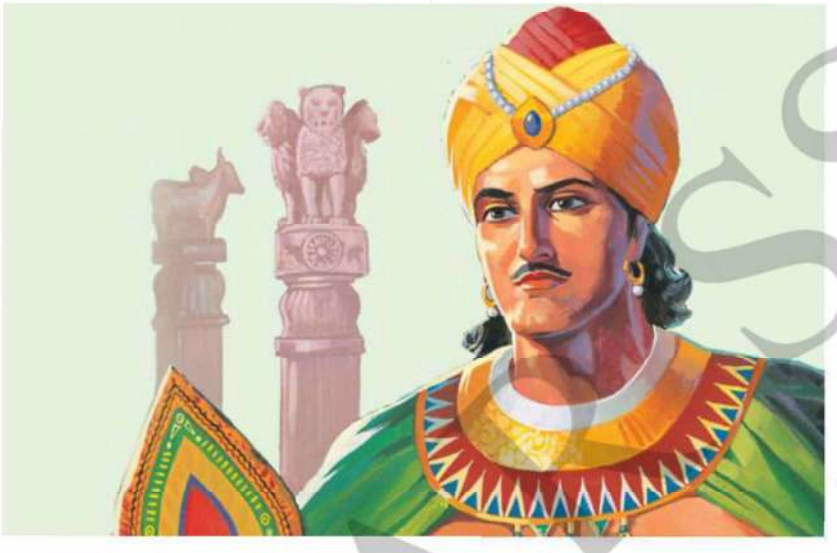

- कुल 12 वर्ष शासन किया।
- राज्याभिषेक के 9 वें साल (8 वर्ष बाद) 261 BC मे कलिंग युद्ध किया & जीता।
- अपने 99 भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा।
- कलिंग युद्ध के बाद हृदय परिवर्तित

भेरीघोष → धम्मघोष
(युद्ध नीति) (प्यार से जीतना)

अशोक के अभिलेख :

- अभिलेख
  - शिलालेख
    - मुख्य शिलालेख — 14
    - लघुशिलालेख — 15
  - स्तंभलेख

→ 14 लाइने लिखी गई न कि 14 चट्टानें

PARMAR SSC

अशोक के प्रमुख शिलालेख एवं उनमें वर्णित विषय

पहला शिलालेख	इसमें पशुबलि की निंदा की गयी है।
दूसरा शिलालेख	इसमें अशोक ने मनुष्य एवं पशु दोनों की चिकित्सा-व्यवस्था का उल्लेख किया है।
तीसरा शिलालेख	इसमें राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया है कि वे हर पाँचवें वर्ष के उपरान्त दौरे पर जाएँ। इस शिलालेख में कुछ धार्मिक नियमों का भी उल्लेख किया गया है।
चौथा शिलालेख	इस अभिलेख में भेरीघोष की जगह धम्मघोष की घोषणा की गयी है।
पाँचवाँ शिलालेख	इस शिलालेख में धर्म-महामात्रों की नियुक्ति के विषय में जानकारी मिलती है।
छठा शिलालेख	इसमें आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गयी है।
सातवाँ एवं आठवाँ शिलालेख	इनमें अशोक की तीर्थ-यात्राओं का उल्लेख किया गया है।
नौवाँ शिलालेख	इसमें सच्ची भेंट तथा सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख किया गया है।
दसवाँ शिलालेख	इसमें अशोक ने आदेश दिया है कि राजा तथा उच्च अधिकारी हमेशा प्रजा के हित में सोचें।
ग्यारहवाँ शिलालेख	इसमें धम्म की व्याख्या की गयी है।
बारहवाँ शिलालेख	इसमें स्त्री महामात्रों की नियुक्ति एवं सभी प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
तेरहवाँ शिलालेख	इसमें कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय-परिवर्तन की बात कही गयी है। इसी में पड़ोसी राजाओं का वर्णन है।
चौदहवाँ शिलालेख	अशोक ने जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया।

1.अशोक के शिलालेख

वृहद शिलालेख

शाहबाद गढ़ी	पाकिस्तान
मनसेहरा	पाकिस्तान
कालसी	उत्तराखंड
एर्रगुडी	आंध्र प्रदेश
धौली	उड़ीसा
जौगढ़	उड़ीसा
गिरनार	गुजरात
सोपारा	महाराष्ट्र

लघु शिलालेख

मास्की	कर्नाटक
गुर्जर	मध्यप्रदेश
ब्रह्मगिरि	कर्नाटक
निट्ठूर	कर्नाटक
भाब्रू	राजस्थान
शेर ए कुंना	कंधार
सहस राम	बिहार
तक्षशिला	अफगान
लघमान	

PARMAR SSC

- धम्म का सिद्धांत दिया अपने अभिलेखों में।
- अभिलेखों को पहली बार पढा - जेम्स प्रिंसेप
- मिलने के स्थान - धौली, जौगड़ा, येरागुडी, सोपरा, गिरनार, कंधार, कालसी, शाहबाजगढी, मानसेहरा

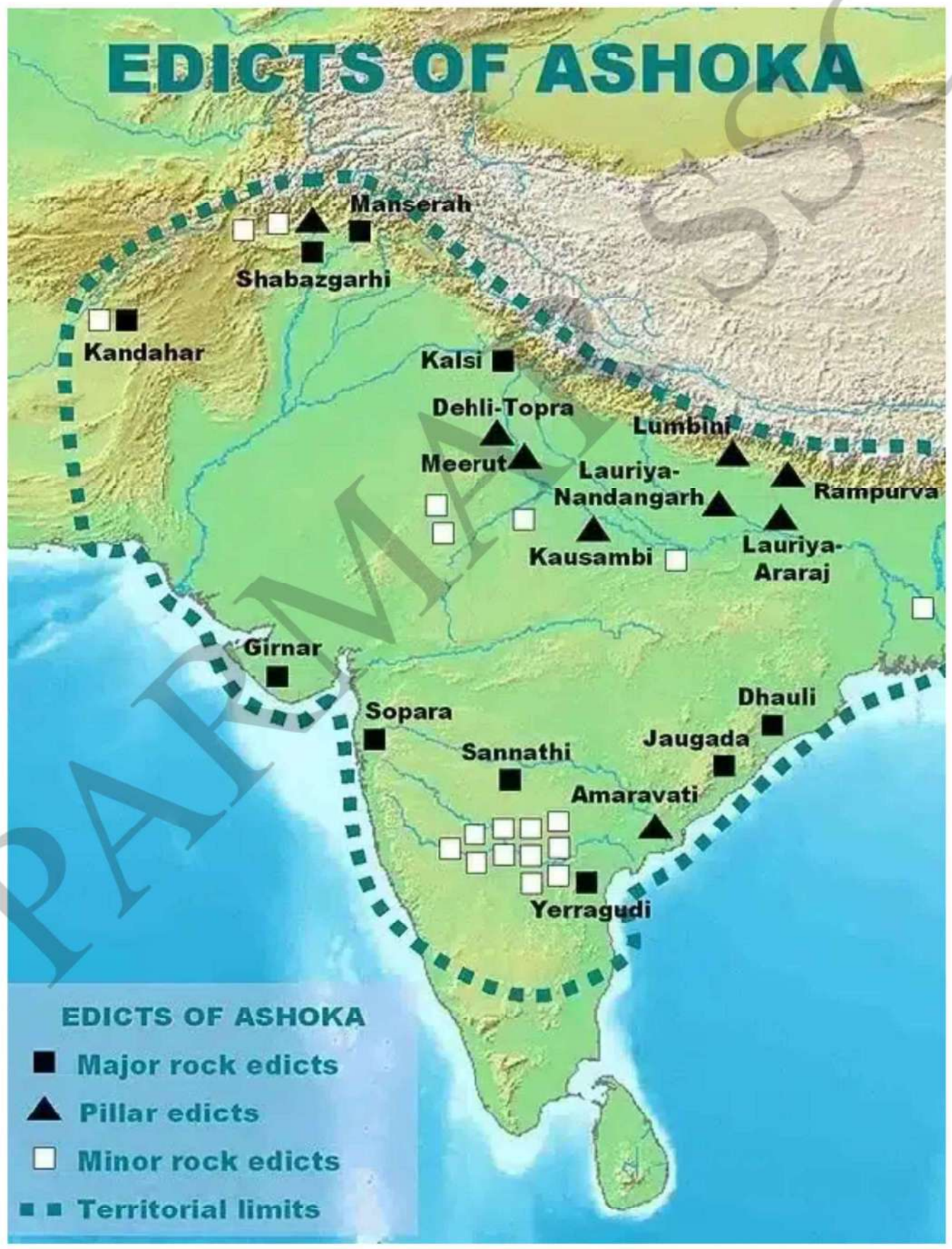

PARMAR SSC

स्तम्भ शिलालेख :

- कुल - 14
- भाषा = 3 , लिपि - 4
- प्रयुक्त प्रमुख भाषा - प्राकृत
- " " लिपि - ब्राह्मी (अन्य - खरोष्ठी)
  ↳ ईरानियों द्वारा प्रस्तुत
- 13 वें शिलालेख में कलिंग युद्ध का वर्णन ।

लघु शिलालेख : ④

1. मास्की - कर्नाटक
2. गुर्जर - MP
3. ब्रह्मगिरी
4. नेट्टूर

स्तंभशिलालेख : ⑦

- दिल्ली टोपरा स्तंभ शिलालेख - एकमात्र शिलालेख जो 7 वें शिलालेख के साथ है ।
- एक ही भाषा & एक ही लिपि का प्रयोग
  ↓ प्राकृत ↓ ब्राह्मी
- लौरिया अरराज } बिहार
- लौरिया नंदगढ }

- रामपुरवा स्तंभलेख - केवल बैल मिला

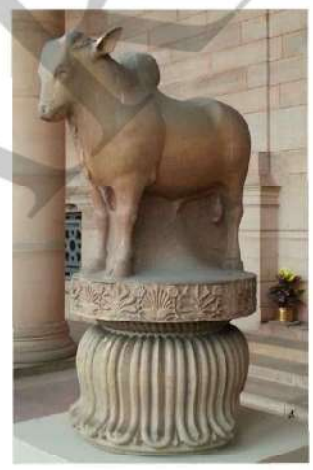

- सारनाथ - अशोक के धम्मपरिवर्तन को दर्शाता है ।
  इसे उन्होंने बुद्ध के प्रथम उपदेश की स्मृति में बनवाया ।
  राष्ट्रीय प्रतीक (24 जनवरी 1950)

PARMAR SSC

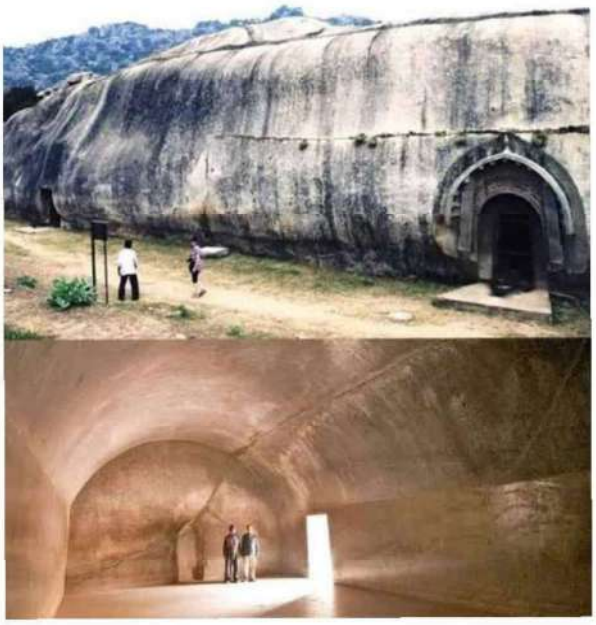

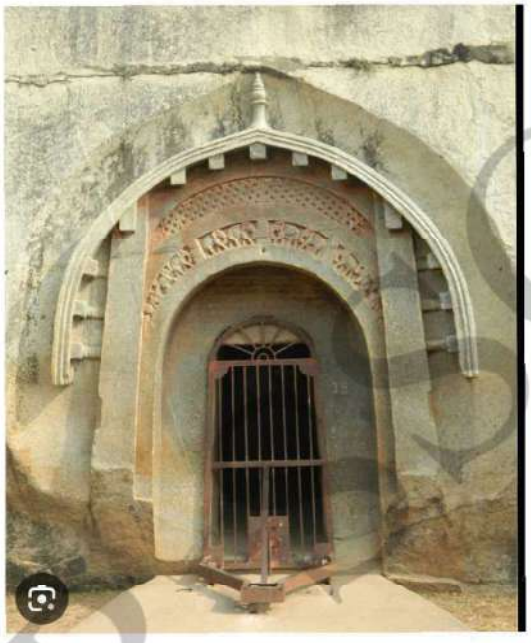

- बराबर पहाड़ी गुफाएँ : बिहार , अशोक ने बौद्धो के लिये गुफाएं बनवायी।
- लोमस ऋषि गुफाएं : बिहार

- नागार्जुनी गुफाएं : अशोक के पोते दशरथ द्वारा निर्मित
- रूम्मिनदेई / निगाली सागर
  शिलालेख → नेपाल

- अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र & पुत्री संघमित्रा को बौद्ध धर्म के प्रचार- प्रसार के लिए सीलोन (श्रीलंका) भेजा।
- कनकमुनि / कोणागमन स्तूप → पुनर्निर्मित
- मौर्य वंश का अंतिम शासक - बृहद्रथ
  ↳ पुष्यमित्र शुंग ने हराया

मौर्य प्रशासन :

कौटिल्य द्वारा सप्तांग सिद्धांत दिया गया - प्रशासन को नियंत्रित करने के लिये 7 तत्व

राजा	→	राजा
सचिव	→	अमात्य
क्षेत्र	→	जनपद
किला	→	दुर्ग
खजाना	→	कोष
सेना	→	सेना
मित्र	→	मित्र

कर प्रणाली :

- सोने में चुकाया गया कर - हिरण्या / Hiranya
- इमरजेन्सी कर - प्रणय / Pranaya
- गांवो द्वारा वस्तु के रूप में दिया जाने वाला कर - पिंडकारा / PindaKara
- सेना रखरखाव कर - सेनाभक्तम / SenabhaKtam
- अधिभार - पार्श्वम / Parsvam

- अधिकारी
  - सन्निधाता - कोषाध्यक्ष
  - समाहरता (समाहर्ता) - कर संग्राहक
- न्यायालय
  - फौजदारी → प्रदेष्टा (कण्टक शोधन)
  - दीवानी → व्यवहारिक (धर्मस्थनीय)

PARMAR SSC

गोपा - → हिसाब के लिये जिम्मेदार

अक्षपटलाध्यक्ष - → महालेखाकार
(अक्षपटलिक)

नगरका → शहर प्रशासन के लिये

सीताध्यक्ष → कृषि का अध्यक्ष

समष्ठाध्यक्ष → बाजार के लिये

नवाध्यक्ष → जहाजों का हिसाब

शुल्काध्यक्ष → सीमा शुल्क के लिये

धम्म महामात्य → धर्म के पालन की जाँच के लिये

इंडिका में उल्लखित मेगस्थनीज के अनुसार -

नगर प्रशासन → 6 समितियाँ → प्रत्येक में 5 सदस्य

सेना → 6 समितियाँ → प्रत्येक में 5 सदस्य

प्रांतीय प्रशासन -

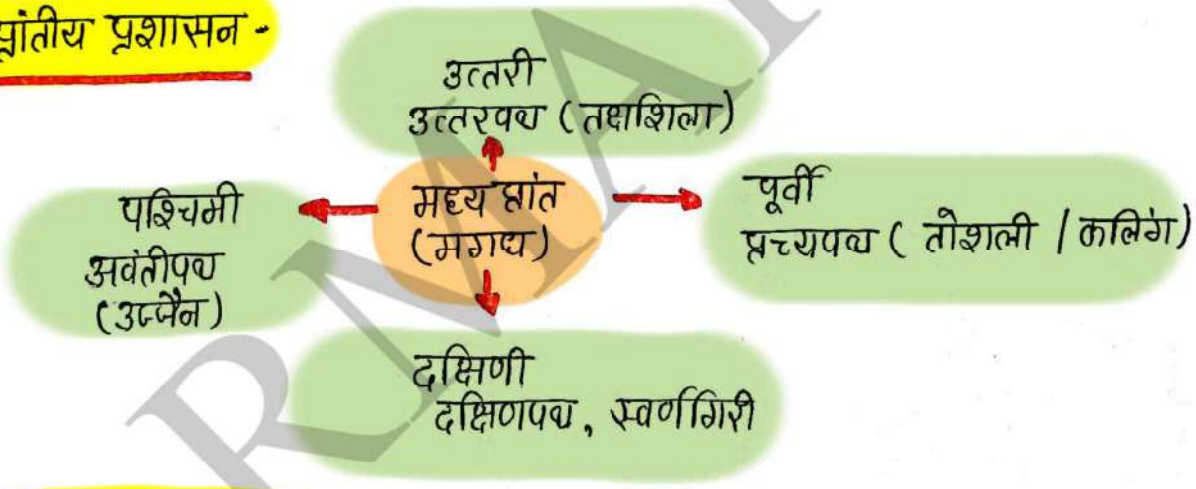

समाज - 4 वर्ण

- इंडिका के अनुसार, समाज को 7 वर्णों मे विभाजित , कोई गुलाम नही।
- अर्थशास्त्र के अनुसार, महिलायें उच्च पद पर आसीन थी & सेना का हिस्सा थी।
- अन्त्यज: बिना किसी जाति के
- विवाह के 8 प्रकारों का उल्लेख किया गया। और तलाक की अनुमति दी गई।

PARMAR SSC

जाति प्रथा :

मेगस्थनीज की पुस्तक इंडिका के अनुसार भारतीय समाज सात जातियों में विभाजित था, जो दार्शनिक, किसान, शिकारी और चरवाहे, व्यापारी, योद्धा, निरीक्षक (जासूस) और पार्षद थे।

अर्थव्यवस्था : अशोक ने कर मूल्यों को कम किया।
लोगों को बाली (स्वैच्छिक भेंट) में नहीं जाना पड़ता था।

बंदरगाह :

भरौच/भड़ौच, सुपारा - पूर्व
ताम्रलिप्ति - पश्चिम
} बंदरगाह

PARMAR SSC

मौर्य वंश के बाद

शुंग वंश : (185-73BC)

- मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ को प्रमुख सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मारकर शुंगवंश की नींव रखी।
- राजधानी- विदिशा (वर्तमान में MP)
- अनुसरण- हिन्दु धर्म के अनुयायी + बौद्ध धर्म को संरक्षण
  ↓
  भरहुत स्तूप (MP) का निर्माण पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल में हुआ।
- अग्निमित्र : पुष्यमित्र शुंग का पुत्र
  ↳ मालविका (प्रेमिका)
- मालविकाग्निमित्र (नाटक) - कालीदास द्वारा रचित
- समकालीन- पतंजली (योग दर्शन के संस्थापक)
  ↳ महाभाष्य (पुस्तक)
  ↳ पुष्यमित्र शुंग के लिये 2 अश्वमेध यज्ञ को आयोजित किया।
- अंतिम शासक- देवभूति
  ↳ मुख्य सेनापति वासुदेव द्वारा देवभूति की हत्या कर कण्व वंश की नींव

कण्व वंश : 73 BC- 28 BC

राजधानी - पाटलिपुत्र

सातवाहन वंश : 60 BC- 225 AD

PARMAR SSC

समकालीन { कण्व वंश - उत्तर में
सातवाहन - नीचे, महाराष्ट्र वाले क्षेत्र में

→ 16 महाजनपदों में सबसे दक्षिणी - अश्मक
↓
राजधानी - प्रतिष्ठान / पैठान (महाराष्ट्र)
(सातवाहन वंश की राजधानी)

→ संस्थापक - सिमुक

→ सबसे महान शासकों में एक - गौतमीपुत्र सातकर्णी (106-130AD)
नासिक अभिलेख → शक शासक क्षत्रपनहपान को हराया
→ मध्य एशिया से भारत आये

→ सातवाहन वंश - ब्राह्मण

- गौतमीपुत्र शातकर्णी की उपाधि - एकाब्राह्मण
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने चार गुना वर्ण व्यवस्था स्थापित करने का दावा किया।
- शक वंश के रूद्रदामन प्रथम ने वशिष्ठपुत्र पुलुमावि (एक सातवाहन शासक) को हराया।

→ समाज { पितृवंशीय - सम्पत्ति के हिसाब से
मातृवंशीय - अपने नाम के आगे माता का नाम

→ सातवाहनों ने ब्राह्मणों & बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान करने की प्रथा शुरु की।
व्यापारी { बौद्ध धर्म को मानने वाले
जैन धर्म " " "
→ राजाओं को कर इन्हीं से मिलता था।
(इसलिये बौद्ध भिक्षुओं को भूमि दान)

→ शीशे के बने सिक्के चलवाये।

PARMAR SSC

→ बहुत से चैत्य और विहारों का निर्माण करवाया।
↳ चट्टानों को काटकर

जैसे- नासिक, कन्हेरी, करले → महाराष्ट्र

लोमस ऋषि गुफा } विहार
नागार्जुनी गुफा }

→ स्तूप बनवायें - अमरावती स्तूप, नागार्जुनकोंडा (आंध्रप्रदेश)

→ अजंता और एलोरा गुफा सबसे पहले इनके ही शासनकाल में बनी।

{ चैत्य- पूजा स्थल
विहार- निवास स्थान

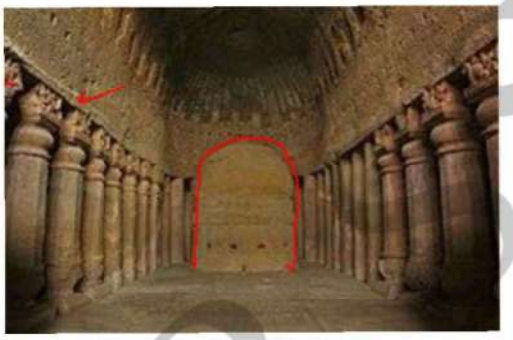

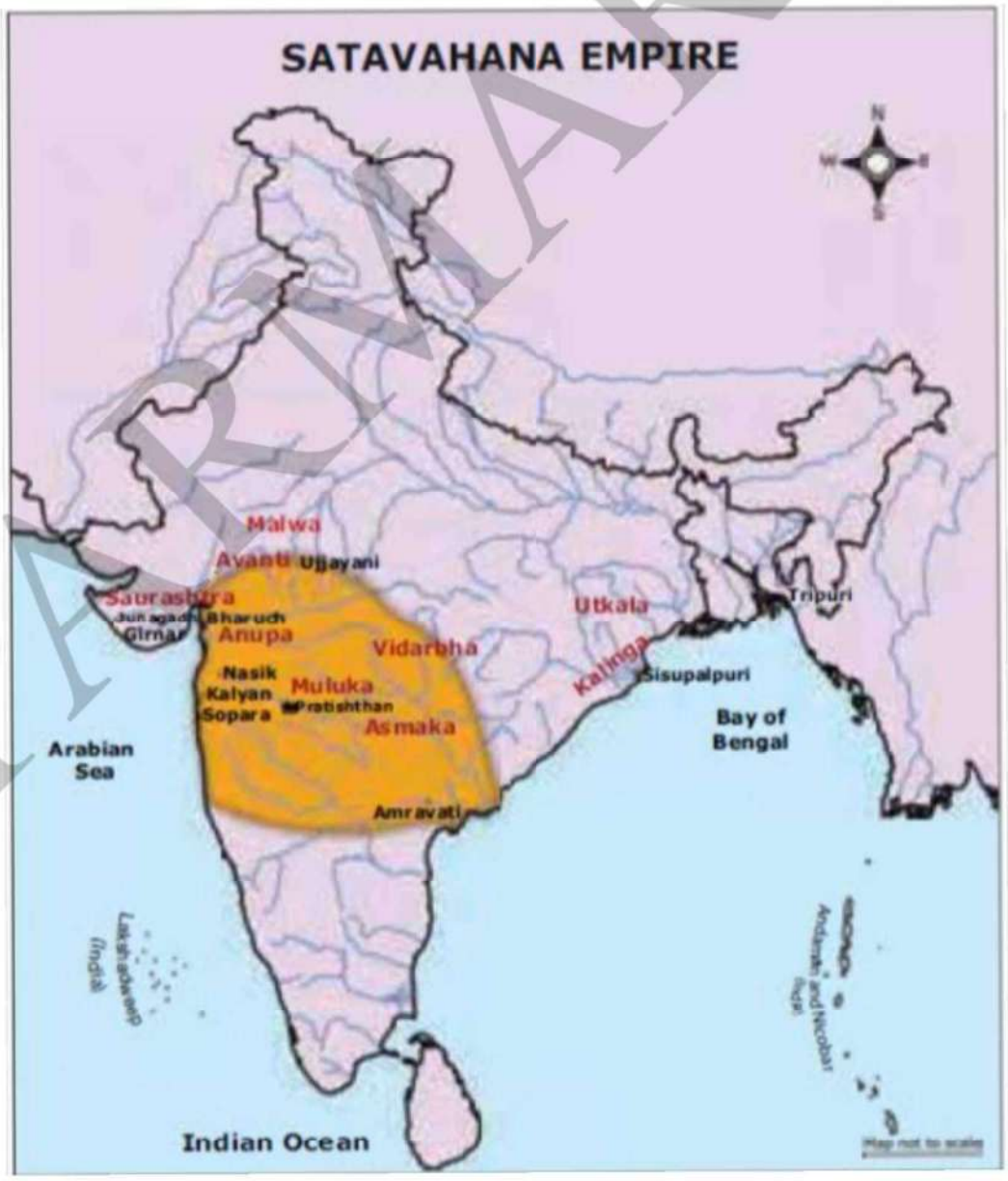

PARMAR SSC

चेदि वंश: (60 ई.पू. - 225 ई.पू.)

- इस राजवंश ने कलिंग के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- राजा खारवेल इस राजवंश के सबसे महान शासक थे जिन्होंने जैन धर्म को अपनाया।

(कलिंग → उड़ीसा)

INVSIONS FROM CENTRAL ASIA

मध्य भारत से आक्रमण :

- मध्य एशिया में कई वंश शासन कर रहे थे।
  - स्काइथिया → बाद में शक कहलाये
  - यूजही → ये वास्तव में कुषाण थे।
  - पार्थिया
  - यूनानी

- विश्व का आँठवां अजूबा - कम्बोडिया का अंकोरवाट मंदिर
- भारत मे अधिकतम आक्रमण - हिन्दुकुश तरफ से
- सबसे पहले मध्य एशिया से आक्रमण किया - यूनानी वंश

यूनानी :

- भारत मे इनको इंण्डोग्रीक कहा गया।
- यूनानी उत्तरी अफगानिस्तान में शासन कर रहें थे।
- अफगानिस्तान के दक्षिण में सेल्युकस निकेटर का वंश सेलुसिस वंश का शासन।
- स्काइथियन के द्वारा यूनानियों का भारत पर आक्रमण।
- सबसे पहला शासक - मिलिन्द
  - मिलिंदपन्हो
    - मिलिन्द → प्रश्न
    - मिलिन्द & नागसेन का वार्तालाप
- यूनानी द्वारा सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों का प्रयोग
  - सबसे पहले सिक्के → महाजनपद (मगध में मौर्य वंश में)
    - पंचमार्क सिक्के (सिल्वर)
- यूनानी ने सबसे पहले राजा की तस्वीर वाले सिक्के चलाये।
- इन्होंने हैलेनिस्टिक कला / गांधार कला की शुरुवात की (उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में)
  - मध्य एशिया + भारत की कला

PARMAR SSC

शक वंश: 5 शाखायें
↳ 'क्षत्रप'

- शक - स्काईथियन
- 5 शाखायें अफगानिस्तान में अलग-अलग शासन।
- कन्नड, गुजरात में एक शाखा।
- शकों ने उत्तर पश्चिम & उत्तर भारत में शासन किया।
  ↳ 400 ई० तक शासन
- इन्होंने क्षत्रप प्रणाली की शुरुआत की।
  ↳ साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया गया था, प्रत्येक सैन्य गवर्नर महाक्षत्रप (महान क्षत्रप) के अधीन था।
- राजा विक्रमादित्य (परमार वंश) ने शकों को हराया (57 BC)
  ↓
  विक्रम संवत शुरु ← हिन्दु धर्म में मान्यता
- भारत सरकार → शक संवत
  2023 + 57 = 2080 (वर्तमान)
- विक्रमादित्य → उज्जैन के शासक
- परमार वंश के पहले शासक - विक्रमादित्य परमार
- सबसे प्रसिद्ध शक शासक → रुद्रदामन प्रथम (क्षत्रप वंश) (130-150AD)
  ↳ जूनागढ शिलालेख / गिरनार शिलालेख (गुजरात)
  ↓
  सुदर्शन झील की मरम्मत
  निर्मित ↳ पुष्यगुप्त वैश्य (चंद्रगुप्त मौर्य के समय)
- शक → पार्थियन → कुषाण

PARMAR SSC

कुषाण साम्राज्य : (Yuezhis/Tocharians)

- पहली शताब्दी से तीसरी शताब्दी तक
- राजधानी- पेशावर (पहले), मथुरा (बाद में)
- स्वयं को 'देवताओं का पुत्र / राजाओं का राजा' कहते थे।
- कुषाण साम्राज्य में अलग-अलग वंश आये।
- 1st → कडफिसेस
  - कुजुल कडफिसेस
  - वीमा कडफिसेस

कनिष्क (78 AD - 101 AD)

- सबसे शक्तिशाली शासक
- अन्य नाम - द्वितीय अशोक
- शक संवत की शुरुआत - 78 AD
- चौथी बौद्ध संगीति का संरक्षक
- महायान बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।
- सोने के शुद्धतम रूप वाले सिक्के चलाये।
- रेशम मार्ग पर नियंत्रण।

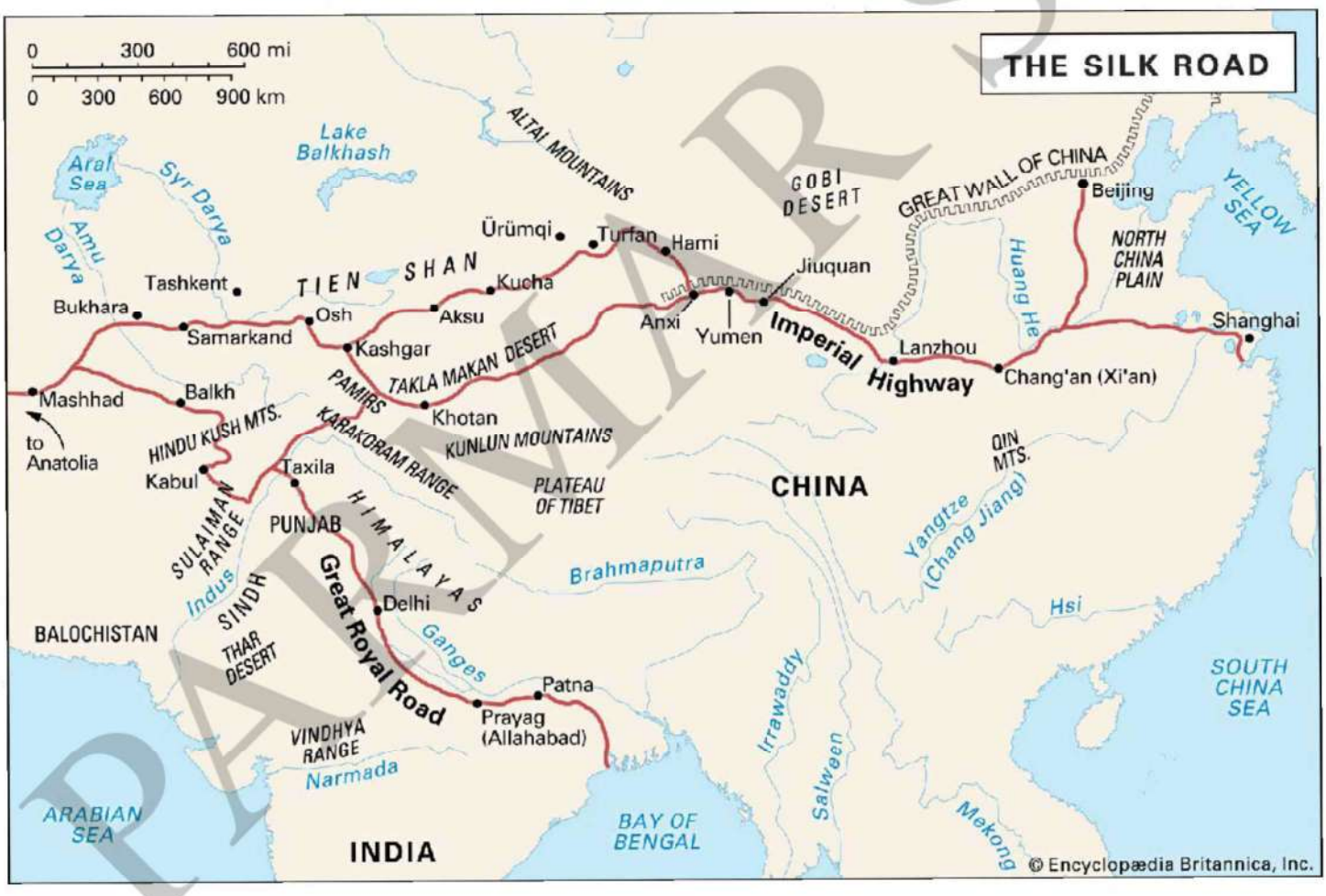

अफगानिस्तान

- हमें उनके बारे में रबाता शिलालेखों से पता चलता है जो दूसरी शताब्दी ई. के हैं, तथा बैक्ट्रियन भाषा और ग्रीक लिपि में लिखे गये हैं।

PARMAR SSC

विदेशी आक्रमण का भारतीय समाज पर प्रभाव:

→ **मिटटी के बर्तन:** लाल बर्तन

ये लोग भिन्न तरीके से घुड़सवार तकनीक, पगड़ी पहनना, शेरवानी पहनना, आदि सिखाये।

→ **राजनीति:** कुषाणों ने सरकार की क्षत्रप प्रणाली शुरू की।

- ↳ सैन्य शासन (वंशानुगत गद्दी X)
- ↳ यूनानियों द्वारा रणनीति

→ **संस्कृति:** शिव & बुद्ध की पूजा

→ **साहित्य:** बुद्धचरित → अश्वघोष (बुद्ध की पहली जीवनी)

महावस्तु & दिव्यदान

कामसूत्र → वात्स्यायन (4th-3rd century BC)

→ **विज्ञान:** चरकसंहिता (चिकित्सा पर) (3rd-2nd century BC)

↳ चरक

जनक

शाल्य चिकित्सा के जनक - सुश्रुत

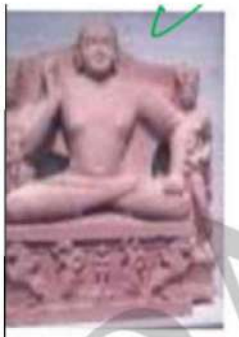

PARMAR SSC

गांधार

ग्रीक

बौद्ध धर्म

बुद्ध के चारों ओर प्रभामंडल (Halo) ठीक से विकसित नही हुआ/

भूरा बलुआ पत्थर का प्रयोग

मथुरा

स्वदेशी (कुषाणों द्वारा विकास)

हिन्दू देवी - देवता & जैन

प्रभामंडल का ठीक से विकास

लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग

PARMAR SSC

संगम काल

दक्षिण भारत में कांस्य युग नहीं, बल्कि महापाषाण युग है

समय अवधि - 2500 ई०पू०

दक्षिण भारत में लौह युग

कब्रों के आसपास पाया जाता है

मिट्टी के बर्तन : काले और लाल बर्तन

समुदाय : ग्रामीण / देहाती समुदाय

→ दक्षिण भारत का इतिहास

↳ चेर, पांड्या और चोल राजवंश से शुरू होता है।

PARMAR SSC

दक्षिण भारत का इतिहास

- दक्षिण भारत → चेर, चोल & पांड्या (3 साम्राज्य)

संगम वंश :

↳ सभा

- सभाएँ आयोजित → तमिल क्षेत्र मुच्चंगम
- महापाषाण लोग → चेर, चोल & पांड्या
- कुल तीन संगम —संरक्षण→ पांड्या (पांड्या राजाओं ने)

- **प्रथम संगम** → मदुरै में → अगस्त द्वारा संरक्षण
- **दूसरा "** → कपाडपुरम → तोलकाप्पियार द्वारा
- **तीसरा "** → मदुरै

- प्रथम संगम में संगठित साहित्य ×
- दूसरे संगम का साहित्य → तोलकाप्पियम (प्रारंभिक तमिल पाठों में एक)

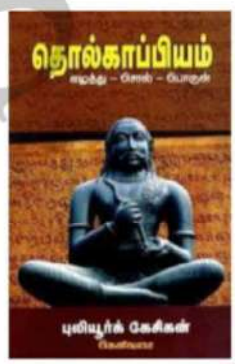

संगम साहित्य

- कथात्मक पाठ
  - ↓ कहानी के रूप में
  - ↓ मेलकनक्कु
  - ↓ इसमें प्रमुख 8 रचनायें
- उपदेशात्मक (काव्यात्मक)
  - ↓ काव्य के रूप में
  - ↓ किलकनक्कु
  - ↓ इसमें कुल 18 लघु कृतियाँ

- ये हमें प्यार & युद्ध का वर्णन करते
  - ↓ एकम
  - ↓ पुरम (तमिल में)

शिलप्पादिकारम → इलांगो अडिगल (रचनाकार)

↳ कोवलन (राजा), कन्नगी (पत्नी), माधवी (दासी) की कहानी

↳ प्रेम कहानी - कोवलन & माधवी की

PARMAR SSC

कन्नगी → पवित्रता & शुद्धता की देवी

मणिमेखलै → कोवलन & माधवी के पुत्री के बारे में
→ सत्तनार (लेखक)

दक्षिण भारत का भूगोल:

भूमि → तिनैस (भूमि का भाग)
तमिल में
↓ 5 भागों में विभाजित
(5) → कुरुन्ची, पलाई, मुल्लाई, मारुतम, नेयताल

तिनै → प्रमुख → मुवेंदर

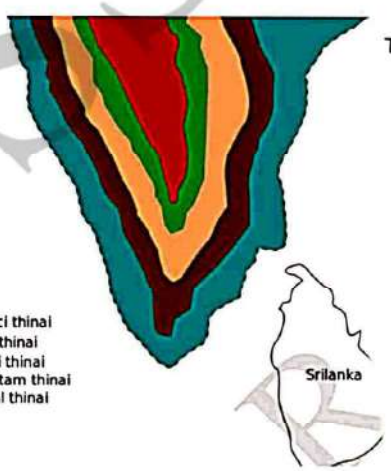

1. कुरुन्ची / कुरिन्सी : शिकार & संग्रहण
2. पलाई : मवेशी चोर & लूटपाट
3. मुल्लई : पशुपालन
4. मारुतम : कृषि
5. नेयताल : मछली पकड़ना & नमक संग्रह

बिन्दुसार : दो समुद्रों के बीच की भूमि का विजेता

अशोक के शिलालेखों में चेर, चोल & पांड्या का वर्णन

↓ ↳ केरलपुत्र कहा गया।
(केरल में शासन)

ताम्रपर्णि
श्रीलंका के लोगों को

चेर:

- केरल (मुख्य) + तमिलनाडु वाले क्षेत्र में
- राजधानी - वंन्जी / वंजी
- बंदरगाह शहर - मुजिरिस / मुचिरिस और टोंडी
- रोमन के साथ व्यापार
- प्रतीक - धनुष & बाण

- ऑगस्टस मंदिर (रोमन द्वारा निर्मित

- पुगलुर शिलालेख में इनके बारे में उल्लेख है।

PARMAR SSC

महानतम चेर शासक - सेनगुट्टुवन (लाल चेरा)

कन्नगी की पूजा करते थे।

Raaja Senguttuvan
(Vel Kelu Kuttuvan)
Ruler Of Chera Dynasty

चोल:

- चोलमण्डलम (अन्य नाम)
- कोरीमण्डल तट पर शासन → कावेरी डेल्टा
- पांड्यों के उत्तर-पूर्व में शासन
- पेन्नार और वेलार नदियों के बीच
- राजधानी - उरईयूर या पुहार
  - कावेरीपट्टनम (अन्य नाम)
  - बंदरगाह शहर
- सूती कपड़ो का व्यापार
- उत्तम / शौर्य नौसेना
- सबसे महान शासक - करिकाल → वेन्नी का युद्ध लड़ा
  - चेर + पांड्या को हराया।
- प्रतीक - बाघ

पांड्या :

Karikala Cholan
Great Monarch of Early Cholas
Indiancontents.com
Battle of Venni
Grand Anicut

- तमिलनाडु में शासन
- राजधानी - मदुरै / मदुरई (वैगई नदी के तट पर)
- प्रतीक - मछली
- मेगस्थनीज की पुस्तक में सबसे पहले वर्णन
  - ये मोतियों के व्यापार के लिये प्रसिद्ध
- रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार
- बंदरगाह - कोरकई

समाज: 3 वर्गों में विभाजित

- शासक वर्ग - अरासर
- धनी वर्ग - वेल्लालर
- निम्न वर्ग - कदाईसियार
- Vaishiyar → व्यापारी

PARMAR SSC

सरकार का स्वरूप :

- संगम काल में वंशानुगत राजतंत्र शासन का रूप था।
- कालभ्रों (Kalabhras) ने संगम काल के बाद 300 ई० से 600 ई० के बीच तमिल देश पर कब्जा कर लिया, जिसके काल को पूर्ववर्ती इतिहासकारों ने 'अंधकार युग' कहा।

PARMAR SSC

गुप्त साम्राज्य

310 AD - 540 AD

→ संस्थापक - श्रीगुप्त
↓ पुत्र
घटोत्कच

उत्तर भारत (UP, बिहार) में शासन

चन्द्रगुप्त - I (319 AD - 334 AD)

- उपाधि - महाराजाधिराज
- विवाह - कुमारदेवी (लिच्छवी राजकुमारी)
- गुप्त संवत की शुरुवात - 320 / 319 AD
- स्वर्ण सिक्के - दीनार
- सर्वाधिक स्वर्ण सिक्के चलाये - गुप्त शासकों ने

समुद्रगुप्त : (335 - 380 AD)

- गुप्त साम्राज्य सबसे शक्तिशाली एवं महान शासक
- इनके शासन का वर्णन - प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तम्भलेख)
  - ↓ कभी नहीं हारा
  - ↳ हरिषेण द्वारा लिखित
- 'भारत का नेपोलियन' कहा - VA स्मिथ ने
- उपाधि - कविराज, परमभागवत, सर्व-राज-ओच्छेत्ता (सभी राजाओं को हराने वाला)
  - ↓ कवियों का राजा
- इसको वीणा बजाते हुये सिक्को पर दर्शाया गया।
- अश्वमेध यज्ञ करवाया।

Gupta Gold Coins

PARMAR SSC

चंद्रगुप्त II (380-414 AD):

- अपने भाई रामगुप्त और शक आक्रमणकारी की हत्या कर सत्ता हासिल की।
  - सबसे पहले तांबे के सिक्के पेश किये।
- विवाद - भाई की पत्नि ध्रुवदेवी से
- इसके शासनकाल मे उच्च स्तर का वैवाहिक गठबंधन देखा गया

  पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह → वाकाटक राजकुमार रुद्रसेन II से
- रुद्रसेन II की मृत्यु के बाद प्रभावती गुप्त सिंहासन पर बैठी।
- शकों पर विजय के बाद चाँदी के सिक्के जारी करने वाला प्रथम गुप्त शासक।
- मेहरौली - लौह स्तम्भ लेख (दिल्ली, कुतुबमीनार परिसर में)

नवरत्न:

1. अमरसिंह
2. धनवन्तरि
3. हरिषेण
4. कालिदास
   - भारत के शेक्सपियर
5. संकु
6. वराहमिहिर
7. वररुचि
8. वैतालभट्ट
9. क्षपणक

Mehrauli Pillar

फाहियान: चंद्रगुप्त II के शासनकाल में यात्रा करने वाला प्रथम चीनी यात्री
- बंगाल से चीन की यात्रा (चीन की वापसी)

- उपाधि - विक्रमादित्य
- कालिदास की पुस्तकें →
  - अभिज्ञान शाकुन्तलम्
  - मालविकाग्निमित्र
  - रघुवंशम्
  - मेघदूत
  - कुमार संभवम्
  - ऋतुसम्हारा

PARMAR SSC

शूद्रक की पुस्तकें → मृच्छकटिका (अन्यनाम- The Little clay cart)
↳ चारुदत्त & वसंतसेना की प्रेमकहानी

कुमारगुप्त (415-455 AD):

- चंद्रगुप्त द्वितीय का पुत्र
- हूणों का आक्रमण (मध्य एशिया की जनजाति)
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की।

स्कंदगुप्त (455-461 AD)

- हूणो का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया।
- उपाधि- विक्रमादित्य (स्त्रोत: भीतरी स्तम्भ लेख)

प्रशासन:

राज्य : (विकेन्द्रीकृत प्रशासन)
- भुक्ति → (उपरिका के प्रभाव के अंतर्गत) जिलो मे विभाजित
- विषय → (विषयपति के प्रभाव मे)
- विषिस → (नगरपति के प्रभाव के अंतर्गत)
- गांव → (ग्रामिका के प्रभाव के अंतर्गत)

महत्वपूर्ण अधिकारी:

- कुमारमात्य - प्रांतीय अधिकारी
- महादण्डनायक - दंड के लिये जिम्मेदार अधिकारी (न्यायाधीश)
- संधिविग्रहिका - युद्ध & न्याय का अधिकारी

अर्थव्यवस्था:

- अत्यधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के जारी किये।

कर:

PARMAR SSC

- **भाग** - कृषकों द्वारा भुगतान किया जाने वाला उपज का 1/6 भाग
- **भोग** - राजा को समय-समय पर फल, फूलों की आपूर्ति
- **बाली** - दमनकारी
- **उपरीकर** - अतिरिक्त कर
(उपरिकरा)

→ **विष्टि** : बंधुआ मजदूरी

→ **सेनाभक्ति**- जब सेना किसी गांव से गुजरती थी तो उसे लोगों द्वारा भोजन दिया जाता था।

संस्कृति:

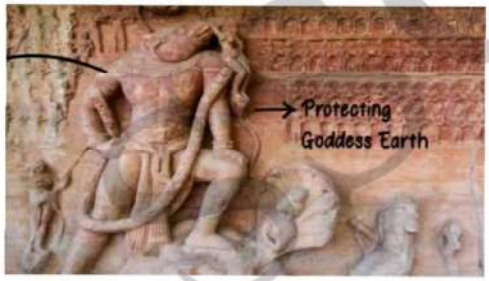

→ **वराह की मूर्ति** → महान सुअर
→ चन्द्रगुप्त II द्वारा निर्मित
→ विष्णु का अवतार
→ उदयगिरी, विदिशा, MP में

Dasavatara Temple, Jhansi, Uttar Pradesh

→ **दशावतार मंदिर**
↳ झांसी, UP

→ **भीतरगांव मंदिर** → कानपुर, UP
→ भगवान कृष्ण को समर्पित
→ ईंट का मंदिर (सबसे पुराने मंदिरों मे एक)

Bhitargaon Temple, Kanpur, Uttar Pradesh

गुप्तोत्तर काल

पुष्यभूति / वर्धन वंश :

संस्थापक - पुष्यभूति , थानेश्वर (हरियाणा)

पुत्र- प्रभाकरवर्धन
↓ पुत्र
राज्यवर्धन → (बहन) राज्यश्री → (पति) ग्रहवर्मा
ग्रहवर्मा ↑ कन्नौज शासन
ग्रहवर्मा ↓ देवगुप्ता द्वारा मारा गया, मालवा पर शासन
देवगुप्ता → गठबंधन किया → शशांक (उत्तरबंगाल के गौड़ राजा)
शशांक → मारा → राज्यवर्धन

प्रभाकरवर्धन { बड़ा पुत्र → राज्यवर्धन
छोटा → हर्षवर्धन

हर्षवर्धन 606-647 AD

राजधानी - कन्नौज

पराजित - ध्रुवसेन II (वल्लभी शासक, गुजरात)

यात्री आया - ह्वेनसांग (जुआंग- जांग) 1400वर्ष

आयोजित सभायें :

1. कन्नौज - ह्वेनसांग के सम्मान में
2. प्रयाग - हर 5 साल में आयोजित (गंगा, यमुना & सरस्वती के संगम पर)
   → कुम्भ की उत्पत्ति

शैव का उपासक
बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया।

3 पुस्तकें लिखी :

1. रत्नावली
2. नागानंदा
3. प्रियदर्शिका

जीवनी - हर्षचरित → दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा
→ कादम्बरी

यह पुलकेसिन II द्वारा द्वारा गया
→ चालुक्य शासक
→ नर्मदा नदी के तट पर

सकलोत्तरपथनाथ - चालुक्य शिलालेख में हर्षवर्धन को दी गई उपाधि
↓
उत्तर भारत की भूमि

PARMAR SSC

- सती प्रथा का पहला ज्ञात शिलालेखीय साक्ष्य भानुगुप्त का एरण स्तंभ शिलालेख है, जो 5वीं शताब्दी ई. का है। → MP

- गुप्तों के पतन का मुख्य कारण ⟶ हूणों का आक्रमण

वाकाटक राजवंश [250-500ई.]:

- सातवाहनों के सामंत
- गुप्त के समकालीन थे।
- ब्राह्मण धर्म का पालन किया लेकिन बौद्ध धर्म को भी संरक्षण दिया।
- भारत के मध्य और दक्षिणी भाग पर शासन किया।
- पुराणों में इनका उल्लेख इस प्रकार किया गया है-
- संस्थापक - विंध्यशक्ति
- अंतिम शासक - प्रभावतीगुप्त
- अजंता गुफाओं में चट्टानों को काटकर बनाए गए बौद्ध विहार और चैत्य का निर्माण वाकाटक राजा हरिषेण के संरक्षण में हुआ था।

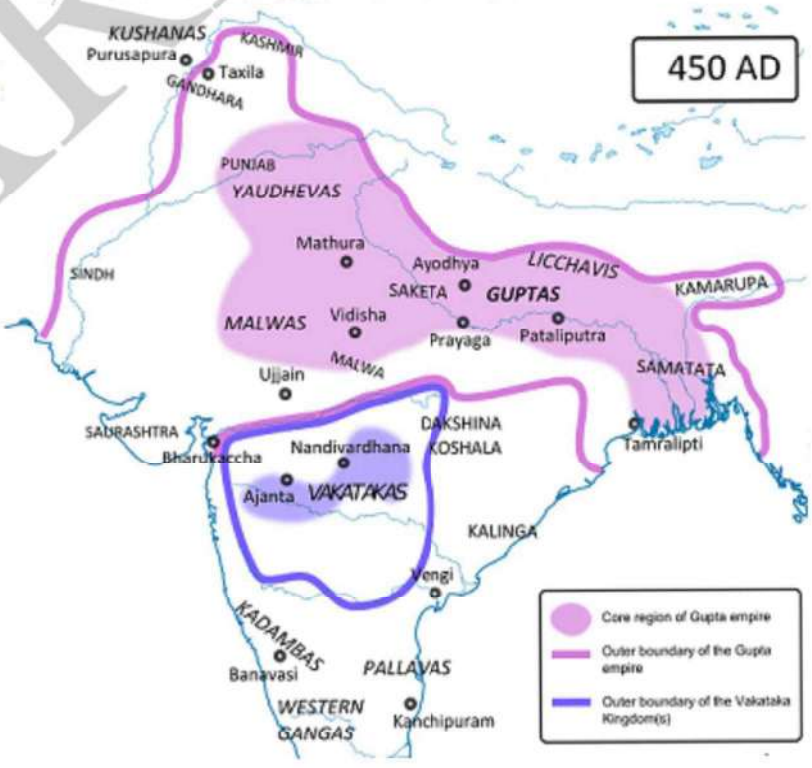

PARMAR SSC

चालुक्य वंश

चालुक्य:

3 विशिष्ट राजवंश :

1. बादामी चालुक्य
2. पश्चिमी चालुक्य
3. पूर्वी चालुक्य

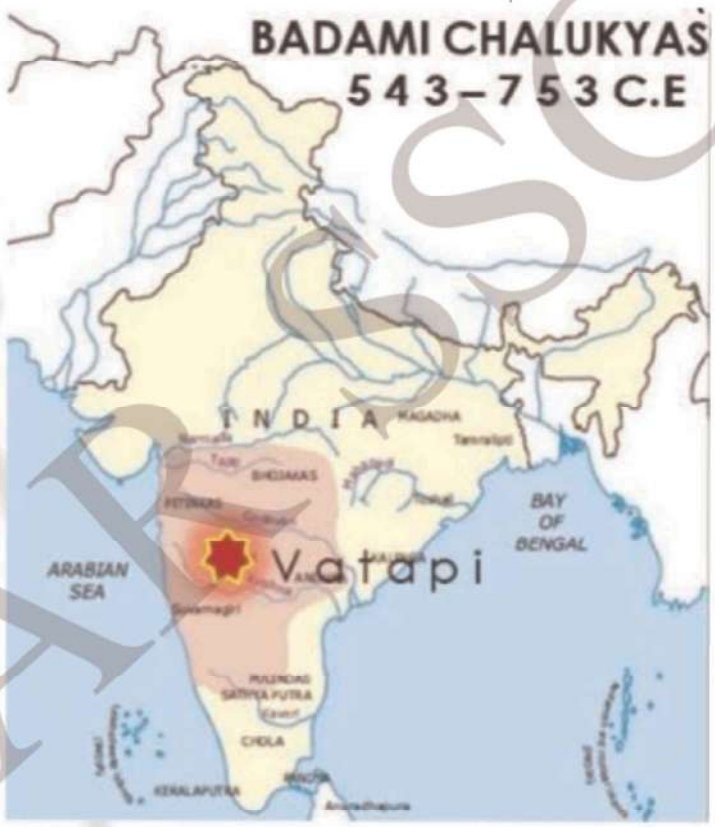

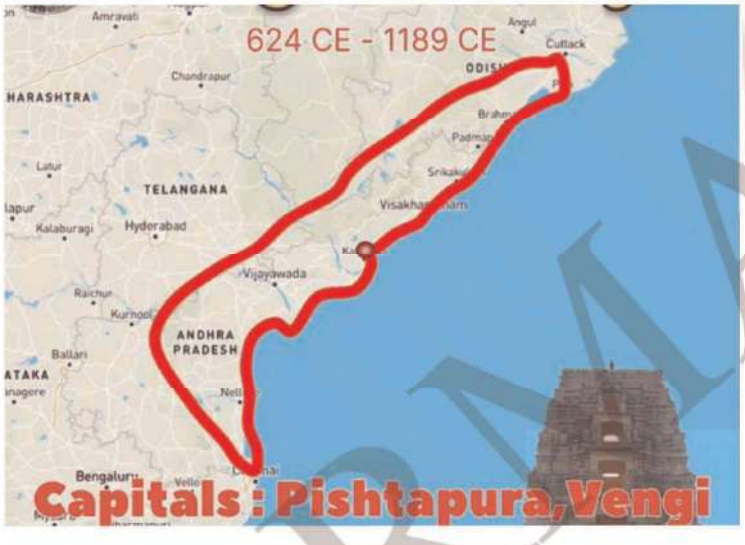

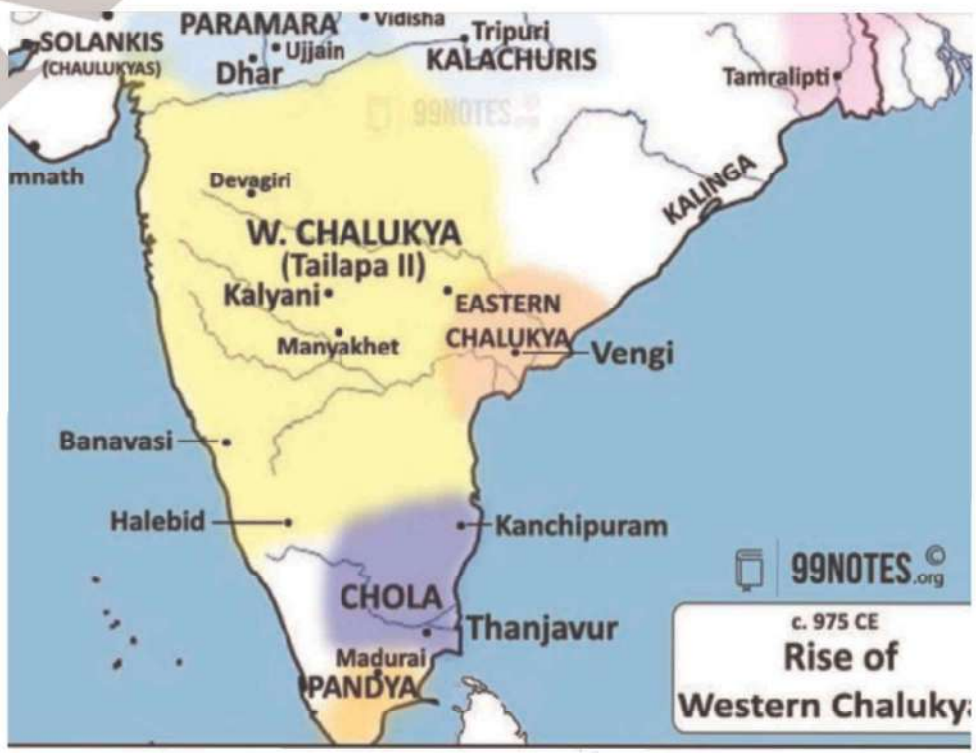

PARMAR SSC

बादामी चालुक्य :

पहला शासक - जयसिम्हा (संस्थापक)

राजधानी - वातापी

सबसे शक्तिशाली शासक - पुलकेसिन (543-566AD)

पुत्र - कीर्तिवर्मन (मारा गया)

मंगलेश (भाई) → पुत्र: पुलकेसिन II

मारा

पुलकेशिन II (610 - 642AD)

- अपने वंश मे सबसे महान
- हर्षवर्धन को हराया
- महेन्द्रवर्मन I (पल्लव शासक) को हराया।

नरसिंहवर्मन द्वारा पराजित किया गया

→ शीर्षक लिया - वातापीकोंडा (वातापी का विजेता)

विक्रमादित्य I → कीर्तिवर्मन II (परपोता) → पराजित: राष्ट्रकूट

ऐहोल स्तंभ लेख → पुलकेशिन II के बारे मे वर्णन

→ रचयिता - दरबारी कवि रविकृति

चालुक्य वास्तुकला :

शैली - वेसर शैली (नागर + द्रविड़ शैली)

उत्तर भारत दक्षिण भारत

PARMAR SSC

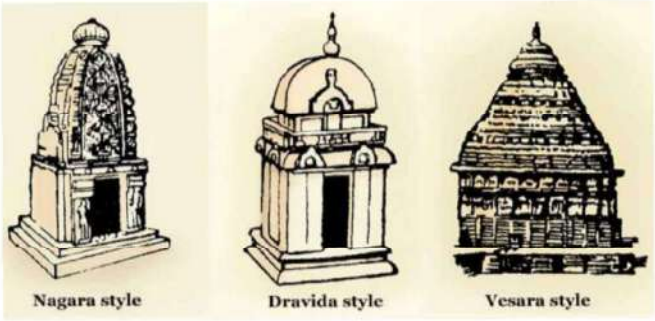

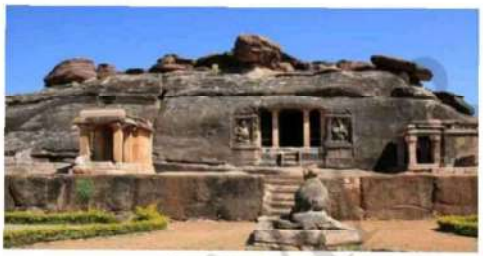

- रावड़ फाड़ी गुफा, ऐहोल
- लाढ खान मंदिर, ऐहोल
- दुर्गा मंदिर, अपसाइडल योजना पर निर्मित
- हुचिमल्लीगुडी मंदिर, ऐहोल मंदिर
- पत्तदकल मंदिर → यूनेस्को वैश्विक धरोहर स्थल

  (1987) कुल 10 मंदिर देखे गये

  4 नागर शैली | 6 द्रविड़ शैली
- विरुपाक्ष मंदिर (द्रविड़ शैली)

Ravana phadi caves, Aihole

Ladh khan temple, Aihole

Durga temple

Pattadakal temple

विरुपाक्ष मंदिर —(बनवाया)→ रानी लोकमहादेवी

↓ शिव

↓ लोकेश्वर महादेव मंदिर

→ विक्रमादित्य II ने जब पल्लवों को हराया तब निर्माण।

- संगमेश्वर मंदिर (द्रविड़ शैली)

Galaganatha Temple

PARMAR SSC

पल्लव:

→ संस्थापक - सिम्हाविष्णु

→ महानतम शासक - महेन्द्रवर्मन I

↓ पुत्र

नरसिम्हावर्मन → तातापीकोण्डा

↓ द्वारा

630 AD - 668 AD

पुलकेशिन II

पल्लव → कलाभ्र (Kalabhra) के सामंत

→ राजधानी - कांचीपुरम

शोर मंदिर, महाबलीपुरम

वास्तुकला :

शोर मंदिर, महाबलीपुरम

कैलाशनाथ मंदिर → नरसिम्हा वर्मन II → शोर मंदिर

सात रथ मंदिर → नरसिम्हा प्रथम → महाबलीपुरम में पूरे शहर का निर्माण करवाया।

(शिव)

राष्ट्रकूट (753-982 AD):

संस्थापक - दंतिदुर्ग

PARMAR SSC

दंतिदुर्ग
↓
पुत्र : कृष्णा I → (बनवाये) कैलाश मंदिर, एलोरा
- एक पत्थर से बने
- मोनोलिथिक पत्थर मंदिर

↓
अमोघवर्ष (814 - 878AD)
- जैन धर्म अपनाया
- राजधानी - मान्यखेत
- कविराजमार्ग पुस्तक
- प्रश्नोत्तर मलिका

↓
इंद्रा III ↔ प्रतिहारों को हराया

- अजंता और एलोरा (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) → हिन्दु, जैन & बौद्ध मंदिर
  ↓
  सातवाहन
  ↓
  राष्ट्रकूट

अजंता की गुफाएं

एलोरा की गुफाएं

PREMAR SSC

कृष्णा I ⟶ ध्रुव ⟶ गोविंद III

→ नालंदा विश्वविद्यालय: बिहार (ह्वेनसांग और अन्य तीर्थयात्रियों ने वहां अध्ययन करने में समय बिताया।

दशावतार मंदिर → विष्णु

होयसल राजवंश:

कल्याणी के चालुक्यों के सामंत (बाद के चालुक्य)

राजधानी - द्वारसमुद्रम (हालेबिदु)

संस्थापक - नृपकाम II

भूमिजा शैली में निर्मित {

सितारे के आकार का मंदिर → चेन्नाकेशव मंदिर → भगवान विष्णु; → विष्णुवर्धन द्वारा निर्मित

होयसलेश्वर मंदिर → 42 वां यूनेस्को विश्व विरासत साइट (बसाड़ी)

↳ भगवान शिव

PARMAR SSC

PARMAR SSC

मध्यकालीन भारत

700 - 1200 AD	1206 - 1526 AD	1526 - 1707 AD
प्रारम्भिक मध्यकाल	सल्तनत	मुगल
गुर्जर प्रतिहार	सल्तनत	मुगल
राजपूत	विजयनगर साम्राज्य	मराठा
पाल	बहमनी सल्तनत	दक्कनी सल्तनत
राष्ट्रकूट		यूरोपीय व्यापारी
चोल		

त्रिपक्षीय संघर्ष

→ कन्नौज त्रिभुज युद्ध के रूप में भी जाना जाता है जो 8 वीं & नौवीं शताब्दी के दौरान पाल, प्रतिहार & राष्ट्रकूट के बीच हुआ।

- गुर्जर प्रतिहार
- पाल
- राष्ट्रकूट

संस्थापक - नागभट्ट I

→ सातवाहनों ने ब्राह्मणों को भूमि दान देना शुरु किया।

पाल :

- संस्थापक - गोपाल → ओदंतपुरी का संस्थापक
- पुत्र - धर्मपाल → विक्रमशिला विश्वविद्यालय का संस्थापक
  - इन्द्रायुद्ध को हराया

ओदंतपुरी विश्वविद्यालय

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

PARMAR SSC

- बंगाल क्षेत्र पर शासन
- बौद्ध धर्म के अनुयायी
- गोपाल → धर्मपाल → देवपाल → महिपाल → रामपाल

गुर्जर प्रतिहार :

संस्थापक - नागभट्ट
राजधानी - कन्नौज /

→ नागभट्ट I

→ मिहिर भोज { अरब विद्वान सुलेमान ने अपने साम्राज्य को लुटेरों से सुरक्षित रखने के लिए गुर्जर-प्रतिहार राजा मिहिर भोज (836- 885 ई०) की प्रशंसा की थी। सुलेमान एक अरब यात्री था जो भोज के शासनकाल के दौरान भारत आया था और उसने भोज की सैन्य शक्ति, धन और कुशल प्रशासन का वर्णन किया था / }

→ महेन्द्रपाल : राजशेखर उनके दरबारी कवि थे।

चोल : (850 - 1280 AD)

संस्थापक : **विजयालय**

→ पल्लवों के सामंत
→ मुत्तरैयार से तंजौर/तंजावुर पर कब्जा किया।
→ देवी निशुम्भसुदिनी के लिये एक मंदिर का निर्माण किया।

परान्तक / परांतक I (873-955 AD) :

- वेल्लोर में पांड्या को हराया।
- राष्ट्रकूट शासक कृष्णा 3 से हारे। → तक्कोलम का युद्ध

↓

रामेश्वरम् {
- विजयी स्तम्भ बनवाया
- कृष्णेश्वर मंदिर बनवाया
}

PARMAR SSC

शासक:

राजराजा I (985- 1014 AD):

- महमूद गजनवी के समकालीन
- त्रिवेंद्रम में चेरों को हराया
- पांडवों को हराया और मदुरै पर विजय प्राप्त किया।
- श्रीलंका पर आक्रमण किया।

नागपट्टिनम में एक बौद्ध विहार का निर्माण कराया।

राजेन्द्र I (1012 AD - 1044 AD): दक्षिण भारत का नेपोलियन

- चेर और पांड्या को पूरी तरह से परास्त किया।
- श्रीलंका पर सम्पूर्ण विजय।
- गंगा पार कर बंगाल के दो स्थानीय राजाओं को हराया।
- उपाधि - गंगैकोंडाचोल
- एक नया शहर गंगैकोण्डचोलपुरम बसाया
- श्रीविजया साम्राज्य और सैलेंद्री (शैलेन्द्र) राजवंश के खिलाफ नौसैनिक अभियान चलाया।

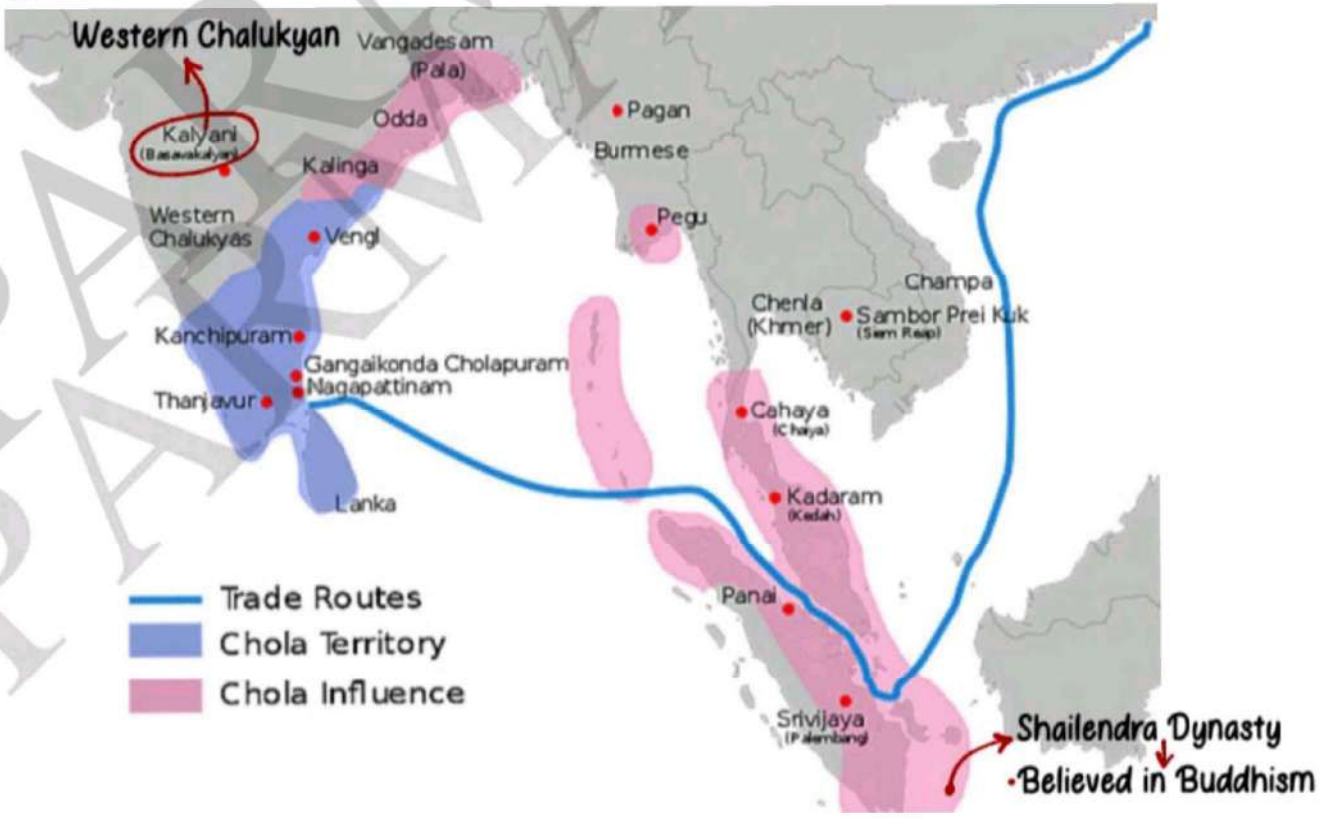

PARMAR SSC

→ चोलों ने कल्याणी के चालुक्यों के खिलाफ लड़ा।

→ 13 वीं शताब्दी के आरंभ में चोल साम्राज्य का पतन हो गया, चोलों का स्थान पांड्यों और होयसलों ने ले लिया, परवर्ती चालुक्यों का स्थान यादवों और काकतीय लोगों ने ले लिया।

यादव → राजधानी - देवगिरी

काकतीय → राजधानी - वारंगल

होयसल → राजधानी - हलेबिडु
सितार के आकार के मंदिर के लिये प्रसिद्ध

→ राजा के पास सारे अधिकार थे

→ सलाह देने के लिये मंत्रिपरिषद

→ चोल साम्राज्य निम्न में विभाजित था
↓
मंडलम (प्रांत)
↓ आगे विभाजित
वालानाडु / नाडु

चोल सरकार :

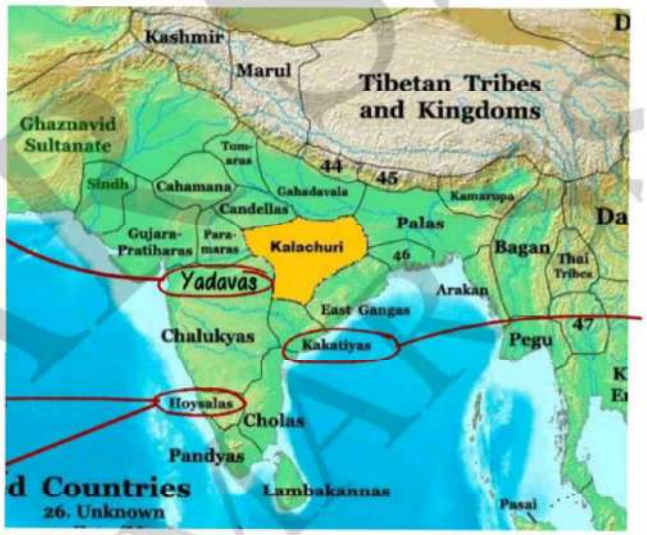

→ चोल स्थानीय / ग्राम सरकार के लिये जाने जाते थे।
↳ विकेंद्रीकृत

2 सभायें :
- उर - आम लोगों की सभा
- सभा - विद्वान ब्राह्मणों की सभा
  ↳ अग्रहार - ब्राह्मणों की भूमि

→ गांव के मामलों का प्रबंधन एक कार्यकारी समिति द्वारा किया जाता था।
↓ चुनाव
संपत्ती वाले लोग या भूमि का विशेषाधिकार वाले लोग ही चुनाव में भाग
↳ इसका प्रत्येक सदस्य 3 साल के लिये नियुक्त

चोल काल मे भूमि दान:

1. ब्रह्मदेय → ब्राह्मणों को दान दी गई भूमि
2. वेल्लनवगी → गैर-ब्राह्मणों को " " "
3. देवदान → मंदिरों को " " "
4. पल्लीछंदम → जैन समुदाय " " "
5. शालभोग → स्कूलों के रखरखाव के लिये।

वेल्लार- धनी जमींदार

चोल साम्राज्य के दौरान कर:

2 प्रकार
- वेट्टी - बंधुआ मजदूरी, जबरन मजदूरी
- कदमई - भू-राजस्व

महान जीवंत चोल मंदिर → सभी यूनेस्को विरासत में सूचीबद्ध

- **बृहदेश्वर मंदिर**
  - तंजौर मे
    राजराजेश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता
    निर्माण- राजाराजा I
  - गंगैकोंडचोलापुरम
    राजेंद्र I द्वारा निर्मित
- **ऐरावतेश्वर मंदिर**
  - राजराजा II द्वारा निर्मित

मंदिर वास्तुकला:

उत्तर भारत	दक्षिण भारत
नागर शैली	द्रविड़ शैली
वक्राकार	पिरामिड आकार के
गर्भगृह- मूर्ति रखने का स्थान	मंडपम- हॉल, घंटी लगी होती
मंडपम- हॉल, घंटी लगी होती	गोपुरम- मुख्य प्रवेश द्वार

PARMAR SSC

Temple Architecture

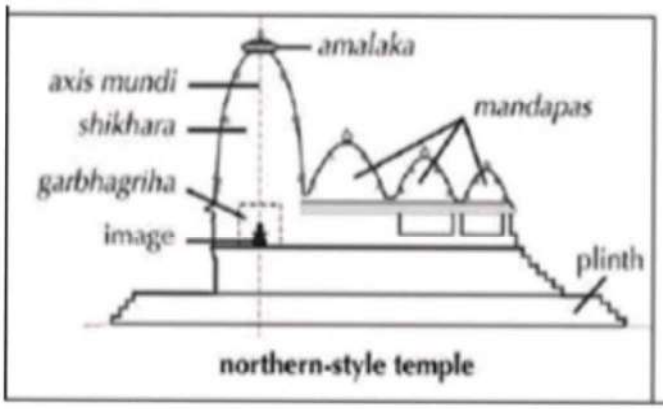

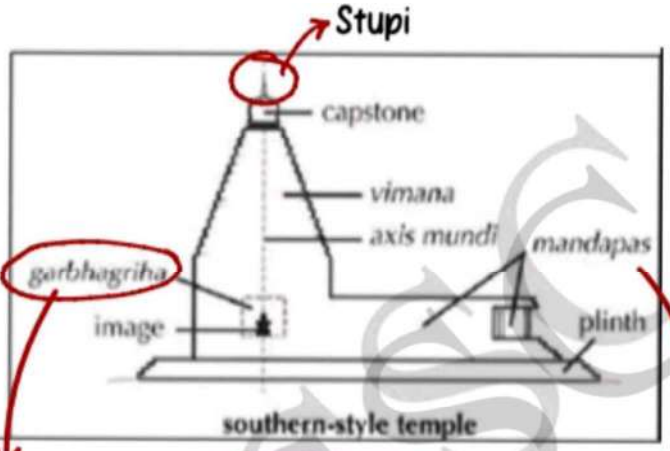

Nagara style

Dravida style

- Chief deity installed here
- Also known as Sanctum

Main entry/ hall where bell is placed

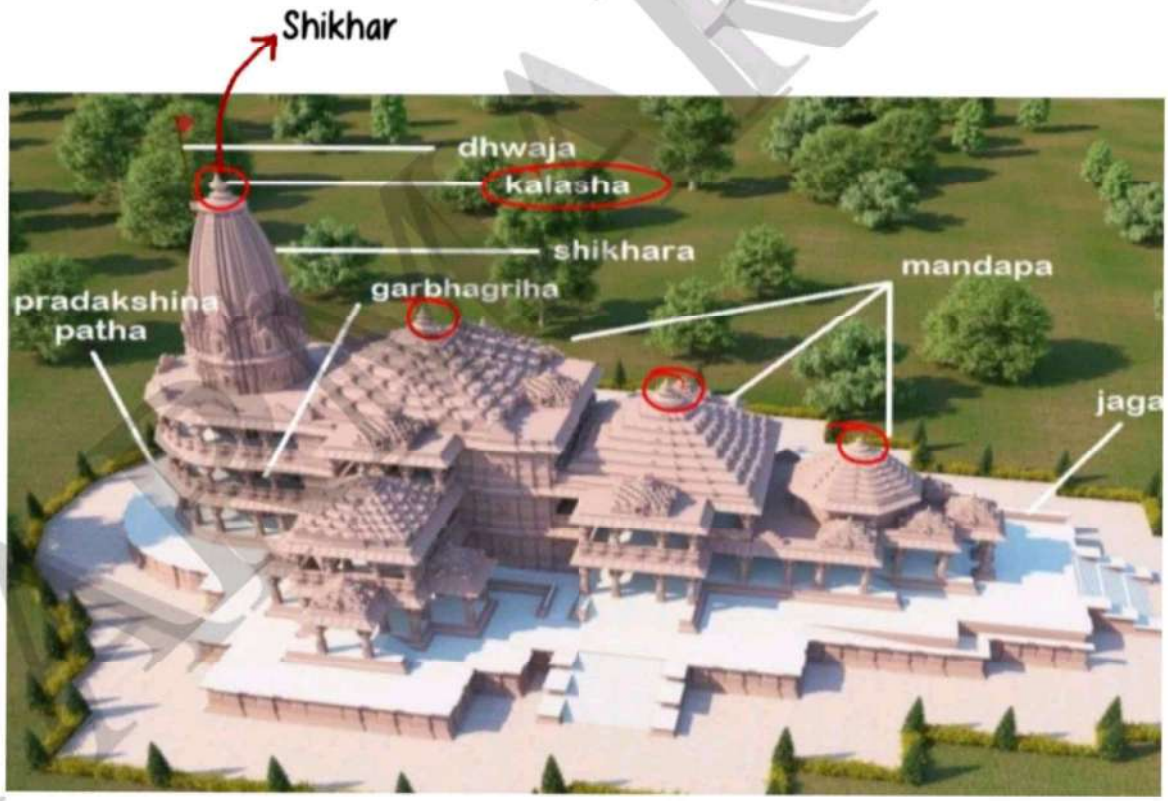

North Indian Style Temple

- Some North Indian style follows Panchayatan style

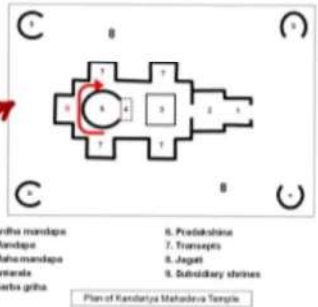

→ तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर - कैपस्टोन का वजन - 90टन

Brihadeshwara Temple at Tanjore

→ गंगईकोंडचोलपुरम का शिव मंदिर

↳ दक्षिण भारत में नंदी की बाहर रखा जाता है।

Shiva Temple at Gangaikondacholapuram

→ कुंभकोणम् का ऐरावतेश्वर मंदिर

Airavateshwara Temple at Kumbakonam

→ मध्यप्रदेश में कंदरिया महादेव मंदिर

↳ चंदेल शासकों द्वारा निर्मित

Kandariya Mahadeva Temple at Madhya Pradesh

→ हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर, कर्नाटक

↳ चालुक्य वंश द्वारा निर्मित

↳ वेसर शैली में

Virupaksha Temple at Hampi, Karnataka

→ शिव की नृत्य करती आकृति :

↳ नटराज, तांडव करते हुये

↳ कांस्य निर्मित, लॉस्ट वैक्स तकनीक से निर्मित

→ नागर श्रेष्ठी पद → नगर के व्यापारी (मुख्य बैंकर)

→ भिल्लस्वामिन (MP), चोल राजवंश के दौरान एक मंदिर शहर के रूप में विकसित।

→ दक्षिण & उत्तर के क्षेत्र में जो चोल साम्राज्य का हिस्सा बने - पांड्या & पल्लव

PARMAR SSC

उत्तरमेरुर शिलालेख :

तमिलनाडु

- 11 वीं शताब्दी के आरंभ में चोल राजा राजेंद्र प्रथम ने एक शिव मंदिर का निर्माण कराया और चालुक्यों से जब्त किये गये सूर्य तिलक आसन से भर दिया।
- चालुक्यों से एक सूर्य आसन, एक गणेश प्रतिमा और एक दुर्गा माँ की कई प्रतिमाएँ, पूर्वी चालुक्यों से एक नंदी प्रतिमा, उड़ीसा के कलिंग से भैरव (शिव का एक रूप) और भैरवी की एक प्रतिमा, और बंगाल के पालों से एक काली माँ की प्रतिमा से मंदिर को भर दिया।

वृहदेश्वर मंदिर

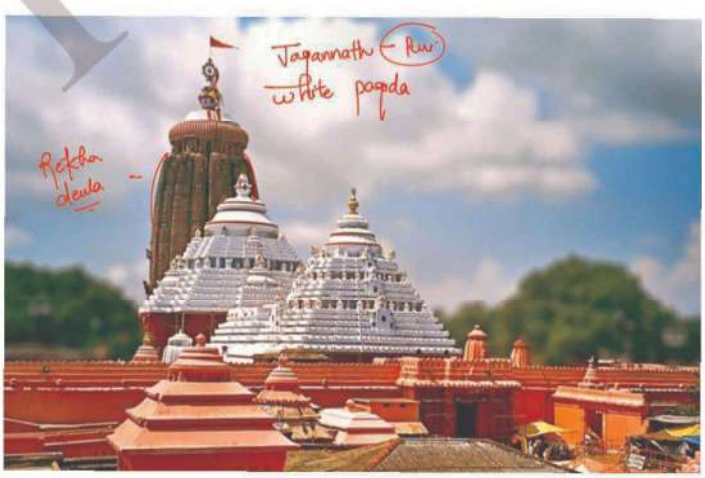

PARMAR SSC

PARMAR SSC

दिल्ली सल्तनत

(1206 - 1526 AD)

विदेशी आक्रमण:

- पहला मुस्लिम आक्रमणकारी - मोहम्मद बिन कासिम (712 AD)
  - सिंध भाग पर
  - राजा दाहिर की हत्या
  - अरब से आया था
- प्रथम तुर्की आक्रमण: महमूद गजनवी का आक्रमण (998 - 1030 AD)
  - देश - तुर्कमेनिस्तान
  - मृत्यु - 1030 AD (मलेरिया)
  - 17 बार आक्रमण किया
  - कारण - बदला और लूट
    - अपने पिता (सुबुक्तगीन) की मृत्यु का

गजनवी साम्राज्य

- इससे पहले शासन किया - जयपाल ने
  - गजनवी के खिलाफ पेशावर की लड़ाई (1001 ई०)

- गजनवी का सोमनाथ पर आक्रमण:
  - 16 वीं बार → मंदिर (1025 AD)
  - 17 वीं बार → अंतिम आक्रमण (1027 AD)

वैहिंद का युद्ध: गजनवी और हिंदू शाही शासकों के बीच संघर्षों की एक श्रृंखला

1013 ईस्वी में महमूद गज़नी और आनंदपाल के बीच लड़ी गई थी. यह लड़ाई पेशावर के
पास हुई थी. इस युद्ध में महमूद गज़नी ने आनंदपाल को हराया था.
आनंदपाल, हिन्दूशाही वंश के राजा थे और उनका
शासन 1001 ईस्वी से 1010
ईस्वी तक रहा था. आनंदपाल के राज्य का ज़्यादातर
हिस्सा सुबुक्तगीन और उसके
बेटे महमूद ने जीत लिया था. इस युद्ध में आनंदपाल का साथ सांभर के
चौहान राजपूतों ने दिया था

PARMAR SSC

गजनवी के समय के लेखक :

- फिरदौसी → लिखा → शाहनामा
- अल-बरूनी → तहकीक मा ली-ए-हिन्द (अन्य नाम - किताब - अल-हिन्द)

→ दूसरा तुर्की आक्रमण : मोहम्मद गौरी का आक्रमण (1175 - 1206 AD)

↳ मुइजुद्दीन मोहम्मद / मुहम्मद

अन्यनाम

पहला आक्रमण - मुल्तान पर, 1175 ई०

1178 → गुजरात पर

↳ भीम II से हार (पत्नि - नायकादेवी)

PARMAR SSC

→ संयोगिता का विवाह पृथ्वीराज चौहान से हुआ।

- बिजोलिया अभिलेख → सांभर व अजमेर के चौहान वंश की जानकारी मिलती है।

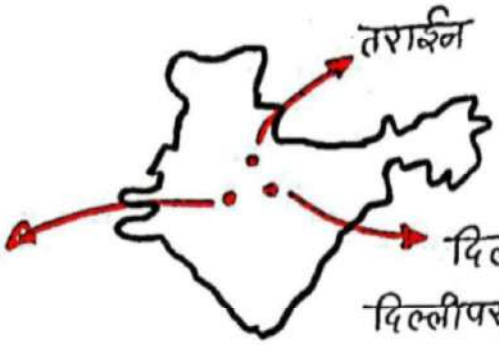

परवाल
↓
जयचंद
↓
पुत्री- संयोगिता

दिल्लीपर तब पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वी राज चौहान) का शासन था

पृथ्वीराज & गौरी के मध्य युद्ध:

- तराईन का प्रथम युद्ध → 1191 AD → पृथ्वीराज विजयी
- तराइन का दूसरा युद्ध → 1192 AD → गौरी विजयी

पृथ्वीराज राज चौहान के दरबारी लेखक:

चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो
↳ इसके अनुसार गौरी ने 17 बार आक्रमण किया।

→ गौरी ने पुनः भारत पर आक्रमण किया।

- चंदावर का युद्ध (1194 ई०) → गौरी Vs जयचंद
  ↳ विजयी

- गुलाम वंश → 1206-90 AD
- खिलजी वंश → 1290-1320 AD
- तुगलक वंश → 1320-1414 AD
- सैय्यद वंश → 1414-1451 AD
- लोधी वंश → 1451-1526 AD

→ कुतुबुद्दीन ऐबक (गौरी का कमांडर), तराइन मे गौरी की मदद की

→ गौरी के अन्य गुलाम:
यल्दौज, कुबाचा,
बख्तियार खिलजी
↳ नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वंस किया।

PARMAR SSC

गुलामवंश (1206 - 1290 AD) :

इसे मामलुक राजवंश के नाम से भी जाना जाता। शासक → इल्बारी जनजाति से संबंधित

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 AD) :

- इन्होंने लाहौर (राजधानी) पर शासन किया।
- उपाधि- लाख बख्श (लाखों का दाता)
- 1210 ई० में चौगान या पोलो खेलते समय मृत्यु
- 2 (दो) मस्जिदों का निर्माण करवाया- (12 वीं सदी में निर्मित)
  - कुवत-उल-इस्लाम (दिल्ली)
  - अढाई दिन का झोपड़ा (अजमेर)
    - पहले यह जैन मठ था
- ऐबक ने प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन भक्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण भी शुरु किया।
- उन्होंने हसन-उन-निजामी (ताज-उल-मासिर के लेखक) और फखरुद्दीन जैसे लेखकों को संरक्षण दिया।
- कुतुबमीनार : 5 मंजिला, 73 m ऊँची

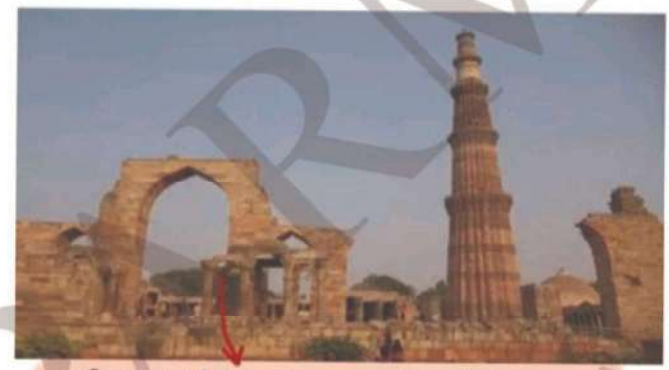

Quwat-ul-Islam next to Qutub Minar

Built in: 12th Century

Made of Corbeled Technique

PARMAR SSC

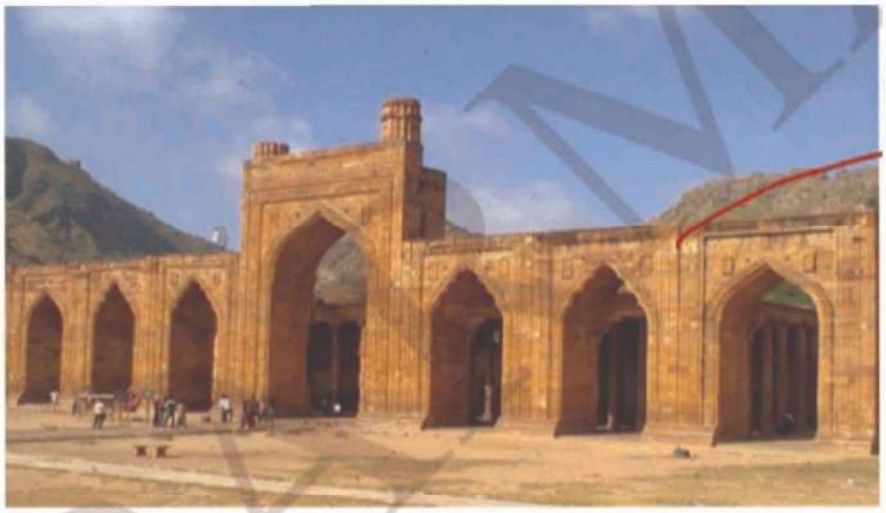

Adhai din ka Jhopra at Ajmer

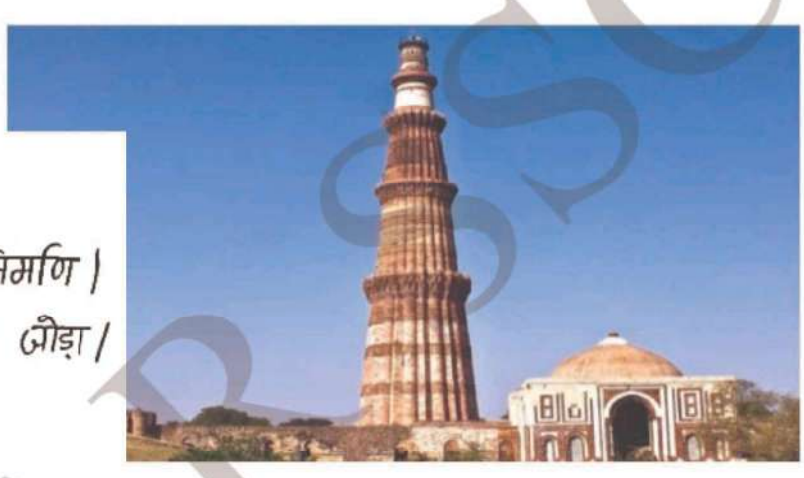

कुतुब मीनार का निर्माण :

- कुतुबुद्दीन ऐबक → पहली मंजिल का निर्माण।
- इल्तुतमिश → तीन और मंजिलो को जोड़ा।
- फिरोजशाह तुगलक → 5 वीं मंजिल।

शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211-1236AD):

- कुतुबुद्दीन का दामाद , आरामशाह की हत्या की।
- उसने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को राजधानी बनाया।
- उसने दिल्ली सल्तनत को चंगेजखान के कोप से बचाया।
  - ↳ मृत्यु- 1227AD
- निजाम उल मुल्क उनके वजीर (प्रधानमंत्री) थे।
- उन्होंने चांदी का सिक्का (टंका) और तांबे का सिक्का (जीतल) चलाया।
- इक्ता प्रणाली की शुरुवात की
  - ↳ भूमि का टुकड़ा

- उन्होंने दासों का आधिकारिक कुलीन वर्ग स्थापित किया जिसे चहलगानी चालीसा (40 का समूह) के नाम से जाना जाता है।

चंगेज खान → 1219 ई० में ट्रांसऑक्सियाना पर हमला।

PARMAR SSC

रजिया सुल्तान (1236-1240 AD):

- इल्तुतमिश की पुत्री
- भारत पर शासन करने वाली प्रथम महिला और एकमात्र मुस्लिम महिला।
- भटिंडा के गवर्नर अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया, रजिया ने याकूत के साथ मिलकर अल्तुनिया के खिलाफ चढाई की।
- अल्तुनिया ने याकूत की हत्या करवाकर रजिया को कैद करवा लिया।
- बाद में अल्तुनिया और रजिया का विवाह हो गया।
- 1240 ई० में रजिया एक षडयंत्र का शिकार हो गई और कैथल (हरियाणा) के पास उसकी हत्या कर दी गई।
  - ↳ खोखर जनजाति द्वारा
- उसने संरक्षण दिया- मिन्हाज-अल-सिराज (लिखा) → तबकात-ए-नासिरी

गियासुद्दीन बलबन (1266-1287 ई०):

- यह नासीरुद्दीन महमूद के अधीन नायब था।
- उसने चहलगानी चालीसा की शक्ति को तोड़ा और ताज की प्रतिष्ठा को बहाल किया।
- उसने सैन्य विभाग 'दीवान-ए-अर्ज' की स्थापना की।
- उपाधि- जिल-ए-इलाही (अल्लाह की छाया) → अफरासियाब के वंशज
- उन्होंने सिजदा (राजा के समक्ष झुकना) और पैबोस (राजा के पैर चूमना) को अभिवादन के सामान्य रूप में पेश किया।
- उसने लौह एवं रक्त की नीति शुरू की।

अंतिम शासक: कैकुबाद → गुलाम वंश का अंतिम शासक

- सुल्तान महमूद अफगानिस्तान के शहर गजनी से भारत आया था।
- चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों ने उत्तर-पूर्वी ईरान में ट्रांसऑक्सियाना पर 1213 में आक्रमण किया।

PARMAR SSC

दरबारी भाषा → फारसी

- बलबन का वास्तविक नाम → उलूग खाँ
- सुल्तान बलबन के अधीन बंगाल के गवर्नर तुगरिल बेग ने बलबन के खिलाफ विद्रोह कर दिया और 1279 में खुद को बंगाल का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया।

वजीर - PM (वित्त विभाग)
आमिल - राजस्व वसूल करता था।
अमीर - परगना का राज्यपाल
नायब - वित्त को छोड़कर अन्य सभी विभागों का प्रभारी
मुक्ति/वली/इक्तेदार - वे इक्ता रखते थे।

PARMAR SSC

खिलजी वंश :

जलालुद्दीन खिलजी (1290-1296 AD):

भतीजा

खिलजी वंश का संस्थापक

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई०):

पदमावत: मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित

अलाउद्दीन का साम्राज्य :

- गुजरात (1298)
- रणथंभौर (1301) → हम्मीर देव चौहान (सबसे पहले जौहर किया गया) ↑ अमीर खुसरो द्वारा जिक्र
- मेवाड़ (1303) → राणा रतन सिंह, राजधानी- चित्तौड़
- मालवा (1305)
- जालौर (1311)

→ दक्कन में अलाउद्दीन की सेना का नेतृत्व मलिक काफूर ने किया। (→ एक किन्नर)

दक्कन अभियान के बाद 'सिकंदर ए-सानी' की उपाधी ली।

द्वितीय अलेक्जेंडर / सिकंदर द्वितीय

वास्तविक नाम- अलीगुर्शप

अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के बाजार से 1000 दीनार में खरीदा था इसलिये काफूर को हजार दीनारी कहा जाता है।

उसने हराया:

- राम चन्द्र (देवगिरि के यादव शासक)
- प्रताप रुद्रदेव (वारंगल के काकतीय शासक)
- वीर वल्लाल III (द्वारसमुद्र के होयसल शासक)
- वीर पांड्या(मदुरै के पांड्या शासक)

प्रशासनिक सुधार:

→ प्रस्तुत किया: दाग (घोड़े पर दाग लगाना) और चेहरा (सैनिकों की वर्णनात्मक सूची)

दाग ↓ छप्पा; चेहरा ↓ हुलिआ

→ भारी कर लगाये गये: सभी भूमि को मापने का आदेश दिया गया और फिर राज्य का हिस्सा तय किया गया।

विशेष अधिकारी द्वारा- मुस्तखराज (राजस्व एकत्र किया)

PARMAR SSC

3 कर: कृषकों द्वारा दिये जाने वाले कर का प्रकार

- जजिया → गैर मुसलमानों पर कर
- घरई → घर कर
- चरई → पशुओं के चरने वाले घास के मैदानों पर कर

→ जकात कर: धनी मुसलमानों पर

→ जजिया कर सबसे पहले मोहम्मद बिन कासिम द्वारा लगाया गया।

→ अलाउद्दीन ने 3 बाजार स्थापित किये → खाद्यान्न के लिये
→ मंहगे कपड़े & घोड़ो के लिये
→ दासों और मवेशियों के लिये

→ प्रत्येक बाजार का नियंत्रण- शाहना (उच्च अधिकारी द्वारा)
↓
व्यापारियों और दुकानदारों का रजिस्टर बनाये रखें & कीमतों का हिसाब रखें।

→ दो अधिकारियों द्वारा बाजार की जांच → दीवान-ए-रियासत & शन्ना-ए-मंडी

→ बिक्री बिक्री के लिये सभी सामान खुले बाजार में लाये जाते थे- सारा-ए-अदल

→ निर्माण: अलाई किला, अलाई दरवाजा (कुतुबमीनार का प्रवेश द्वार), हजार स्तम्भ का महल (हजार सुतुन), हौज खास (टैंक)

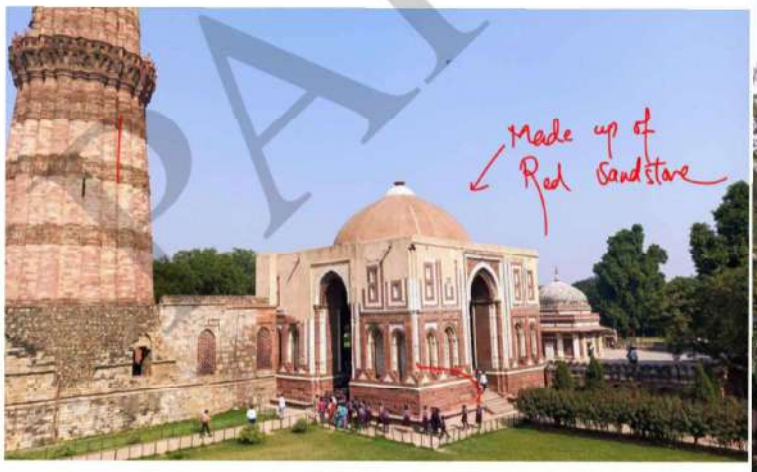

Alai Darwaza

BARMAR SSC

→ स्थापना: दिल्ली का दूसरा शहर - सीरी
↳ 7 शहरों से निर्मित - पहला: किला राय पिथौरा, तोमर राजवंश द्वारा

→ अलाउद्दीन का मकबरा - दिल्ली

→ संरक्षक - कला और शिक्षा

→ दरबारी कवि - अमीर खुसरो
उपाधि ↳ तूती-ए-हिन्द (भारत के तोता)
भारत में कव्वाली की शुरुवात
खिलजी को 'सुल्तान-ए-जहाँ' की उपाधि दी।

पुस्तक { तुगलकनामा
नूह-सिपेहर

→ 1316 ई० मलिक काफूर ने अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद गद्दी पर कब्जा कर लिया।

→ मुबारक खान : (1316-1320 ई०)

→ खुसरो खान : 1320 ई०

ग्यासुद्दीन तुगलक (1320-1325 ई०)

↳ खिलजी वंश के अंतिम शासक खुसरो खान की हत्या गाजी मलिक (उपाधि ली - ग्यासुद्दीन तुगलक) ने की।

→ एक दुर्घटना में मृत्यु के बाद उनके बेटे जौना (उलुग खान) ने गद्दी संभाली
↓
उपाधि ग्रहण की - मोहम्मद बिन तुगलक

उन्होंने तुगलकाबाद शहर का निर्माण किया
और तुगलकाबाद किला भी बनवाया।

मोहम्मद बिन तुगलक : 1325-51 ई०

→ समकालीन यात्री - इब्न बतूता → मोरक्को से आया
↳ पुस्तक - रिहला

PARMAR SSC

→ उसके शासनकाल के दौरान लेखक- जियाउद्दीन बरनी
(लिखी)

तारीख-ए-फिरोजशाही &
फतवा-ए-जहांदारी

मुहम्मद बिन तुगलक ने विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया, जिनमें शामिल हैं:
अजीज खुम्मार- एक शराब निर्माता
फिरोज हज्जाम- एक नाई
मनका तब्बरख- एक रसोईया
लादा & पीरा- दो माली

- सोंधर ऋण
- तकावी ऋण

} कृषि विभाग → दिवान-ए-कोही

- जहानपना शहर का निर्माण किया।

→ इसे 'सबसे बुद्धिमान मूर्ख' के नाम से भी जाना जाता है।
→ दोआब में कराधान (1326)
→ राजधानी स्थानांतरित (1327) → दिल्ली से दौलताबाद → देवगिरी
→ सबसे बड़ा साम्राज्य था।
→ उन्होंने खुरासान अभियान (1329) का प्रस्ताव रखा।
→ कराचिल अभियान - 1330
→ टोकन मुद्रा चलाई (1329): उच्च मूल्य वाली कांस्य मुद्रा

फिरोजशाह तुगलक (1351-1388 ई०):

→ सैनिकों को नकद भुगतान नहीं किया जाता था, बल्कि उन्हें भूमि राजस्व के

PARMAR SSC

→ आधार पर भुगतान किया जाता था - वजेदा

→ उनके समय में जजिया एक अलग कर बन गया।

→ कुरान में लगाये गये 4 प्रकार के करों का उल्लेख है-

- खराज → भूमि कर, उपज का 1/10 भाग
- जकात → संपत्ति पर 2.½ कर
- जजिया → गैर मुसलमानों पर लगाया गया कर
- खम्स → युद्ध के दौरान प्राप्त लूट का 1/5 भाग

→ कई नहरों की मरम्मत की गई और हक-ए-शर्ब + हासिल-ए-शर्ब (जल कर) लगाया गया।

→ स्थापना: फतेहाबाद, हिसार, जौनपुर, फिरोजाबाद
↳ मोहम्मद बिन तुगलक के नाम पर- जौना

→ दिल्ली में एक अस्पताल की स्थापना - दर-उल-शिफा

→ नया विभाग : दीवान-ए-खैरात गरीब लड़कियों की शादी के लिये।

→ उनके प्रधानमंत्री- खान-ए-जहाँ मकबुल

→ इकता व्यवस्था को वंशानुगत कर दिया गया।
(इक्ता)

वह भारत के पहले सुल्तान थे जिन्होंने हिंदू धार्मिक ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद का कार्य शुरू किया।

→ तैमूर का आक्रमण : 1398
↳ मंगोल था
↳ अंतिम तुगलक शासक मुहम्मद शाह तुगलक के दौरान

सैय्यद वंश :

- खिज्र खान → 1414-21
- मुबारक शाह → 1421-34
- मुहम्मद शाह → 1434-43
- आलमशाह → 1443-1451

PARMAR SSC

→ 1398 में दिल्ली की सेना को हराने के बाद तैमूर ने खिज्र खान को मुल्तान का शासक नियुक्त किया। खिज्र खान ने सुल्तान दौलत खान को हराकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया और सैय्यद वंश की स्थापना की।

→ तारिख-ए- मुबारक शाही में याहा बिन सरहिन्दी बताते हैं कि सैय्यद पैगंबर मुहम्मद के वंशज थे।

लोदी वंश : (1489-1526 AD)

संस्थापक: बहलोल लोदी (1451-1488 ई०)

सिकंदर लोदी (1489-1517):

→ राजधानी: दिल्ली से आगरा स्थापित की गई।
↳ सिकंदर लोदी द्वारा स्थापना

→ खेतों की माप के लिये 32 अंको का 'गज-ए- सिकंदरी' (सिकंदर का गाई) शुरु किया गया।

→ वह एक कवि भी था और 'गुलरुखी' उपनाम से फारसी में कवितायें लिखी।

→ मोठ की मस्जिद बनाने का आदेश दिया।

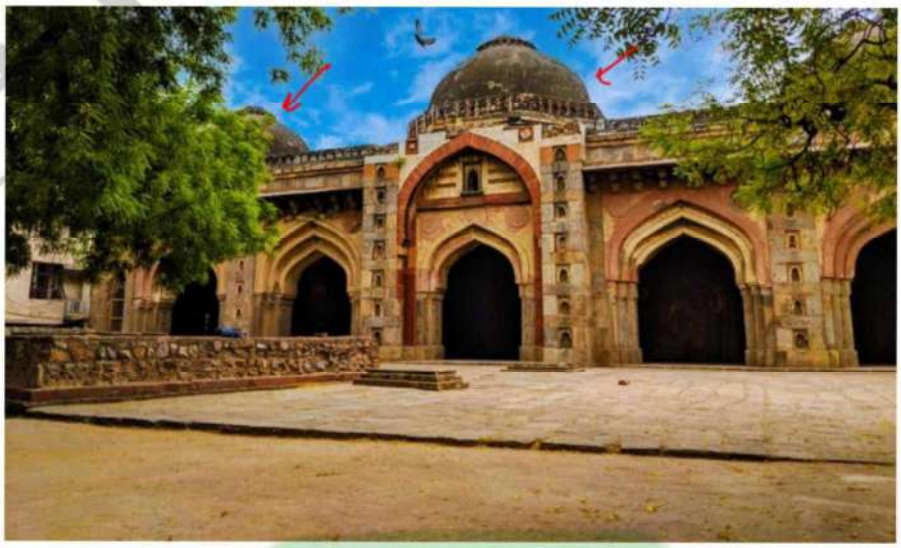

Moth Ki Masjid
(Double Dome)

PARMAR SSC

इब्राहिम लोदी (1517-1526):

- बाबर के साथ पानीपत की लड़ाई लड़ी (1526 ई०)
  - दौलत खान → बाबर

केन्द्रीय प्रशासन:

- दीवान-ए-विजारत → वित्त विभाग
- दीवान-ए-अर्ज → सैन्य विभाग → बलबन
- दीवान-ए-इंशा → पत्राचार विभाग
- दीवान-ए-रिसालत → अपील विभाग
- दीवान-ए-मुश्तखराज → बकाया विभाग → अलाउद्दीन खिलजी
- दीवान-ए-रियासत → वाणिज्य विभाग
- दीवान-ए-कोही → कृषि विभाग → मोहम्मद बिन तुगलक
- दीवान-ए-बंदगान → दासों का विभाग
- दीवान-ए-खैरात → दान विभाग
- दीवान-ए-इस्तियाग → पेंशन विभाग

पुस्तकें

- तारिख-ए-मुबारक शाही → बिन अहमद सरहिन्दी → फारसी में
- तबकात-ए-नासिरी → मिन्हाज-उस-सिराज
- तहकीक-ए-हिंद → अल-बरूनी

PRIMARY SSC

विजयनगर साम्राज्य

विजयनगर साम्राज्य (1336-1565 ई०):

↳ अर्थ- विजय का शहर

- हम्पी के खंडहरों को 1810 में एक इंजीनियर और पुरातत्वविद् द्वारा प्रकाश में लाया गया था।
  ↳ कॉलिन मैकेंजी
- इसे हम्पी के नाम से भी जाना जाता है यह नाम स्थानीय मातृ देवी के नाम पर पड़ा।
  ↳ पम्पादेवी
  ↓
  पम्पाहम्पी

हम्पी ⟶ विजयनगर की राजधानी

हम्पी → तुंगभद्रा नदी के किनारे

↳ 1986, UNESCO विश्व विरासत स्थल

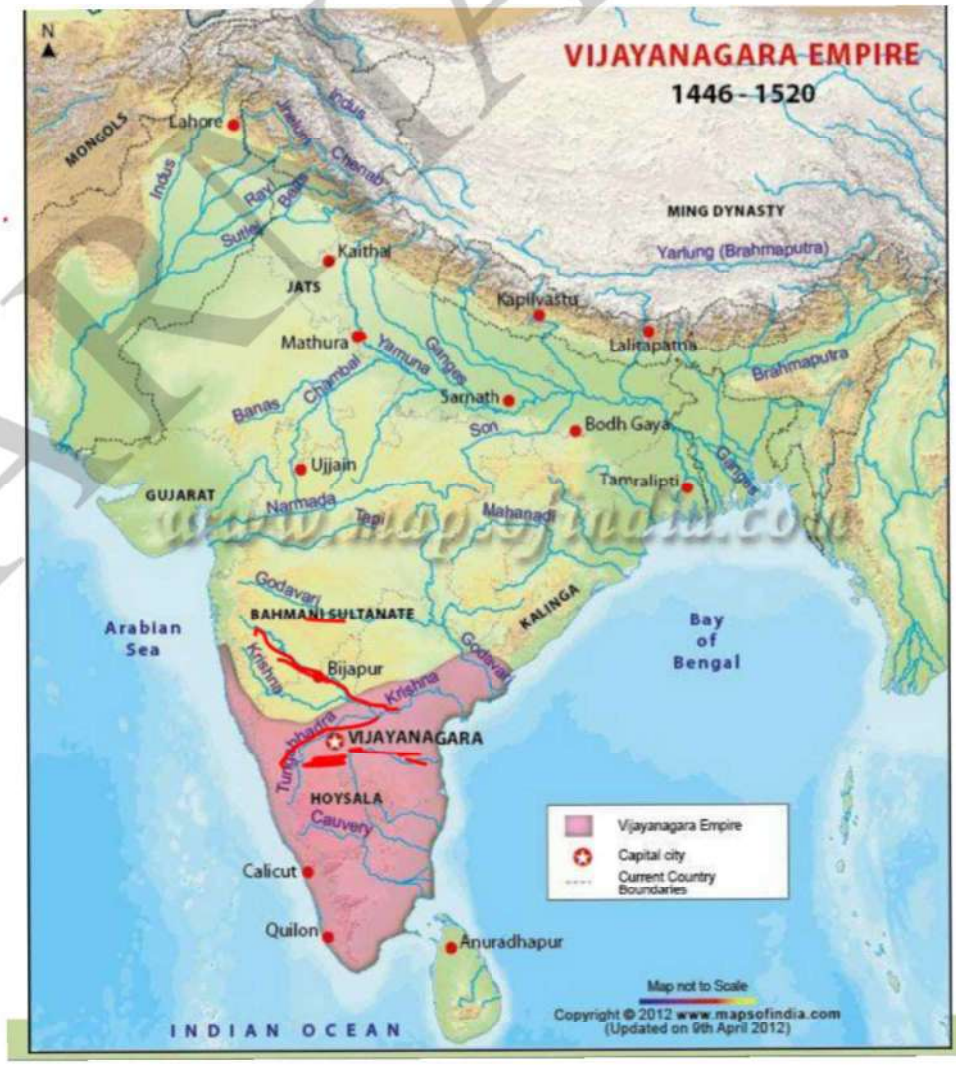

PARIHAR SSC

- विचारक इस साम्राज्य का वर्णन करते हैं - कर्नाटक साम्राज्यमु
- व्यापारियों के स्थानीय समुदाय को कुदिराई चेट्टी के नाम से जाना जाता था।
- अपनी उत्तरी सीमा पर उन्होंने समकालीन शासकों के साथ प्रतिस्पर्धा की, जिनमें शामिल थे → दक्कन के सुल्तान और उड़ीसा के गजपति शासक

दक्कन के सुल्तान → तुलाया जाता → अश्वपति

विजयनगर → नरपति

राजवंश		समय		संस्थापक
संगम	→	1336-1485 AD	→	हरिहर & बुक्का
सुलुव	→	1485-1505 AD	→	सलुवा नरसिम्हा
तुलुव	→	1505-1570 AD	→	वीर नरसिम्हा / नरसा नायक
अराविदु	→	1570-1650 AD	→	तिरुमाला

संगम वंश : 1336 - 1485 ई०

हरिहर I & बुक्का I (1336-56)

- संस्थापक- हरिहर & बुक्का (संगम के पुत्र) → काकतीयों के सामंत एवं बाद में कम्पिली धर के दरबार में मंत्री बने।
  - कर्नाटक विद्या विलास

बुक्का : विद्यानगर → विजयनगर

यात्री दौरा → इब्नबतूता (मोरक्को) → मोहम्मद बिन तुगलक के समकालीन (1325-1351)

PARMAR SSC

देवराय I (1406-22):

इनके शासनकाल में निकोलो डी कोंटी ने विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया।

↳ इटली

टैंक / बांध / नहरें बनवायी

देवराय द्वितीय (1423-46):

→ इनके शासनकाल में अब्दुर रज्जाक ने विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया।

↳ फारस से

सुलुव वंश [1486-1505 ई०]:

→ सुलुव नरसिम्हा (1486-91) सुलुव वंश का संस्थापक

- तिरुमल (1491)
- इम्मादी नरसिम्हा (1491-1505)

तुलुव वंश [1505-1570 AD]:

→ संस्थापक - वीर नरसिम्हा (1505-09 AD)

कृष्णदेव राय (1509-1529 AD):

→ वीर नरसिम्हा के मुख्यमंत्री सलुवा तिम्मा ने इन्हे सिंहासन पर बैठाया।

→ निर्माण -
- विजय महल महल (विजय का घर)
- हजारा राम मंदिर
- भगवान विष्णु को समर्पित विट्ठल स्वामी मंदिर

PARMAR SSC

हजारा राम मंदिर

विट्ठल स्वामी मंदिर

उपाधि :
- यवनराज स्थापनाचार्य (यवन साम्राज्य अर्थात बीदर साम्राज्य को पुनर्स्थापित करने वाला)
- अभिनव भोज
- आंध्र भोज
- आंध्र पितामह

यूनानियों को भी बुलाया गया।

- अपने प्रारंभिक दिनों में ओडिशा के शासकों को हराया।
- इस्माइल आदिल खान को हराया और रायचूर दोआब को बहाल किया।
  → कृष्णा & तुंगभद्रा के बीच

अमर नायक - सैनिक कमांडर / Military Commanders

- अपनी माँ के नाम पर नागलपुरम की स्थापना की।
- वह तेलुगु और संस्कृत दोनों भाषाओं के प्रतिभाशाली विद्वान थे।
- उनकी कृतियाँ :
  - अमुक्तमाल्यदा (राजनीति पर तेलुगु कृति) → राज्यशिल्प
  - जम्बावती कल्यानम् (संस्कृत नाटक)

यात्री : डुआर्टे बारबोसा और डोमिंगो पेस (पुर्तगाली यात्री)
उनका दरबार 'अष्टदिग्गजों' से सुशोभित था।

अष्टदिग्गज : अल्लासानी पेद्दाना, नंदी थिमना, मदायागरी मल्लाना, धूरजति, अय्यल रज्जु रामा भद्रडु, पिंगली सूराना, रामराजाभूषण, तेनाली राम कृष्ण।

PARMAR SSC

- उन्होंने अल्बुकर्क को भटकल में एक किला बनाने की अनुमति दी।
  ↳ पुर्तगाली

- कृष्णदेवराय के बाद उसका भाई अच्युत देव राय शासन में आया।
  ↳ फर्नाओ नुनीज

अरविदु राजवंश (1570-1650 AD):

1565: तालीकोटा का युद्ध (अरविदु राजवंश की स्थापना से पहले)
या
राक्षसी तंगड़ी

B A G
↓ ↓ ↳ गोलकोण्डा
बीजापुर अहमदनगर

अंतिम शासक - श्री रंगा III (1678 ई०)

सदाशिव राय (तुलुव के कठपुतली शासक)
↓
आलिया रामा राय (मुख्यमंत्री)
↳ दक्कन के आंतरिक मामलों मे हस्तक्षेप
↳ SSC परीक्षा के अनुसार अरविदु वंश का अंतिम शासक

प्रशासन:

- अमर नायक → राया: शासक
  ↓ अंतर्गत
  नायक: सैन्य प्रमुख

बाद में विजयनगर, पेनुकोण्डा और उसके बाद चंद्रगिरी में स्थानांतरित हो गया।

आयंगर प्रणाली:

→ ग्राम समिति = 12 सदस्यीय

यात्रियों का दौरा:

- इब्नबतूता → हरिहर & बुक्का
- डुआर्टे बारबोसा → कृष्ण देवराय
- डोमिंगो पीस → कृष्ण देवराय
- निकोलो डी कोंटी → देवराय I
- अब्दुर रज्जाक → देवराय II
- फर्नाओ नुनीज → अच्युत राय

PARMAR SSC

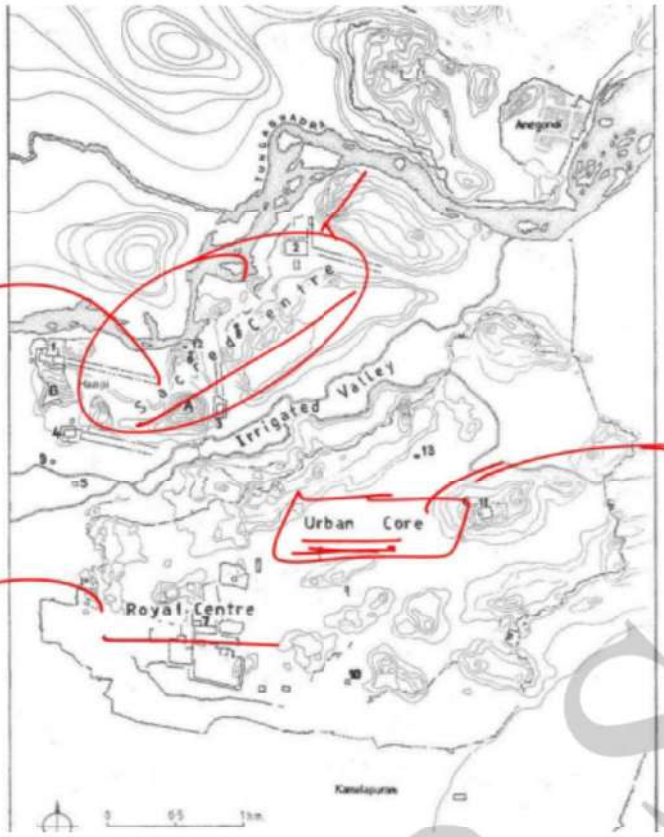

शाही केन्द्र :
- 60 मंदिर
- 30 महल

- कमालपुरम टैंक
  - कृष्णदेवराय द्वारा निर्मित
  - सीढ़ीदार टैंक
- अनंतराज सागर झील → संगम वंश के शासकों द्वारा निर्माण
- दीरिया नहर

वास्तुकला :

कमल मंदिर (Lotus temple)

हाथी अस्तबल (Elephant stable)
- 11 हाथी बनवाये
- सम्भवतः कृष्णदेव राय द्वारा

- महानवमी डिब्बा → 11000 sq.ft
  ऊंचाई - 40 fit

कमलापुरम टैंक → कृष्ण देव राय द्वारा

PALMAR SSC

पवित्र केन्द्र : तुंगभद्रा के उत्तर में

↳ वाली & सुग्रीव की सेना रहती थी

- विरुपाक्ष मंदिर → हम्पी
  - ↳ लक्कन दंडेशा द्वारा निर्मित (देवराय II के समय)
  - ↳ गोपुरम का निर्माण - कृष्ण देव राय द्वारा
  - ↓ शिव के अवतार

दुर्ग → अब्दुर रज्जाक

↓

7 स्तर की किलाबंदी

1,2,3,4 → कृषि भूमि, खाद्यान्न

5,6 → शाही केन्द्र

7 → पवित्र केन्द्र

प्रोविडा शैली → विजयनगर साम्राज्य की वास्तुकला शैली (इंडो-इस्लामिक)

बहमनी साम्राज्य

अलाउद्दीन हसन बहमान शाह (1347-58):

- संस्थापक
- राजधानी- गुलबर्ग (पहली राजधानी)
- हसनगंगू के नाम से भी जाना जाता है।
- पराजित- वारंगल के काकतीय

ताजुद्दीन फिरोजाबाद शाह (1397-1422):

→ इन्होंने देवराय प्रथम को हराया और उसके बाद के युद्ध में हार गये/ और उसकी पुत्री से शादी की/

अहमद शाह वली (1422-35 AD):

→ राजधानी गुलबर्ग से बीदर स्थानांतरित की/

PARMAR SSC

महमूद गवां :

- बहमनी साम्राज्य के दौरान पेशवा
- उपाधि - मलिक - उत - तुज्जार (हुमायुं शाह द्वारा)
  - ↓ ख्वाजा-ए-जहां
  - ↳ व्यापारियों का प्रमुख
- गवां ने कांची तक विजयनगर के क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। पश्चिमी तट पर गोवा और धारवाड़ पर विजय प्राप्त की।
- बहमनी शाह, शासक जो क्रूरता के लिए विख्यात था और इसलिए उसे 'जालिम' की उपाधि मिली : हुमायूं शाह

आमिर / Amirs → बहमनी शासकों को सैनिक सहायता प्रदान करते थे।

2

- अफाकी (परदेशी) : ईरान, इराक से आये सुन्नी मुसलमान
- दक्कनी

→ पूरा बहमनी साम्राज्य 4 प्रशासनिक यूनिटों में विभाजित था → तरफ (प्रांत) (तरफदार → गवर्नर)

- गुलबर्गा, बीदर, बरार, दौलताबाद

500 घोड़े → 1000000 टूण / Huns

खालीसा भूमि : सुल्तान के प्रत्यक्ष नियंत्रण की भूमि और उससे एकत्र किए गए कर राजस्व को शाही दरबार और शाही घराने के रखरखाव के लिए खर्च करना।

PARMAR SSC

बहमनी साम्राज्य का 5 राज्यों में विभाजन

		संस्थापक	राजवंश	
बरार	1484	फतउल्लाह इमादशाह	इमादशाही वंश	1574 अहमदनगर
बीजापुर	1489	युसुफ आदिलशाह	आदिलशाही	1686 औरंगजेब
अहमदनगर	1490	मलिक अहमद	निजामशाही	1633 शाहजहां
गोलकुंडा	1518	कुलीकुतुब शाह	कुतुबशाही	1687 औरंगजेब
बीदर	1526-27	अमीर अली बरीद	बरीदशाही	1610 बीजापुर

इब्राहिम आदिल शाह

- फारसी के स्थान पर दखिनी को दरबारी भाषा के रूप में लागू किया गया।
- गोल गुम्बद का निर्माण → मुहम्मद आदिल शाह
  - 'व्हिसपरिंग गैलरी' के लिये प्रसिद्ध
  - प्रसिद्ध वास्तुकार - दाबुल के याकूत
- प्रसिद्ध गोलकोंडा किला सबसे पहले काकतीय राजवंश द्वारा बनाया गया था और बाद में कुतुबशाही शासकों द्वारा मजबूत किया गया।

गोलकोण्डा → हीरों की खान के लिए प्रसिद्ध

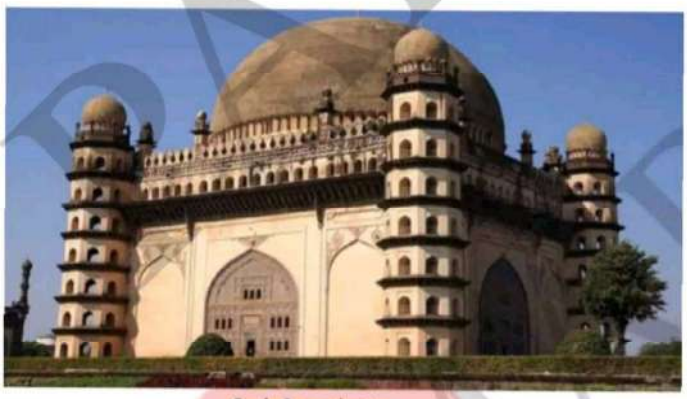

Gol Gumbaj
- Second largest in the world

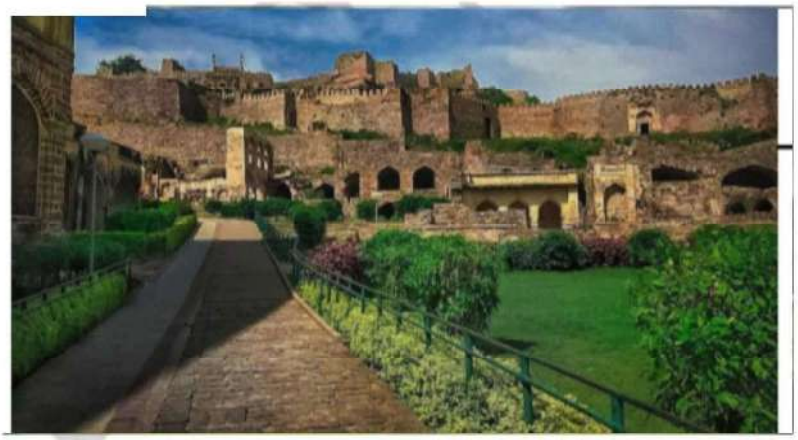

Golkonda Fort

गोल गुम्बद → विश्व का 2nd सबसे बड़ा गुम्बद, भारत का पहला

PARMAR SSC

मुहम्मद कुली कुतुब शाह :

- कुतुबशाही राजवंश के महानतम शासक
- हैदराबाद शहर के संस्थापक (मूल रूप से इसे भाग्यनगर के नाम से जाना जाता था, जो सुल्तान की प्रिय भाग्यमती के नाम पर था)
- उन्होंने प्रसिद्ध चारमीनार का निर्माण कराया।

अन्य :

- कृष्णा तृतीय (मान्यखेत) का संबंध था - राष्ट्रकूट से
- 'हिरण्य गर्भ' अनुष्ठान किसके द्वारा किया जाता था - दंतिदुर्ग
- बहमनी शासक → क्रूरता के लिये विख्यात → जालिम (उपाधि) → हुमायूँ शाह

PARMAR SSC

मुगल साम्राज्य

बाबर (1526-1530) :

→ पानीपत का प्रथम युद्ध : 21 अप्रैल 1526

↳ बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया।

↳ प्रथम बार गनपाउडर का प्रयोग किया गया

वास्तविक नाम - जहीर - उद्दीन - मुहम्मद

- अनुमानित मुगल राजवंश भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना तक चला।
- पादशाह की उपाधि धारण की।

- पिता → तैमूर का वंशज
- माता → चंगेज खान का वंशज

PARMAR SSC

- जब वह 12 वर्ष का था तो वह 1494 में फरगना का शासक बन गया।
- एक अन्य मंगोल समूह, उजबेगों के आक्रमण के बाद उसे अपना सिंहासन छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- उसने 1504 में काबुल पर विजय प्राप्त की।

→ दौलत खां लोदी ने बाबर को आमंत्रण दिया था।
→ खुद को वे उजबेक बताते हैं।
→ तुलुगमा पद्धति अपनायी बाबर ने।

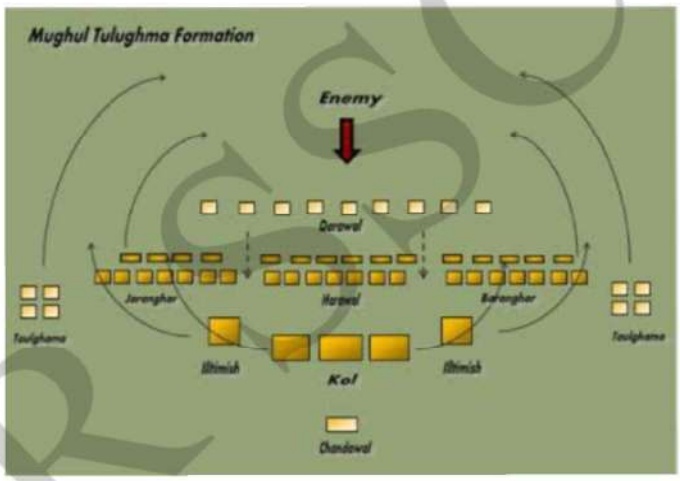

बाबर के युद्ध :

- खानवा का युद्ध → 1527 → राणा सांगा (मेवाड़) को हराया।
- चंदेरी का युद्ध → 1528 → मेदिनी राय को हराया।
- घाघरा का युद्ध → 1529 → अफगानों को हराया। → महमूद लोदी

→ 1530 में आगरा में बाबर की मृत्यु हो गयी।
↳ कब्र - काबुल में

आत्मकथा: तुजुक-ए-बाबरी - तुर्की भाषा में → चारबाग शैली का जिक्र

- फारसी में अनुवाद - बाबरनामा - अब्दुर रहीम खानेखाना
- अंग्रेजी में - मैडम बेवरिज
- उन्होंने भारत और उसके साम्राज्य का उत्कृष्ट विवरण दिया है।

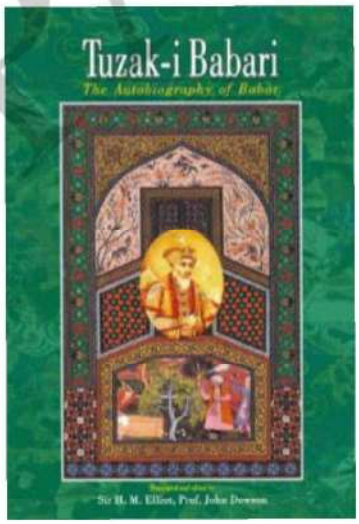

PARMAR SSC

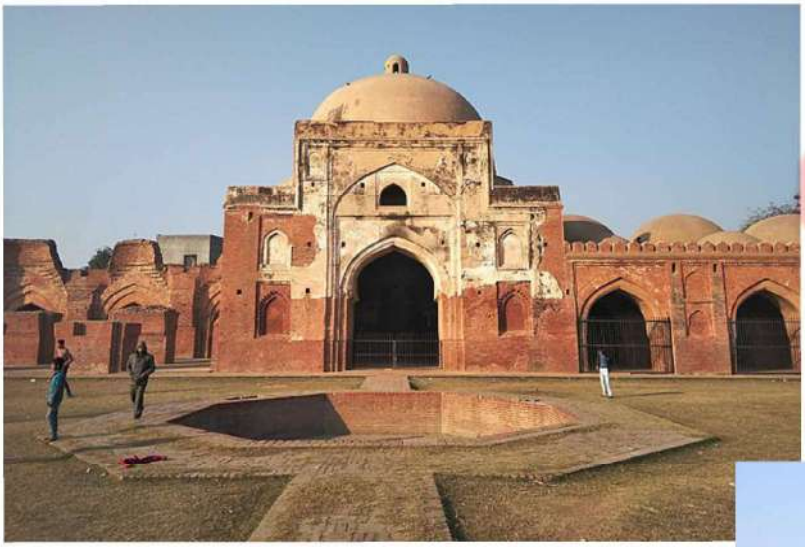

पानीपत की काबुली बाग मस्जिद

आराम बाग आगरा →

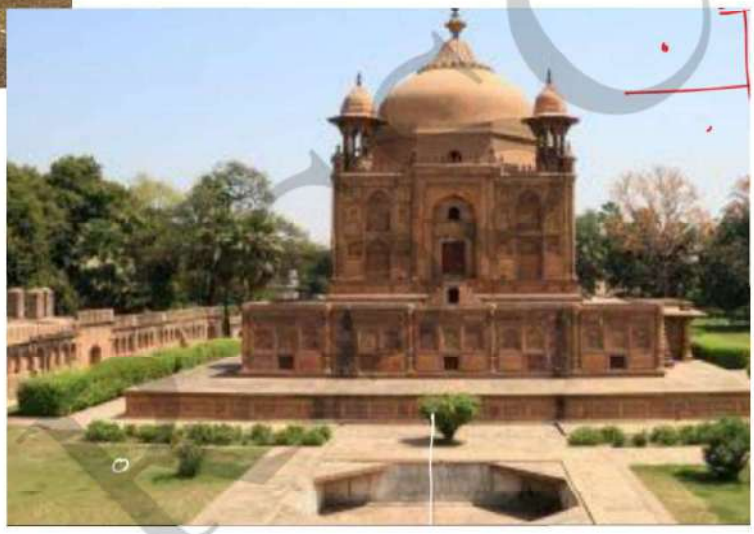

हुमायूँ (1530-40 & 1555-56)

- बाबर का पुत्र था। 1530 में सिंहासन पर बैठा।
- उसके उत्तराधिकार को उसके भाइयों कामरान, हिंडाल और अस्करी के साथ-साथ अफगानों ने चुनौती दी थी।

- चौसा का युद्ध (1539)
- कन्नौज / बिलग्राम का युद्ध (1540)

→ हुमायूँ पूरी तरह से शेरशाह सूरी के पराजित हुआ।

→ हुमायुं ने शरण ली - असाफिद राजवंश (ईरान)

→ हुमायुंनामा → उसकी बहन गुलबदन बेगम ने जीवनी लिखी।

→ दिल्ली में 'दीन-ए-पनाह' बनवाया → द्वितीय राजधानी

PARMAR SSC

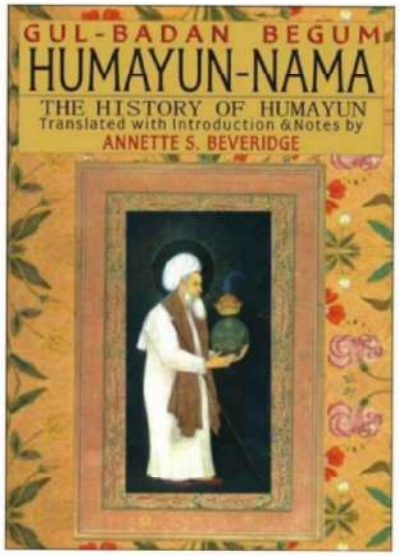

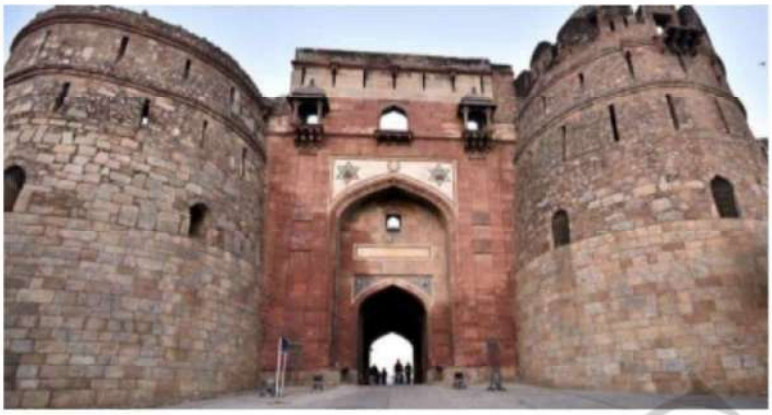

'दीन-ए-पनाह'

→ शेरशाह की मृत्यु के बाद हुमायूँ ने 1555 में भारत पर आक्रमण किया और उसके भाइयों व अफगानों को हराया एवं वह एक बार फिर से भारत का शासक बन गया।

→ 1556 में अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतरते समय उसकी मृत्यु हो गयी। दिल्ली में दफना दिया गया।

हुमायूं का मकबरा : बीगा बेगम / हाजी बेगम द्वारा निर्माण

↳ चार बाग शैली

PARMAR SSC

शेरशाह [1540-1545 AD]:

- सासाराम के जमींदार हसन खान का पुत्र था। वास्तविक नाम - फरीद खान
- इब्राहिम लोदी ने अपने पिता की जागीर उसे हस्तांतरित कर दी।
- 1539 में उसने चौंसा के युद्ध में हुमायूँ को हराया और शेरशाह की उपाधि धारण करके सम्राट बना।
- 1540 में उसने कन्नौज की लड़ाई में हुमायुं को हराकर कन्नौज पर कब्जा कर लिया।
- सम्राट के रूप मे उसकी विजय -
  - मालवा (1542)
  - रणथंभौर (1542)
  - रायसीन (1543)
  - मारवाड़ पर राजपूताना कब्जा (1542)
  - चित्तौड़ (1544)
  - कालिंजर (1545)
- 1545 में कालिंजर पर विजय प्राप्त करते समय उसकी मृत्यु हो गयी।
- रुपया नामक सिक्का जारी किया।
- पूरे साम्राज्य में मानक वजन और माप तय किये।
- ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया।
  - पेशावर से कलकत्ता (चिटगाव (बांग्लादेश)) तक

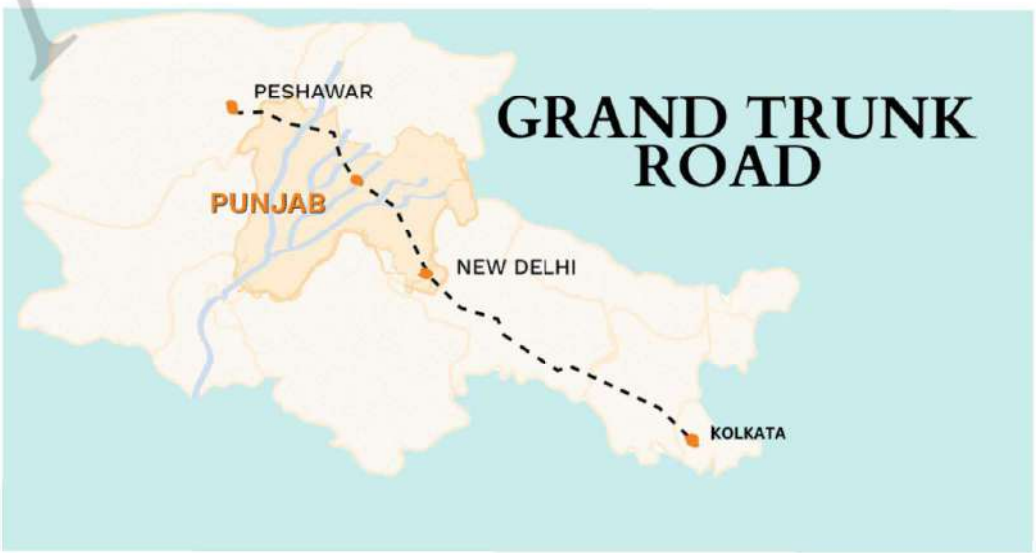

PARMAR SSC

- सराई का निर्माण करवाया।
  - → जी रोड से यात्रा करते समय आराम करने या सामान रखने के लिये पूरी तरह सुरक्षित घर

दफन - सासाराम

- भूमि की माप की जाती थी।
- औसत का 1/3 भाग कर
- किसान को एक पट्टा और एक काबूलियत दिया गया जिससे किसान के अधिकार और कर तय हो गये।
- जमींदारी हटा दी गई और कर सीधे वसूल किये गये।
- दिल्ली में पुराना किला बनवाया।

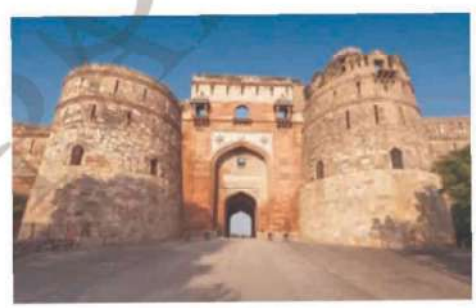

Purana Quila at Delhi

अकबर [1556-1605 AD]:

- मुगल साम्राज्य के महानतम शासकों में से एक था।
- हुमायुँ का सबसे बड़ा पुत्र था।
- उपाधि- जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर बादशाह गाजी की उपाधि के तहत सिंहासन पर बैठा।
- संरक्षक- बैरम खान को नियुक्त किया गया।

पानीपत का दूसरा युद्ध: 5 नवंबर 1556

हेमू (मुहम्मद आदिल शाह) और बैरम खान के बीच लड़ा गया।
- हेमू → मारा गया
- बैरम खान → विजयी

- अकबर ने जहां भी संभव हो राजपूतों पर जीत हासिल करने की कोशिश की।
- राजपूत राजाओं को मुगल सेवा में शामिल किया उनके साथ मुगल कुलीनों के बराबर व्यवहार किया।

- अकबर 13 वर्ष की आयु में कालानौर, पंजाब में गद्दी पर बैठा।

→ 1562 में भारमल / बिहारीमल (आमेर, राजधानी जयपुर के कछवाह राजपूत शासक) की बेटी हरखा बाई से शादी करके अकबर ने हिंदुओं के साथ अपनी धर्मनिरपेक्ष नीति प्रदर्शित की।

→ राणा प्रताप सिंह और उनके पुत्र अमर सिंह को छोड़कर (मेवाड़ के सिसोदिया राजपूत, राजधानी - चित्तौड़) अधिकांश राजपूत राजाओं ने अकबर की सर्वोच्चता को मान्यता दी।

→ हल्दीघाटी का युद्ध (1576)
- राणा प्रताप → हार गये।
- मुगल → आमेर के राजा मान सिंह द्वारा नेतृत्व

कांगड़ा किला (हिमाचल)
भारत का सबसे पुराना किला

→ कुम्भलगढ़ किला → सिसोदिया शासकों द्वारा निर्माण
↳ दीवार = 36 KM लम्बी (चीन की दीवार के बाद सबसे लम्बी)

→ अकबर ने 1581 में नया धर्म 'दीन-ए-इलाही' की स्थापना की।
↳ एक मात्र हिन्दु द्वारा अपना गया - बीरबल

PAR SSC

हिंदू धर्म, इस्लाम, जैन और ईसाई धर्म जैसे कई धर्मों के मूल्यों के संश्लेषण पर आधारित

1569 - जहांगीर का जन्म
1570 - फतेहपुर सीकरी का निर्माण
1571 - फतेहपुर सीकरी में राजधानी स्थानांतरित
1585 - राजधानी लाहौर स्थानांतरित
1598 - राजधानी लाहौर से आगरा स्थानांतरित
1575 - बुलंद दरवाजा का निर्माण

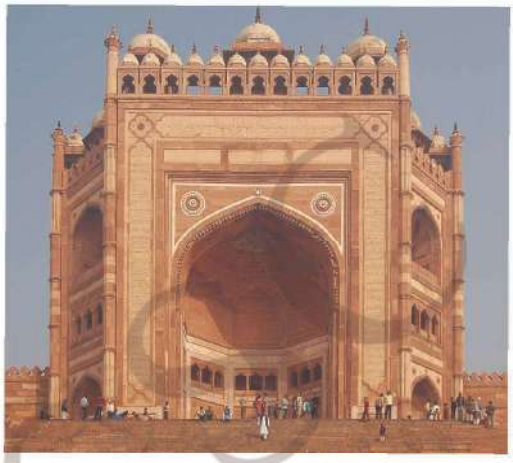

निर्माण :

- फतेहपुर सीकरी
- बुलंद दरवाजा

→ सलीम चिश्ती के सम्मान में गुजरात विजय के बाद अपना दरबार आगरा से यहीं स्थानांतरित किया।

- आगरा का किला
- लाहौर का किला
- इलाहाबाद का किला
- हुमायुँ का मकबरा (दिल्ली) → यूनेस्को विश्व विरासत स्थल

नवरत्न :

1. बीरबल → प्रशासक
2. अबुल फजल → विद्वान और राजनेता
3. फैजी → विद्वान और राजनेता, अबुल फजल के भाई)
4. टोडरमल → वित्तमंत्री, दहशाला, बंदोबस्त / जब्ती
5. भगवानदास → मनसबदार, राजा भारमल के पुत्र
6. मानसिंह → मनसबदार, राजा भारमल के पौत्र
7. तानसेन → संगीतज्ञ

PARMAR SSC

8. अब्दुर रहीम खानेखाना → मंत्री, हिंदी कवि

9. मुल्ला दो प्याजा

फैजी → इबादतखाना शुरु करने में अकबर की सहायता की।
↳ धार्मिक प्रवचन

तानसेन → वास्तविक रूप से राजा रामचंद्र के संरक्षण में थे।
तोमर राजा, ग्वालियर
- ध्रुपद के संस्थापक • रुद्रवीणा / रबाब
- घराना- सीवा / ग्वालियर घराना
- वास्तविक नाम- रामतनु पांडे
- अकबर ने 'मिंया' की उपाधि दी।

• गुरु → स्वामी हरिदास

अबुल फजल → 'अकबरनामा' लिखी।

3 भाग

पहला	दूसरा	तीसरा
अकबर के पूर्वजों के बारे में	अकबर के राज्य के बारे में	आइन-ए-अकबरी अकबर का प्रशासन

{ तस्सुज (बराबर भागों में विभाजित लंबाई)
गज - मापक इकाई

अकबर के शासन के दौरान भू-राजस्व :

भूमि प्रकार :

- पोलाज → हर साल अलग फसल बोई जाती थी, कभी खाली नही छोड़ा जाता था।
- परौती → अपनी उर्वरा शक्ति वापस पाने के कुछ लिये कुछ समय के लिये खाली छोड़ना
- चाचर → इस जमीन पर तीन या चार साल तक खेती नही की जाती थी।
- बंजर → इस जमीन पर 5 साल या उससे ज्यादा समय तक खेती नही की जाती थी।

[राजस्व निश्चित → 10 वर्षों में दहसाला के नाम से जाना जाने वाला अनुमान
कर → इसका 1/3 भाग

PARMAR SSC

→ जजिया कर को समाप्त कर दिया

→ अकबर की 1605 में मृत्यु हो गई।
↳ मकबरा - सिकंदरा (आगरा)

शासन व्यवस्था:

→ मनसबदारी की शुरुआत → मनसब (Rank) → जागीरदारी व्यवस्था

सिपाही (जट - Zat) के आधार पर निधि निर्धारित

अधिकतम रैंक - 7000
- मिर्जा अजीज कोका
- मानसिंह

वेतन का भुगतान
- Cash - नगदी
- जागीर
  ↳ भूमि के लिये राजस्व अधिकार

→ 1601 में, अकबर ने खंडेश के असीरगढ़ किले की ओर अभियान किया और जीत लिया, जबकि उसके बेटे जहांगीर ने दिल्ली में विद्रोह कर दिया।

अनुवाद विभाग:

रामायण → फारसी में अनुवाद → अब्दुल कादिर बदायुनी

महाभारत → अब्द-उल-कादिर बदायुनी + फैजी
↳ रज्मनामा

- चारबाग वास्तुकला शैली की शुरुआत → मुगलों द्वारा
- अकबर के साम्राज्य में सैन्य कमांडर → फौजदार
- कोतवाल - पुलिस
- दीवान - राजस्व
- बख्शीस - सैन्य कमांडरों की सहायता

PARMAR SSC

PARMAR SSC

मुगल साम्राज्य

जहाँगीर [1605-1627 AD]:

- वास्तविक नाम - नूर-उद-दिन मौहम्मद सलीम
- यह अपने सख्त न्याय प्रशासन के लिये जाने जाते है।
- शादी न्याय चाहने वालों के लिये आगरा किले में 'जंजीर-ए-अदल (न्याय की जंजीर) की स्थापना की।
- 1611 में, जहाँगीर ने बंगाल के फारसी रईस शेर अफगान की विधवा 'मिहर-उन-निसा' से शादी की।
  - नूरजहां की उपाधि दी।
- नूरजहां ने राज्य के मामलों मे जबरदस्त प्रभाव डाला।
- नूरजहां की आधिकारिक पादशाह बेगम बनाया गया।

वास्तविक नाम - मिर्जा नूर-उद-दीन बेग मुहम्मद खान सलीम

पिएत्रा ड्यूरा सजावट से सुसज्जित एतमादुद्दौला का मकबरा आगरा में स्थित है। → नूरजहां द्वारा अपने पिता की याद में निर्मित

PARMAR SSC

सराय नूरमहल भारत का केन्द्र संरक्षित स्मारक है, यह पंजाब में स्थित है।

↳ नूर जहां

→ जहांगीर ने मारवाड़ की मानमती / जगतगोसाई / जोधाबाई और एक कछवाहा राजकुमारी से भी शादी की। (राठौर राजकुमारी)

↳ पुत्र - शाहजहां

मेवाड़ के अमरसिंह ने मुगलों (जहांगीर) की अधीनता स्वीकार कर ली।

→ 1608 में, ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि कैप्टन विलियम हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में आया।

↓ 400 का मनसब बनाया

→ 1615 में, इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो भी उसके दरबार में आया।

→ हालांकि जहांगीर ने शुरुआत में विरोध किया लेकिन बाद में उसने अंग्रेजों को सूरत में एक व्यापारिक बन्दरगाह स्थापित करने की अनुमति दे दी।

→ उसने अहमदनगर पर कब्जा कर लिया।

↳ मलिक अम्बर ने उसे बालघाट की जागीर सौंप दी।

→ सिख गुरु अर्जुन देव (5 वें गुरु) की हत्या करवायी।

↳ खुसरो (जहांगीर का पुत्र) ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और अर्जुन देव ने उसे शरण दी।

→ राजकुमार खुर्रम और महावत खान ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

शाहजहां + मलिक अम्बर

→ संस्मरण लिखा - तुजुक - ए - जहांगीरी → फारसी भाषा में।

→ जहांगीर को लाहौर में दफनाया गया।

PARMAR SSC

शाहजहाँ : [1628-58]

- माता - जगतगोसाई / जोधाबाई (राजा जगत सिंह की पुत्री)
- वह अपनी दक्कन और विदेशी राजनीति के लिए जाने जाते हैं।
- पत्नी - मुमताज महल → 1631 में मृत्यु → शाहजहाँ के सिंहासन पर बैठने के 3 वर्ष बाद
  - वास्तविक नाम - अर्जुमंद बानो
  - शाहजहाँ ने इनकी याद में ताजमहल बनवाया। (1632-53)

ताजमहल का वास्तुकार - अहमद लाहौरी

- 1632 - पुर्तगालियों को हराया।
- 1637 - उसने अहमदनगर, बीजापुर और गोलकोंडा पर कब्जा कर लिया और सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।
- उसके शासनकाल वर्णन → फ्रांस का यात्री
  - बरनायर, तरवनायर और निकोलाओ मानुची
    - बरनायर → पुस्तक → Travels in the Mugal Empire
    - तरवनायर → Travel in India
    - निकोलाओ मानुची → इटालियन यात्री
- पीटर मुंडी → शाहजहाँ के शासनकाल में पड़ने वाले अकाल का वर्णन किया।
- कहा जाता है कि इसका शासनकाल मुगल वंश के शिखर पर था।
- यह कला, संस्कृति और वास्तुकला को बढ़ावा देने के लिये जाना जाता है।

उन्होंने नई प्रशासनिक इकाई, चकला की शुरुआत की।

PARMAR SSC

निर्माण: लाल किला , जामा मस्जिद , ताजमहल

दिल्ली

दीवान-ए-आम → जहाँ आम लोग इकट्ठा होते है।

दीवान-ए-खास → सभी महत्वपूर्ण लोग : राजा और कुलीन लोग यहाँ बैठते थे।

↓

दिल्ली

पिस्ता ड्यूरा नामक सजावट की कला शाहजहाँ के शासनकाल में लोकप्रिय हुई-

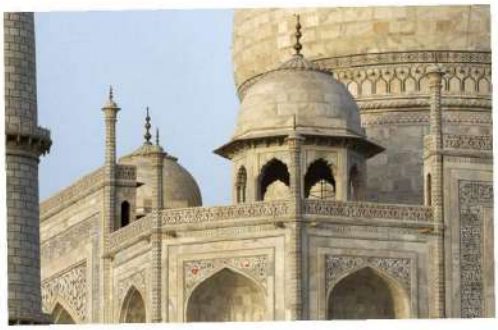

मुस्मान बुर्ज :

निर्मित - शाहजहाँ

इसे जैस्मिन पैलेस के नाम से भी जाना जाता है, जहां उन्होंने अपने अंतिम वर्ष कैद में बिताए थे

PRIMARY SSC

शीश महल : शाहजहां द्वारा निर्मित

↳ आगरा

कोहिनूर हीरा → मयूर सिंहासन → दीवान-ए-खास

सर्वप्रथम काकतीय वंश द्वारा उत्खनन किया गया। (दक्षिण भारत)

ऊँचे भाग में बनाया गया 1100 Kg सोना (लगभग)

नादिरशाह द्वारा चुराया गया

शाहनामा

↳ फिरदौसी (11 वी शताब्दी)

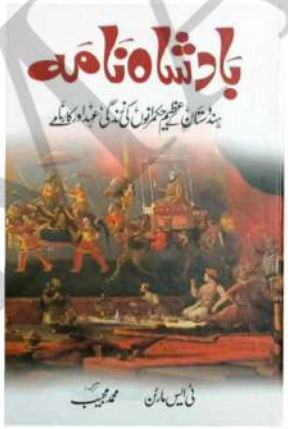

बादशाहनामा / पादशाहनामा

↳ अब्दुल हामिद लाहौरी

- शाहजहाँ के खराब स्वास्थ्य के कारण 1657 में उसके चारों बेटो के बीच उत्तराधिकार का युद्ध शुरु हो गया।
- जुलाई 1658, औरंगजेब विजेता बनकर उभरा
- शाहजहाँ दाराशिकोह को गद्दी पर बैठाना चाहते थे।

उन्होंने औपचारिक रूप से दारा शिकोह को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया और उन्हे शाहजादा-ए-बुलंद इकबाल (उच्च भाग्य का राजकुमार) की उपाधि प्रदान की।

PARMAR SSC

→ औरंगजेब ने पिता को कैद करके आगरा के किले में रखा और 1666 में उसकी मृत्यु हो गई, शाहजहां के शव को ताजमहल में मुमताज महल के बगल में दफनाया गया।

औरंगजेब [1658-1707]:

→ 1658, दाराशिकोह को धरमत (सामुगढ) और देवराय के युद्ध में हराया

→ जीतने के बाद, दिल्ली में उसका राज्याभिषेक हुआ

→ उपाधि- आलमगीर

→ उसने सिखों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर को बंदी कर उनकी हत्या करवा दी।

↳ क्योंकि उन्होंने इस्लाम अपनाने से इंकार कर दिया।

गुरु गोविंद सिंह (सिखों के 10 वें और अंतिम गुरु तथा गुरु तेगबहादुर के पुत्र) ने मुस्लिम अत्याचार से लड़ने और अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए अपने अनुयायियों को एक समुदाय 'खालसा' में संगठित किया।

1708- दक्कन के नांदेर में एक अफगान द्वारा हत्या कर दी गई।

शिष्य- बंदा बहादुर ने मुगलों के खिलाफ युद्ध जारी रखा।

↳ मूल नाम- लक्ष्मण देव

↳ संत बने और माधो दास (पहले) नाम रखा।

↳ गुरु गोविंद सिंह द्वारा 'बंदा बहादुर' नाम दिया गया।

→ शासन के पहले 23 वर्षों (1658-81) के दौरान औरंगजेब ने उत्तर भारत पर ध्यान केंद्रित किया।

शिवाजी (सबसे शक्तिशाली मराठा राजा) → औरंगजेब के दुश्मन

↓

मारने के लिये ← औरंगजेब ने आमेर के जयसिंह के साथ मिलकर षडयंत्र रचा।

शिवाजी ने आमेर औरंगजेब के दरबार का दौरा किया और उन्हें कैद कर लिया गया लेकिन 1674 में वे भागने में सफल रहे।

↳ खुद को छत्रपति घोषित किया। मृत्यु- 1680, उत्तराधिकारी- सम्भाजी

PARMAR SSC

→ 1686 - बीजापुर पर औरंगजेब ने कब्जा कर लिया।

→ 1687 - गोलकोंडा पर कब्जा कर लिया।

→ नियुक्ति → मुहतसिब → धार्मिक अधिकारी

→ लिखा - फतवा-ए- आलमगीर (मुस्लिम कानून / इस्लामिक धर्म)

→ जजिया को पुनः शुरु किया।

↳ हिंदू मनसबदारों ने अपना उच्च अनुपात बनाए रखा।

→ मृत्यु- 1707 → देवगिरी → औरंगाबाद → शंभाजी नगर (वर्तमान)

→ दफनाया गया- दौलताबाद

→ उसे 'जिंदा पीर' अर्थात जीवित संत कहा जाता था।

बाद के मुगल :

→ **बहादुर शाह** (1707 - 1712)
अन्य नाम- शाह आलम प्रथम

→ **जहांदार शाह** : 1712 - 1713
जुल्फिकार की मदद से गद्दी पर बैठा, जजिया कर समाप्त किया।

→ **फरुखसियार** : सय्यद भाइयों की मदद से गद्दी पर बैठा।
↓
फिर मराठों की मदद से उसे मार डाला।
(1713 - 1719)

सैय्यद बंधु (किंग मेकर)

हुसैन अली खान बरहा

अब्दुल्ला खान बरहा

→ **मुहम्मद शाह** : नादिर शाह का आक्रमण (1739)
(1719 - 1748) 'रंगीला बादशाह' के नाम से भी जाना जाता

→ नादिर शाह ने 1739 में दिल्ली शहर को लूटा और अपार धन- संपत्ति लूट ली।

→ इस आक्रमण के बाद अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली ने लूटपाट की एक श्रृंखला शुरू की, जिसने 1748 और 1761 के बीच उत्तर भारत पर पांच बार आक्रमण किया।

PARMAR SSC

→ अहमदशाह → 1748 - 1754

→ आलमगीर II → 1754 - 1759

→ शाहआलम II → 1759 - 1806

→ अकबर II → 1806 - 1837

→ बहादुरशाह II → 1837 - 1857

प्रशासन व्यवस्था :

सूबा → सूबेदार / निजाम

↓

सरकार → फौजदार → राजस्व संग्रहकर्ता → अमलगुजार

↓

परगना / ग्राम → तालुक → सिकदार → कानूनगो → राजस्व संग्रहकर्ता

- मीर समन - शाही घराने का प्रभारी
- मीर बख्शी - सामान्य खुफिया / सैन्य नियुक्तियाँ
- दीवान - राजस्व प्रशासन
- फौजदार - कानून और व्यवस्था बनाए रखना
- अमलगुजार - भूमि राजस्व के आकलन और संग्रह के लिए जिम्मेदार
- सदर - न्यायिक मामलों का प्रबंधन
- शिकदार - परगना स्तर पर पुलिस प्रमुख
- अमीन - राजस्व एकत्रित करना

"राजपूत"

PARMAR SSC

कई राजपूत राजाओं, विशेष रूप से आमेर और जोधपुर के राजाओं ने मुगलों के अधीन प्रतिष्ठा के साथ सेवा की थी, बदले में उन्हें अपनी वेतन जागीरों में काफी स्वायत्तता का आनंद लेने की अनुमति दी गई थी।

- इन प्रभावशाली राजपूत परिवारों ने गुजरात और मालवा के समृद्ध प्रांतों की सूबेदारी का दावा किया।
- जोधपुर के राजा अजीत सिंह गुजरात के गवर्नर थे और आमेर के सवाई राजा जय सिंह मालवा के गवर्नर थे।
- सवाई राजा जय सिंह ने जयपुर में अपनी नई राजधानी स्थापित की और 1722 में उन्हें आगरा की सूबेदारी दी गई।

(जय सिंह II)

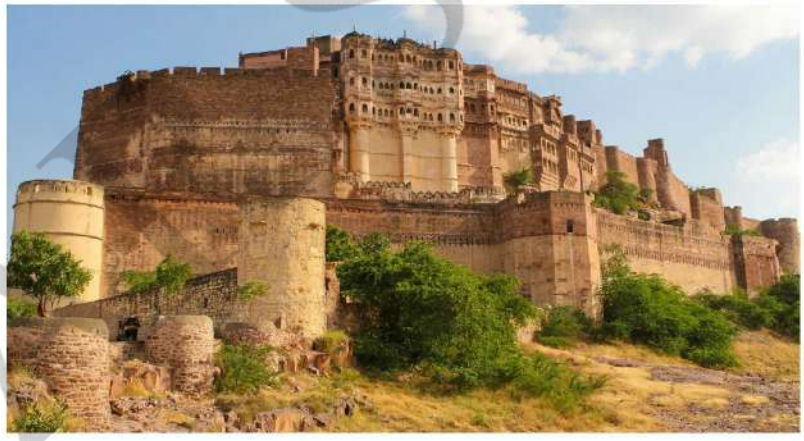

मेहरानगढ़ किला → जोधपुर
(मारवाड़)
↳ नीला शहर
↳ रावजोधा

जंतर मंतर - 5 (दिल्ली, जयपुर, बनारस, उज्जैन, मथुरा)

(15° - 1 घण्टा)

मुगल संस्कृति :

- चारबाग वास्तुकला शैली
- हुमायुं का मकबरा → उसकी विधवा हाजीबेगम द्वारा निर्मित
- बुलन्द दरवाजा → अकबर द्वारा गुजरात विजय के बाद निर्मित
  → फतेहपुर सीकरी का मुख्य द्वार

PARMAR SSC

- **सलीम चिश्ती का मकबरा** → अकबर द्वारा शुद्ध संगमरमर से बनी पहली मुगल इमारत (जहांगीर द्वारा संगमरमर से पुनः निर्मित)

→ **बीरबल का महल, तानसेन का महल भी फतेहपुर सीकरी मे स्थित है।**

- **मोती मस्जिद (लाहौर)** → जहाँगीर ने लाहौर में मोती मस्जिद और शाहदरा (लाहौर) में अपना मकबरा बनवाया।

- **मोती मस्जिद (आगरा)** → शाहजहाँ द्वारा निर्मित (संगमरमर से बनी एकमात्र मस्जिद)

- **लाल किले** में औरंगजेब द्वारा बनाई गई एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है।

PARMAR SSC

- खास महल → दीवान-ए-खास (शाहजहाँ द्वारा निर्मित)
  → मयूर सिंहासन (लाल किला के अंदर)
- दीवान-ए-आम → अकबर द्वारा निर्मित
- मुस्समान बुर्ज → शाहजहां द्वारा निर्मित
  → इसे जैस्मिन पैलेस के नाम से भी जाना जाता है जहां इन्होंने अपने अंतिम वर्ष कैद में बिताए थे।
- लाल किले में औरंगजेब द्वारा बनाई गई एकमात्र इमारत मोती मस्जिद है।
- बीबी का मकबरा → शम्भाजी नगर (यहां औरंगजेब ने अपने अंतिम वर्ष बिताये)
  औरंगजेब द्वारा अपनी पत्नि (रबिया-उल-दौरानी) की याद में बनाया गया एकमात्र स्मारक।
- रबिया-उल-दौरानी → दिलरास बानो बेगम (अन्य नाम)

- 1586 में अकबर ने कश्मीर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- 1579 में मजहरनामा जारी किया - अकबर ने
- मखसूदाबाद शहर → मुर्शिदाबाद → अकबर ने बनवाया
- जात & सवार → मनसबदारी प्रथा से संबंधित
- सरायनूर महल → पंजाब में, नूरजहाँ ने बनवाया।
- इतिमाद-उद-दौला का मकबरा → पिएट्रा इयूरा शैली में → आगरा → नूरजहाँ ने बनवाय
- पुस्तक चार चमन → चन्द्रभान ब्राह्मण ने → शाहजहाँ के शासनकाल मे
- शाहजहाँ ने → सुल्तान बुलंद इकबाल की उपाधि → दाराशिकोह को दी
- बादशाही मस्जिद → औरंगजेब द्वारा, लाहौर में
- चार मीनार → मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने
- गोल गुम्बद → आदिलशाह ने

PARMAR SSC

PARMAR SSC

भक्ति & सूफी आंदोलन

भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएं :

- अनुष्ठान और बलिदान त्याग दिया।
- एकेश्वरवादी (एकल ईश्वर की पूजा)
- ईश्वर या तो साकार है या निराकार है।

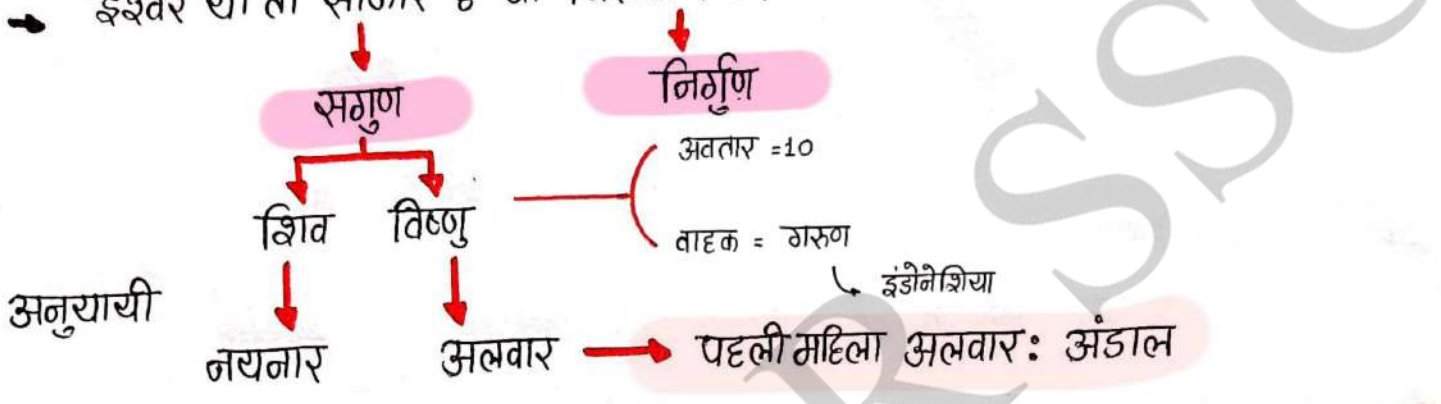

भक्ति आंदोलन की प्रवर्तक

भक्ति आंदोलन :

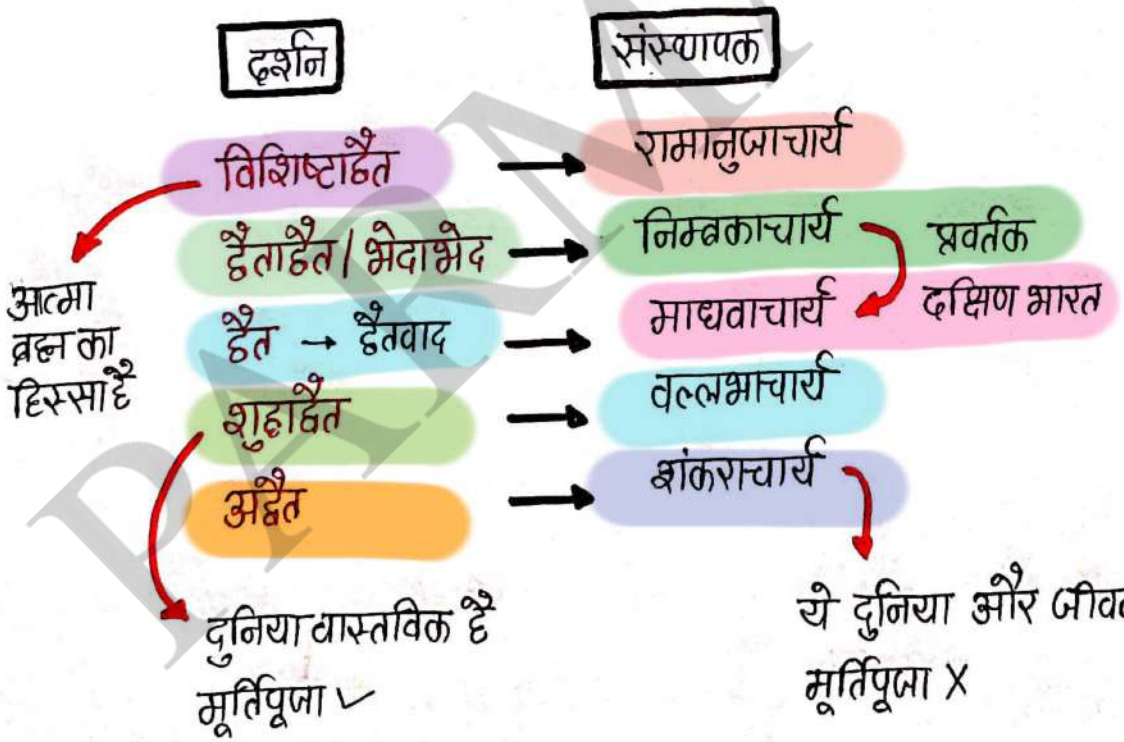

भक्ति आंदोलन के संत :

PARMAR SSC

- **रामानुजाचार्य** → विशिष्टवाद के संस्थापक
  1017 - 1137 AD
- **रामनन्द** → निर्गुण शाखा से संबंधित (उत्तर भारत)
  शिष्य - कबीरदास
- **कबीरदास** → इनके दोहे हिन्दू व मुस्लिम धर्म की आलोचना करते है।
  (1440 - 1510) निर्गुण शाखा से संबंधित उपदेशों का संकलन = बीजक

- **गुरुनानक** → 1469 - 1538 AD
  निर्गुण शाखा से संबंधित
- **चैतन्य** → 1486 - 1533 AD
  गौड़िया के राजा
  बंगाल मे भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक → बंगाल वैष्णववाद

- **विद्यापति** → पदावली का संग्रह
  ↳ राधा & कृष्ण की प्रेम गाथाएं
- **पुरंदर दास** → कर्नाटक संगीत के पिता
  ↳ दक्षिण भारत का संगीत , कर्नाटक
- **वल्लभाचार्य** → शुद्धअद्वैतवाद सिद्धांत दिया।
  पुष्टिमार्ग दर्शन दिया।
  उन्होने कहा- "राम & कृष्ण , विष्णु के अवतार है।"
- **मीराबाई** → 1498 - 1546
  राणासांगा की बहू (मेवाड़)
  राठौर राजकुमारी अनुयायी - रैदास / रविदास की
  कृष्ण की भक्त → अपना पूरा जीवन कृष्ण की भक्ति मे लगाया।
- **सूरदास** → 1489 - 1563
  वह अंधे थे।
  आगरा से
  अपना पूरा जीवन कृष्ण की भक्ति मे लगाया।

PARMAR SSC

- **तुलसीदास** → राम के भक्त
  (1532-1623)
  प्रसिद्ध रचनायें → रामचरितमानस
  → कवितावली
  → गीतावली
- **दादू दयाल** → निर्गुण भक्ति शाखा से
  (1544 - 1603)
  दादू पंथ के संस्थापक
- **शंकरदेव** → असम में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक
  (1449-1568)
  सत्रिया नृत्य के संस्थापक
  बोरगीत दिया।
- **त्यागराज** → राम के भक्त, तमिलनाडु (1767-1847)

महाराष्ट्र के भक्ति संत :

- **ज्ञानेश्वर/ज्ञानदेव** → महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के संस्थापक
  (1271-1296)
  भगवद्गीता पर टीका लिखा → भावारथदीपिका (भावार्थदीपिका)
- **नामदेव** → वारकरी संप्रदाय के संस्थापक
  ↓
  विट्ठल → विष्णु
  (1270-1350AD)
  अभंगों की रचना की।
- **एकनाथ** → 1533-1599AD
  लेखक- भावार्थ रामायण
- **तुकाराम** → लिखा- अभंग, 1598-1650 AD
  ↳ भगवान को समर्पित गीत
- **रामदास** → 1608-1681 AD
  लिखा- दसबोध
  ↳ उनके उपदेशों का संकलन

PARMAR SSC

कर्नाटक के भक्ति संत :

बसवन्ना :

- शिव
- जाति प्रथा / वैदिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध

- लिंगायत / वीरशैव संप्रदाय की स्थापना की।
- प्रारम्भ में वह जैन थे और बारहवीं शताब्दी में चालुक्य राजा के दरबार में मंत्री थे।

सिख गुरु :

सिख धर्म का युग :

- 1469 में नानकदेव के जन्म से लेकर गुरु गोविंद सिंह के जीवन तक।
- 1708 में गुरुगोविंद सिंह की मृत्यु के समय, उन्होंने सिख धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की उपाधि दी।

1. **गुरुनानक →** 1469 - 1539
   जन्म - तालवण्डी / ननकाना साहिब (पाकिस्तान)
   मृत्यु - करतारपुर
   लंगर व्यवस्था की शुरुआत की। सिख धर्म की स्थापना की।

   अस्पृश्यता को खत्म करने की 3 चीजें शुरु की -
   - लंगर - सामुदायिक रसोई
   - पंगत - खाना
   - संगत - निर्णय लेना

   वह मुगल सम्राट बाबर के समकालीन थे।

2. **गुरु अंगद देव →** 1539 - 1552
   गुरुमुखी लिपी के संस्थापक

- नानक देव की रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुमुखी लिपि में संकलित किया।

PARMAR SSC

3. गुरु अमरदास साहिब → • 1552 - 1574
• अकबर के समकालीन

• सिखों के लिए आनंद कारज विवाह समारोह की शुरुआत की गई।

• पुरुषों और महिलाओं के लिए धार्मिक मिशनों की मंजी और पीरी प्रणाली स्थापित की।

Golden Temple

4. गुरु रामदास → • 1574 - 1581
• अमृतसर के संस्थापक

• उन्होंने सिखों के पवित्र शहर अमृतसर में प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर का निर्माण शुरू कराया।

• उन्होंने मुस्लिम सूफी मिंया मीर से हरमिंदर साहिब की आधारशिला रखने का अनुरोध किया।

5. गुरु अर्जुन देव → 1581 - 1606
आदिग्रंथ का संकलन
स्वर्णमंदिर के निर्माण को पूरा किया।
↳ सुंदरीकरण → राजा रणजीत सिंह
जहांगीर द्वारा मार दिया गया।

• उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ आदिग्रंथ का संकलन किया।

• जहाँगीर (खुसरो) ने उसी उन्हें फांसी पर चढ़ाने का आदेश दिया। इस प्रकार, उन्हे शहीदन-दे-सरताज (शहीदों का ताज) कहा गया।

6. गुरु हरगोविन्द साहब → 1606 - 1644
अकाल तख्त का निर्माण, 1609

• गुरु अर्जन देव के पुत्र और 'सैनिक संत' के रूप में जाने जाते थे।

• धर्म की रक्षा के लिए हथियार उठाने वाले प्रथम गुरु।

• उन्होंने मुगल शासकों जहांगीर और शाहजहां के खिलाफ युद्ध छेड़े।

PARMAR SSC

7. गुरु हर राय साहिब → 1644-1661

औरंगजेब के समकालीन

- उन्होंने मुगल शासक शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह को शरण दी, जिन्हें बाद में औरंगजेब द्वारा प्रताड़ित किया गया।
- सम्राट औरंगजेब के साथ संघर्ष से परहेज किया और अपने प्रयासों को मिशनरी कार्यों के लिए समर्पित किया।

8 गुरु हरकृष्ण साहिब → 1661-1664

औरंगजेब के समकालीन

- गुरु हर कृष्ण सबसे छोटे गुरु थे (5 वर्ष की आयु में)
- वह औरंगजेब के समकालीन थे और उसे इस्लाम विरोधी ईश्वरनिंदा के आरोप में दिल्ली बुलाया गया था।
- चेचक से मृत्यु हो गई।

9 गुरु तेग बहादुर साहिब → 1665-1675

औरंगजेब द्वारा मार दिया गया।

- उन्होंने आनन्दपुर शहर की स्थापना की।
- उन्होंने मुगल शासक औरंगजेब द्वारा हिंदू कश्मीरी पंडितों के जबरन धर्म परिवर्तन का विरोध किया और इसके लिए उन्हें प्रताड़ित किया गया।

10 गुरु गोविन्द सिंह साहिब → 1675-1708

अंतिम गुरु

खालसा पंथ की शुरुआत

- उन्होंने 1699 में खालसा की स्थापना की, जिससे सिखों को अपनी सुरक्षा के लिए संत-सैनिक संघ में बदल दिया गया।

PARMAR SSC

- मानव रूप में अंतिम सिख गुरु और उन्होंने सिखों की गुरुपद की जिम्मेदारी गुरु ग्रंथ साहिब को सौंपी।
- वजीर खान (सरहिंद के मुगल शासक) द्वारा भेजे गए दो अफगानों द्वारा हत्या कर दी गई।

गुरु ग्रंथ साहिब :

- गुरु ग्रंथ साहिब (जिसे आदि ग्रंथ भी कहा जाता है) सिखों का धर्मग्रंथ है।
- यह ग्रंथ गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है और इसमें सिख गुरुओं द्वारा कहे गए वास्तविक शब्द और छंद शामिल है।
- इसे किसी जीवित व्यक्ति की बजाय सिख धर्म का सर्वोच्च आध्यात्मिक अधिकारी और प्रमुख माना जाता है।

सूफी आंदोलन :

- दार-उल-काफिर
  - काफिर की भूमि (जहाँ केवल हिन्दु रहते)
    - परिवर्तन किया
    - इस्लाम की भूमि → दार-उल-हर्ब
    - कैसे ?
      - जिहाद के जरिये (धार्मिक युद्ध)
        - जो जिहाद करता है। → मुजाहिद (जिहाद पर जन्नत मिलती)

- ख्वाजा अली हुजविरी → 11वीं शताब्दी
  दाता गंज बख्श (अन्य नाम)
- शेख बहाउद्दीन जकरिया → 1182 - 1262
  सुहरावर्दी सिलसिला के संस्थापक
  मुल्तान में प्रमुख खानगाह की स्थापना की।

PARMAR SSC

→ ख्वाजा मुईनुद्दीन / मोइनुद्दीन चिश्ती

→ चिश्ती संप्रदाय के संस्थापक

चिश्ती संप्रदाय के अन्य संत :

→ शेख हामिउद्दीन नागौरी (1192-1274)

ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी → शिष्य- कुतुबुद्दीन ऐबक

↳ इनके ही नाम पर ऐबक ने कुतुबमीनार की नींव रखी। (1206)

बाबा फरिउद्दीन / गंज-ए-शंकर → 1175-1265AD
बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध

शेख निजामुद्दीन औलिया → 1236 - 1325 AD
महबूब-ए-इलाही नाम से प्रसिद्ध

सरयद मोहम्मद गेसू दराज →

बन्दनवाज / बंदानवाज नाम से प्रसिद्ध

शेख नसीरुद्दीन महमूद → बाद में उन्हें चिराग-ए-दिल्ली के नाम से जाना गया।

शेख बदरुद्दीन समरकन्दी → फिरदौसी संप्रदाय के संस्थापक

सूफी शब्द	अर्थ
• तसाव्वुफ	→ सूफीवाद
• शेख/पीर/मुर्शिद	→ आध्यात्मिक शिक्षक
• मुरीद	→ अनुयायी
• खलीफा	→ उत्तराधिकारी

PARMAR SSC

- खानकाह → वे स्थान जहाँ सूफी गुरुओं ने अपनी सभाएँ आयोजित की
- समा → संगीतमय गायन / पवित्र गीतों का पाठ
- रक्सा → नृत्य
- फना → खुद ही में खो जाना
- जियारत → तीर्थ यात्रा

विष्णु अवतार : मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिम्हा, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण या बलराम, बुद्ध या कृष्ण, कल्कि /

- अमीर खुसरो → शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य
  - तूती-ए-हिंद
- नाथपंथी, सिद्ध और योगी (भक्ति धर्म): पूर्वी भारत
- पंजाब, भारत में निरंकार (निराकार) रूप में ईश्वर की पूजा पर जोर दिया: बाबा दयाल दास
- गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया/
- खुसरो (जहाँगीर के पुत्र) को सहायता प्रदान की थी: गुरु अर्जुन देव जी ने/

→ मध्ययुगीन सूफी परंपरा के संदर्भ में 'वाली' शब्द का अर्थ- भक्त
→ भगवतगीता का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद- चार्ल्स विल्किंस
→ 19 वीं शताब्दी में मध्यभारत में सतनामी आंदोलन- गुरु घासीदास
→ तानसेन के गुरु- गुरु हरिदास
→ गुरु रविदास = मोची संत

PARMAR SSC

PARMAR SSC

यूरोपियन का आगमन

पुर्तगाली :

- 1498 में → वास्को डि गामा → कालीकट पहुँचे सर्वप्रथम
  - भारत के समुद्री मार्ग की खोज की
  - राजा जमोरिन ने स्वागत किया
- 1505 में → सर्वप्रथम → गवर्नर → फ्रांसिसो डि अल्मीडा
  - पुर्तगाली कम्पनी का
  - ब्लू वाटर नीति (Blue water policy) [Carta e System]
  - व्यापार में लाइसेंस देने का काम
- 1509 में → द्वितीय गवर्नर → अल्फांसो डि अल्बुकर्क
  - सती प्रथा को समाप्त किया।
  - गोवा पर कब्जा किया (1510) → बीजापुर के सुल्तान से
- भारत में तंबाकू और काजू से अवगत करवाया।

→ सबसे पहले आने वाले और सबसे बाद में जाने वाले।

- नीनो - डि- कुन्हा (पुर्तगाली गवर्नर)
- मराठों ने पुर्तगालियों की दो जगह छीन लिया → सलसेट, बसैन — 1739 में

डच :

→ नीदरलैण्ड से

- प्रथम कारखाना → मसूलीपट्टनम (1605 में)
  - वर्तमान में आंध्रप्रदेश

PARMAR SSC

अंग्रेज / ब्रिटिश :

- 1599 में → ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन
- 1600 में → रानी एलिजाबेथ I से शाही चार्टर ले लिया /
- 1608 में → विलियम हाकिन्स आया → जहांगीर के दरबार में /
- 1611 में → पहला कारखाना (अस्थायी) → मसूलीपट्टनम में
- 1613 में, → पहली स्थायी फैक्ट्री / कारखाना → सूरत में
- 1615 में → थॉमस रॉ आया → जहांगीर के दरबार में

डेनिश :

1620 : पहला कारखाना, ट्रांक्यूबार (तमिलनाडु)

1676 : बंगाल के सैरामपुर में

फ्रांसीसी :

- 1668 में → प्रथम कारखाना → सूरत में

फ्रेंच / फ्रांसीसी कॉलोनी → चंदनगर (बंगाल)

अंग्रेजों का विस्तार :

- चिनसुरा का युद्ध / बेदरा का युद्ध → 1759 में

↓

डचों को हराया

↳ हुगली नदी के तट पर

PARMAR SSC

कोलाचेल की लड़ाई : 10 अगस्त 1741

त्रावणकोर साम्राज्य Vs डच ईस्ट इंडिया कंपनी
(हार)

↓

राजा मार्तंड वर्मा

- **स्वाली / सुअली का युद्ध** → 1612 में → पुर्तगालियों को हराया
- **कर्नाटक का युद्ध** → ब्रिटिश व फ्रेंच के मध्य (ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार के युद्ध का हिस्सा)

3 कर्नाटक युद्ध (1744 - 1763) (7 वर्षीय युद्ध)

- **प्रथम कर्नाटक युद्ध** → 1744 से 1748 तक
  - ↳ युद्ध खत्म → संधि → एक्स - ला - चापेल की संधि
- फ्रांसीसी गवर्नर जनरल → जोसेफ फ्रेंकोइस डुप्लेक्स
- **द्वितीय कर्नाटक युद्ध** → 1749 से 1754 → अम्बर के युद्ध के साथ शुरुआत हुई
  - ↳ समझौता - पुडुचेरी की संधि
- **तीसरा कर्नाटक युद्ध** → 1756 से 1763 → बांडीवास का युद्ध (1760)
  - अंग्रेज Vs फ्रांसीसी
  - (विजयी) → आयरकूट
  - कान्ते डि लाली (नेतृत्व)
  - संधि - पेरिस की संधि

बंगाल	→	मुर्शिद कुली खान
अवध	→	सादत खान / सआदत खान बुरहान उल मुल्क
हैदराबाद	→	निजाम - उल - मुल्क असफ जाह

PARMAR SSC

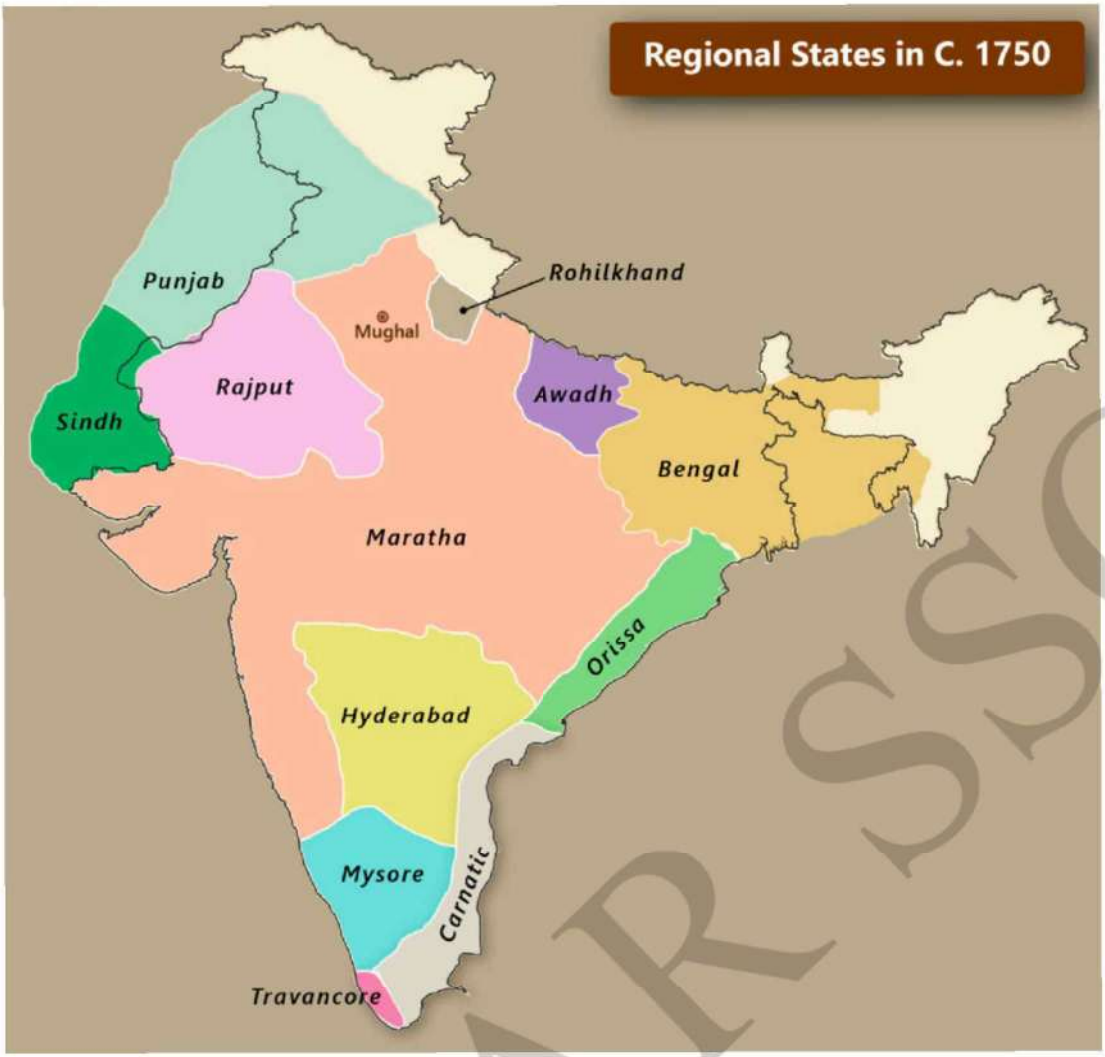

बंगाल में :

- प्रथम नवाब → मुर्शिद कुली खान → वास्तविक नाम - सूर्य नारायण मिश्रा
- फर्रुखसियार ने अंग्रेजों के लिये सुनहरा फरमान जारी कर दिया। (1717)
  - ↳ करमुक्त व्यापार
  - व्यापार का मैग्नाकार्टा

सिराजुद्दौला → 23 वर्ष में नवाब बना।
अलीवर्दी खान की मृत्यु → 9 अप्रैल 1756

- सिराजुद्दौला (अलीवर्दी खान का पौता) ने वापस कर लेने का फरमान जारी किया।
- सिराजुद्दौला ने फोर्ट विलियम में आक्रमण करके अंग्रेजों को कैद कर लिया

PARMAR SSC

और काल कोठरी में डाल दिया जिसमें लगभग 400 अंग्रेजो की मृत्यु हो गयी।

↓ कालकोठरी घटना

प्लासी का युद्ध : 23 जून 1757

- सिराजुद्दौला
- अंग्रेज- राबर्ट क्लाइव (जीता)

प्लासी → बंगाल

↳ पलाश के पेड़ सबसे अधिक उगते हैं।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की औपचारिक शुरुआत

प्लासी के युद्ध के परिणाम :

- सिराज-उद-दौला मारा गया (मीर मदन के नेतृत्व वाली सेना)
- मीर जाफर गद्दी पर बैठा।
- रॉबर्ट क्लाइव द्वारा ब्रिटिश सेना का नेतृत्व।

→ इसके बाद मीर कासिम गद्दी पर बैठा।

→ उन्होंने राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित कर दिया।

बक्सर का युद्ध :

22 अक्टूबर 1764

- नवाब मीर कासिम + अवध के नवाब शुजाउद्दौला + मुगल राजा शाह आलम द्वितीय
- हैक्टर मुनरो (अंग्रेज)

↓

इलाहाबाद की संधि (राबर्ट क्लाइव)

↓

द्वैध शासन का आरम्भ

- दीवानी → अंग्रेज
- निजामत → शाह आलम II

- मीर जाफर फिरसे नवाब बना।

इलाहाबाद की संधि 7 वर्षों तक चली जिसे 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने समाप्त कर दिया।

मैसूर में,

राजवंश - वोडेयार राजवंश

↳ हैदर अली सिंहासन पर बैठा

- ↓ फ्रांसीसी की ओर झुकाव
- → मराठा + हैदराबाद के निजाम के साथ संधि

- **प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध → 1767-69**

  अंग्रेजों व हैदर अली के मध्य समझौता - मद्रास की संधि

- **द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध → 1780-84**

  मंगलौर की संधि

  - कैंसर से हैदर अली की मृत्यु
  - पुत्र टीपू सुल्तान गद्दी पर बैठा।

- **तीसरा आंग्ल मैसूर युद्ध → 1790-92**

  टीपू सुल्तान हार गया

  1. भारी जुर्माना लगाया गया (3करोड़ रु)
  2. उनके दो बेटों को बंधक बना लिया गया।

राजधानी - श्रीरंगपट्टनम

चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध 1798-99

टीपू सुल्तान Vs अंग्रेज वेलेजली

↳ मारा गया

PARMAR SSC

सहायक संधि :

फ्रांसीसी डूप्ले ने दिया
भारत में वैलेजली ने

1798 ई०

→ मैसूर ने चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध के बाद 1798-99 में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए। (टीपू सुल्तान की मृत्यु)

→ कठपुतली शासकों ने सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।

हैदराबाद	→	1798
मैसूर	→	1799
तंजौर	→	1799
अवध	→	1801
पेशवा	→	1802

मराठा में,

- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध → 1775-82
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध → 1803-06
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध → 1817-18

पंजाब में,

12 मिस्ल

महाराजा रंजीत/रणजीत सिंह — सुकरचरिया मिस्ल थे

- मृत्यु- 1839
- पुत्र (मृत्यु)- 1840
- पौत्र- खड़कसिंह (1840)

अमृतसर की संधि

सतलज नदी को बटवारे का आधार बनाया

सिख

ब्रिटिश

- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध → 1845 → लाहौर की संधि

अंग्रेज + महाराजा दिलीप सिंह

PARMAR SSC

अलीवाल का युद्ध (1846) → प्रथम एंग्लो सिख युद्ध का हिस्सा थी।

- भैरोवाल की संधि

- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध → 1848
  - भारत का गवर्नर जनरल डलहौजी
  - दिलीपसिंह को बंदी बनाया गया
    कोहिनूर द्वारा चुरा लिया गया।
    पंजाब का प्रकाश

अफगान :

- प्रथम युद्ध → 1839-42 → जॉन ऑकलैंड (गवर्नर जनरल)
  ↓
  मास्टरली निष्क्रियता की नीति
- द्वितीय युद्ध → 1879-80 → गंडमक की संधि से समाप्त (लिटन)
- तृतीय युद्ध → 1919

सिंध: 1843 में अंग्रेजों ने अपने अधिकार में कर लिया।

आंग्ल-बर्मा युद्ध :

1st : 1824-26 (यंदाबू की संधि)
2nd : 1852
3rd : 1885

सराईघाट का युद्ध → 1671
↳ (मुगल)

PARMAR SSC

- भारत में प्रथम जूट मिल - रिशरा
- भारत में प्रथम कपास मिल → ऑकलैण्ड मिल → कलकत्ता में → 1813
  ↓
  1854 - बॉम्बे में
  Spinning and Weaving मशीन स्थापित की

- पुर्तगाली लेखक → डुआर्टे बारबोसा ने दक्षिण भारत में व्यापार & समाज के बारे में लिखा।
- चंदनगर को बंगाल के तात्कालीन नवाब इब्राहिम खान से अनुमति लेकर एक फ्रांसीसी उपनिवेश के रूप में स्थापित किया।
- कार्नवालिस ने EIC के प्रशासन को पेशेवर बनाया, नौकरशाही बनाया और यूरोपीयकरण किया।
- भारत का पहला अंग्रेजी भाषा का समाचार पत्र - हिक्की का बंगाल गजट
- अलीवाल का युद्ध - आंग्ल-सिख युद्ध
- यंदाबो की संधि (1826 में) - ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने असम पर कब्जा कर लिया।

PARMAR SSC

बंगाल → मुर्शिद कुली खान

अवध → सादत खान / सआदत खान बुरहान उल मुल्क

हैदराबाद → निजाम - उल - मुल्क असफ जाह

फरखशियर (1717)

व्यापार का मैग्नाकार्टा

सिराजुदौला → 23 वर्ष में नवाब बना।

अलीवर्दी खान की मृत्यु → 9 अप्रैल 1756

(प्लासी)

प्लासी → बंगाल

↳ पलाश के पेड़ सबसे अधिक उगते हैं।

1757 भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की औपचारिक शुरुआत

प्लासी के युद्ध के परिणाम :

- सिराज - उद - दौला मारा गया (मीर मदन के नेतृत्व वाली सेना)
- मीर जाफर गद्दी पर बैठा।
- रॉबर्ट क्लाइव द्वारा ब्रिटिश सेना का नेतृत्व।

→ इसके बाद मीर कासिम गद्दी पर बैठा।

→ उन्होंने राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित कर दिया।

(बक्सर)

- मीर जाफर फिरसे नवाब बना।

इलाहाबाद की संधि 7 वर्षों तक चली जिसे 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने समाप्त कर दिया।

PARMAR SSC

राजवंश - वोडेयार राजवंश

→ हैदर अली सिंहासन पर बैठा → मराठा + हैदराबाद के निजाम के साथ संधि

↓ फ्रांसीसी की ओर झुकाव

(2nd)

- कैंसर से हैदर अली की मृत्यु
- पुत्र टीपू सुल्तान गद्दी पर बैठा।

(3rd) राजधानी - श्रीरंगपट्टनम

1. भारी जुर्माना लगाया गया (3करोड़ रु)
2. उनके दो बेटों को बंधक बना लिया गया।

→ मैसूर ने चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध के बाद 1798-99 में सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए। (टीपू सुल्तान की मृत्यु)

→ कठपुतली शासकों ने सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।

आंग्ल - वर्मा युद्ध:

1st : 1824-26 (यंदाबू की संधि)

2nd : 1852

3rd : 1885

सराईघाट का युद्ध → 1671
↳ (मुगल)

अलीवाल का युद्ध (1846) → प्रथम एंग्लो सिख युद्ध का हिस्सा थी।

- भैरोवाल की संधि

(1st अफगान)

(1st) जॉन ऑकलैंड (गवर्नर जनरल)

(2nd) (लिटन)

(~~फ्रांस कॉलोनी~~,

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

सुधार आंदोलन :

- सुधारवादी सुधार लाना चाहते थे और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना चाहते थे।
- पुनरुत्थानवादी पुरानी चीजों को पुनर्जीवित करना चाहते थे।

आंदोलन होने के कारण :

समाज में सामाजिक कुरीतियाँ

- जादू टोना / टोटका
- बहुविवाह
- पर्दा प्रथा
- एक से अधिक भगवानों की पूजा
- छुआछूत

महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।

- बहुविवाह
- सती प्रथा
- विधवा विवाह निषेध

महिलाओं की स्थिति के लिये उठाए गए कदम :

सती प्रथा का अंत : 1829 में राजा राम मोहन राय के प्रयासों से विलियम बैंटिक के काल में

विधवा पुनर्विवाह : विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856

- डीके कर्वे
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयासों से डलहौजी के कार्यकाल में
- विधवा पुनर्विवाह संस्था
  - विधवा विवाह उत्तेजक मण्डल
  - 1853 - विष्णु शास्त्री पंडित
  - 1861 - M.G. रनाडे
- सत्यप्रकाश = करसानदास मुल्जी

PARMAR SSC

बाल विवाह : बी. एम. मालबारी

↳ 1891 में उनकी वजह से पारित

↓

सहमति आयु अधिनियम

Age of consent act, 1891

← 12 साल से कम उम्र की लड़कियों की शादी निषेध

→ **शारदा अधिनियम : 1930**, लड़कियों की आयु 14 व लड़कों की 18 वर्ष

शिक्षा: **मैकुले मिनट** → विलियम बैंटिक के कार्यकाल में (1835)

↳ अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये

↳ अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत दिया

↳ ऊँची जाति / धनी व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखाना, नीची जाति को नही।

→ भारत में अंग्रेजी शिक्षा का जनक - **विलियम बैंटिक**

वुड्स डिसपैच : 1854, अधोमुखी निस्पंदन सिद्धान्त खत्म कर दिया।

↳ अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा

वर्नाकुलर - स्थानीय भाषा

↳ ऊँचे लोगों को स्थानीय भाषा + अंग्रेजी } सिखाया जाये
नीचले लोगों को स्थानीय भाषा

महिला संगठन :

→ महिलाओं के लिये पहला विश्वविद्यालय- DK कर्वे जी द्वारा

↳ भारतीय महिला विश्वविद्यालय (1916)

→ भारत स्त्री महामण्डल → सरला देवी चौधरानी

→ महिला सामाजिक सम्मेलन → रामाबाई रनाडे

→ आर्य महिला समाज → पंडिता रामाबाई सरस्वती

PARMAR SSC

→ अखिल भारतीय महिला सम्मेलन → मार्गरेट कजिन्स (1927)

जाति आधारित शोषण के विरुद्ध संघर्ष :

- **महाड़ सत्याग्रह :** 1927 में, भीमराव अम्बेडकर
  कुएं से पानी पिया, मनुस्मृति को जलाया

- **बहिष्कृत हितकारणी सभा :** 1924, भीमराव अम्बेडकर
  बम्बई में

- **आत्म सम्मान आंदोलन :** दक्षिण भारत में, तमिलनाडु
  E.V. रामास्वामी नाइकर, 1925 में
  (अन्यनाम - पेरियार)

  केरल में - नारायणगुरु
  महाराष्ट्र - ज्योतिबा फूले
  → सभी के लिये, एक धर्म, एक जाति, एक भगवान

राजा राम मोहन राय और ब्रह्म समाज :

अग्रदूत - आत्मीय सभा - 1814 में
↳ कलकत्ता में

राजा राम मोहन राय → भारतीय पुनर्जागरण के पिता

↳ अकबर II द्वारा दी गई उपाधि

हिन्दू कॉलेज की स्थापना 1817 में, कलकत्ता में
↳ डेविड हेयर की सहायता से

1825 में वेदांत कॉलेज

बनारस हिन्दू कॉलेज - 1791 → जोनाथन डंकन ने

रचनायें :
1. एकेश्वरवाद का उपहार
2. जीसस के उपदेश
3. मिरात-उल-अखबार
4. संवाद कौमुदी पत्र

PARMAR SSC

- 1828 → ब्रह्म सभा की स्थापना
- 1839 → तत्वबोधिनी सभा → संस्थापक → देवेन्द्रनाथ टैगोर
  - तत्वबोधिनी पत्रिका (बंगाली भाषा में)
- 1858 में केशव चन्द्र सेन ब्रह्म सभा में शामिल
- 1866 में भंग हो जाती है।

- भारतीय ब्रह्म समाज (केशव चन्द्र सेन)
- आदि ब्रह्म समाज (देवेन्द्रनाथ टैगोर)

↓

1878 - साधारण ब्रह्म समाज

वेद समाज : दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज
1864, मद्रास
- के. श्री धरलु नायडू
- केशव चंद्र सेन

- **धर्म सभा :** 1830 - राधाकांत देव → राजा राममोहन राय के विचार के खिलाफ थे।
- **परमहंस मण्डली :** 1849, दादूबा पांडुरंग ने मेहताजी दुर्गाराम
  - महाराष्ट्र में

- **प्रार्थना समाज :** 1867, आत्मारंग पांडुरंग (आत्माराम)
  - केशवचन्द्र सेन की सहायता से
  - महाराष्ट्र में
  - बाद में MG रनाडे भी शामिल

- **सत्यशोधक समाज :** 1873 में, ज्योतिराव फुले ने
  - माली जाति से
  - महाराष्ट्र में
  - उद्देश्य - जाति प्रथा के विरुद्ध
  - पुस्तक - 1. गुलामगिरी - 1873 (मराठी)
    2. सार्वजनिक सत्यधर्म

(पत्नि
[भारत की पहली महिला अध्यापक - सावित्री बाई फुले।
↳ पूना में पहला बालिका विद्यालय खोला (1848)

PARMAR SSC

आर्य समाज : 1875, स्वामी दयानन्द सरस्वती

वास्तविक नाम - मूलशंकर

- पहली शाखा - बॉम्बे में
- बाद में HQ - लाहौर
- पुस्तक - सत्यार्थ प्रकाश
- नारे - वेदो की ओर लौटो
  भारत, भारतियों के लिये है।
  (पुराणो की आलोचना की)

{चतुर्वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया। (काम के आधार पर जाति)}

{कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।}

- जातिविहीन और वर्गविहीन समाज की वकालत की।
- वह मूर्ति पूजा के खिलाफ थे।

DAV कॉलेज : 1866, लाहौर में

दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज

लाहौर में, 1893

कॉलेज पार्टी | महात्मा पार्टी

- आर्य समाज ने → शुद्धि आंदोलन की शुरुआत की।

↓

ईसाई धर्म में धर्मांतरित होकर हिन्दू धर्म में वापस आने वाले लोगों के शुद्धिकरण के लिये शुरू किया गया।

रामकृष्ण आंदोलन : मूर्तिपूजा

रामकृष्ण परमहंस (कलकत्ता के दक्षिणेश्वर में काली मठ में साधु थे)

वास्तविक नाम → गदाधर चट्टोपाध्याय

शिष्य → स्वामी विवेकानन्द

पुस्तक → राजयोग, कर्मयोग

"मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।"

वास्तविक नाम - नरेन्द्रनाथ दत्त

जन्म - 12 जनवरी 1863

→ राष्ट्रीय युवा दिवस

मृत्यु - 4 जुलाई 1903

PARMAR SSC

- स्वामी विवेकानन्द जी ने **रामकृष्ण मिशन** की शुरुआत की।
  - 1897 में (HQ - बेलूर मठ)
  - गुरु रामकृष्ण परमहंस की शिक्षा का प्रचार प्रसार करने के लिये
- 1893 में → शिकागो (USA) में भाषण दिया।
- स्वामी विवेकानन्द भौतिकवाद और नैतिकतावाद के बीच संतुलन बनाने की वकालत की।

स्वामी विवेकानंद रॉक मेमोरियल → तमिलनाडु (कन्याकुमारी)

सिंह सभा आंदोलन : सिक्ख धर्म के सुधार के लिए
- 1873, अमृतसर

गोपाल गणेश अगरकर : सुधारक (समाचार पत्र) (मराठी) (साप्ताहिक)

- **बालशास्त्री जाम्भेकर :** 2 समाचारपत्र
  - दर्पण
  - दिग्दर्शन

- **गोपाल हरी देशमुख -** लोकहितवादी (ज्ञान प्रकाश, इंदु प्रकाश)
- **सर्वेंट्स ऑफ इंडियन सोसायटी :** गोपालकृष्ण गोखले, 1905 मे
  (Servents of Indian Society)
  - गोपालकृष्ण गोखले ← गांधी जी के राजनीतिक गुरु

- **सोशल सर्विस लीग :** बम्बई मे, नारायण मल्हर जोशी
  - {1920 मे, अखिल भारतीय मजदूर संघ की भी स्थापना की।}

PARMAR SSC

- **सेवा सदन:** 1908, BM मालाबारी ने.

- **देव समाज:** शिवनारायण अग्निहोत्री
  1887 में, लाहौर

- **SNDP आंदोलन:** केरल मे, श्री नारायण गुरु स्वामी थे
  एजहवास जाति के उत्थान के लिये।
  ↓ अरुविपुरम आंदोलन
  → श्री नारायण गुरु धर्म परिपालन (SNDP)

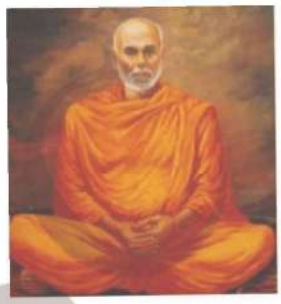

→ एक जाति, एक धर्म, एक भगवान मानव जाति के लिए
(ओरु जाति, ओरु मथम, ओरु दैवम, मनुष्यु)

सतनामी आंदोलन:

- छत्तीसगढ़ क्षेत्र में 1820 के दशक में शुरू
- सतनामी संप्रदाय के गुरु घासीदास द्वारा शुरू किया गया।
  (वह चमड़े के कामगारों के साथ काम करते थे)

- **न्याय आंदोलन:** 1917 में
  CN मुदलियार
  TM नायर } द्वारा
  P त्यागराज

Dr. C. Natesan Dr. T.M. Nair P. Theagarayar

- **मंदिर प्रवेश आंदोलन:** 1927 में, भीमराव अम्बेडकर (उत्तर भारत में)
  1924 में, TK माधवन (दक्षिण भारत में)

- वायकॉम सत्याग्रह - KP केशव

आत्म सम्मान आंदोलन: 1924 → केरल
संस्थापक- ई. वी. रामास्वामी नायकर

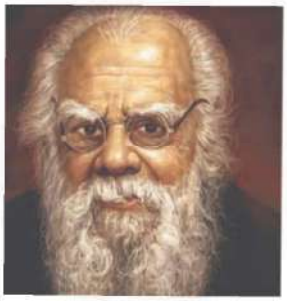

PARMAR SSC

भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक सम्मेलन : MG रनाडे, रघुनाथ राव } 1887, मद्रास में

प्रण आंदोलन - रघुनाथ राव
- बाल विवाह नहीं
- लड़कियों की शिक्षा पर जोर

थियोसॉफिकल सोसायटी : 1875 में, न्यूयॉर्क

HP ब्लावत्सकी, MS अलकाट → HQ → अड्यार, मद्रास (1882 में)

बाद में एनी बेसेंट ने इसकी सदस्यता ग्रहण की।

यंग बंगाल आंदोलन : 1829 में

हेनरी विवियन डेरोजियो (हिंदू कॉलेज → अध्यापक)

अलीगढ़ आंदोलन : सर सैय्यद अहमद खान → पत्रिका → तहदीब-उल-अखलाक

↓ मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज (1875)

→ 1920 में, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

देवबन्द आंदोलन : 1868 में

मुहम्मद कासिम नानोटोवी

रशिद अहमद गंगोही

एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल : 1784, सर विलियम जोन्स

→ विष्णुशास्त्री चिपलूनकर ने सामाजिक सुधार के लिये 1874 में मासिक मराठी पत्रिका - निबन्धमाला शुरू की।

→ मध्य भारत में सतनामी आंदोलन का उद्देश्य - चमड़ा श्रमिकों की सामाजिक स्थिति में सुधार लाना।

→ ब्रह्म वाचा - देवेन्द्र नाथ टैगोर ने

PARMAR SSC

फराज़ी आंदोलन : हाजी शरीयतुल्लाह द्वारा शुरुआत

- एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना- 1784, सर विलियम जोन्स द्वारा
- सामुदायिक नेतृत्व में उनके योगदान के लिए रैमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय आचार्य विनोबा भावे।
- स्त्री-पुरुष तुलना (पुस्तक) → ताराबाई शिंदे

PARAKH SSC

"1857 की क्रांति"

1857 के पहले विद्रोह :

मुख्य कारण — भूमि सुधार

स्थायी बन्दोबस्त : 1793 में, कार्नवालिस द्वारा बंगाल में

जमींदारी प्रथा

सूर्यास्त का नियम- सूरज डूबने से पहले राजस्व लाकर देना होगा।

- मध्यस्थ - जमींदार
- क्षेत्र - बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश

रैयतवाड़ी पद्धति :

रैयत = किसान (रिकार्डो का लगान सिद्धांत)

1820 में, थॉमस मुनरो तथा अलेक्जेंडर रीड मद्रास में

प्रत्येक पंजीकृत भूमिदार को भूमि का स्वामी माना जाता था।

महालवाड़ी व्यवस्था : 1822 में,

होल्ट मैकेन्जी → बंगाल प्रांत में

विलियम बैंटिक → पंजाब प्रांत में

महाल- गांव या जांगीरों को कहा जाता था।

- ग्राम प्रधान राजस्व एकत्र करता था (नियुक्त नहीं)

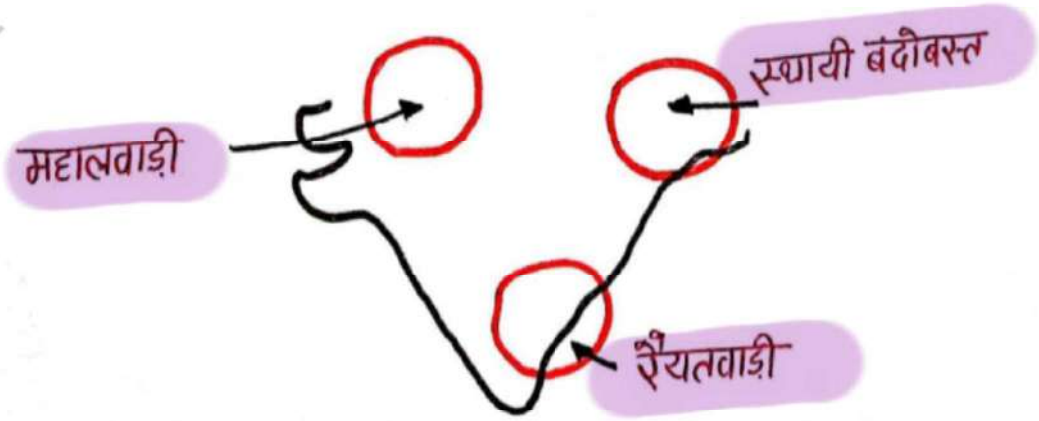

PARMAR SSC

संन्यासी विद्रोह: 1764 में
बिहार, बंगाल प्रांत में
मंजू शाह, भवानी पाठक, देवी चौधरानी

- आनंदमठ (उपन्यास) → बंकिमचंद्र चटर्जी

- **पैका विद्रोह:** 1817 में, उड़ीसा
नेतृत्वकर्ता- बख्शी जगबन्धु विद्याधर

1803 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा खुर्दा (उड़ीसा) की विजय के बाद पाइकों की शक्ति एवं प्रतिष्ठा घटने लगी।

- **अहोम विद्रोह:** 1822 में, असम
नेतृत्वकर्ता- गोमधर कुंवर

सराईघाट का युद्ध: सन 1671 में मुगल साम्राज्य और अहोम साम्राज्य के बीच ब्रह्मपुत्र नदी पर सराईघाट में हुआ था।
→ लचित बोरफुकन
→ नेतृत्व - रामसिंह (शासक - औरंगजेब)
हार

- **पागलपंथी विद्रोह:** 1825, बंगाल में
नेतृत्वकर्ता- करमशाह, टीपू
- **मोपला विद्रोह:** 1836, मालाबार में
- **कोल विद्रोह:** 1831 में
नेतृत्वकर्ता- बुद्धो भगत

- **टो व मुण्डा विद्रोह:** खुण्टकट्टी प्रणाली = सामूहिक स्वामित्व
1899 में, बिरसा मुण्डा

PARMAR SSC

1899 में, बिरसा मुण्डा

रांची, सिंघभूम में;

बाहरी लोगों को ये दिकु बोलते थे।

→ जन्म- 15 नवंबर
↓
जनजातीय गौरव दिवस

→ 15 नवंबर- झारखण्ड स्थापना दिवस
→ मृत्यु- 1900
→ दिकुओं के विरुद्ध
→ उलगुलान विद्रोह

- **सन्थाल विद्रोह:** 1855 में, राजमहल पहाड़ियों मे हुआ।
  संथाल- जंगल/भूमि को साफ करते थे।
  नेतृत्वकर्ता- सिद्धू व कानू
  ↓
  तीसरी सबसे बड़ी जनजाति

→ संथाल जनजाति → भारत की तीसरी सबसे बड़ी
→ दामिनी-ए-कोह (संथालों के लिए सीमांकित भूमि का एक बड़ा क्षेत्र)
  → 1832

- **इण्डिगो / नील विद्रोह:** 1859 में, सफल विद्रोह
  पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में
  सहायक- नील दर्पण पुस्तक → दीनबंधु मित्र
  ↓
  दिगंबर विश्वास (शुरू करने वाले)

→ नेता- दिगंबर विश्वास और बिष्णु विश्वास
→ नील की कृषि, अंग्रेजों के खिलाफ किसानों का विद्रोह
→ यह एक सफल विद्रोह था।

1857 विद्रोह के कारण:

- आर्थिक कारण- पारंपरिक पेशा/व्यवसाय खत्म हो गया।
- सामाजिक धार्मिक कारण

PARMAR SSC

ब्रिटिश नीति: कैनिंग

↳ सामान्य सेवा स्थापना अधिनियम

जिसके तहत आदेश मिलने पर बंगाल सेना के भारतीय सैनिकों को ड्यूटी के लिये विदेश भेजा जा सकता है।

हड़प नीति
↓
डलहौजी

1. सतारा - 1848
2. सम्बलपुर, जैतपुर - 1849
3. उदयपुर - 1852
4. झांसी - 1853

तात्कालिक कारण- 'एनफील्ड' राइफल का प्रचलन

↳ पुरानी ब्राउन बैस बंदूक के स्थान पर एनफील्ड रायफल का प्रयोग एवं कारतूसों में सुअर व गाय की चर्बी मिली होने की सूचना।

कारतूस को बंदूक में भरने से पहले उसे मुंह से काटना पड़ता था, इसलिए हिंदू और मुस्लिम सैनिक इसका इस्तेमाल करने से कतराते थे।

शुरुआत:

29 मार्च 1857 → मंगल पांडे → 34वीं रेजीमेण्ट बैरकपुर

अपने लेफ्टिनेंट बाग की हत्या कर दी।
मेजर ह्यूरसन को गोली मार दी।

फाँसी
8 अप्रैल 1857

- 24 अप्रैल- 3rd नेटिव कैवेलरी ने ग्रीसयुक्त कार्टिज का उपयोग करने से इनकार कर दिया।
- 9 मई- बर्खास्त और 10 साल की सजा।
- 81 वर्षीय बहादुर शाह जफर को सामूहिक रूप से 1857 के विद्रोह के नेता के रूप में चुना गया।

PARMAR SSC

10 मई 1857 को मेरठ की सेना ने विद्रोह कर दिया।

विद्रोह के नेता:

बरेली → खान बहादुर खान (रुहेला)
झांसी → रानी लक्ष्मीबाई (मणिकर्णिका ताम्बे - मनु)
फैजाबाद → मौलवी अहमदुल्लाह
दिल्ली → जनरल भक्त खान (बहादुर शाह II)
लखनऊ → बेगम हजरत महल
कानपुर → नाना साहब / तात्या टोपे

नाना साहब → बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र
→ बिठूर भेज दिया (कानपुर)
→ तीसरे आंग्ल मराठा युद्ध 1818 में

बिहार → कुंवर सिंह
उत्तर प्रदेश → शाहमल

विद्रोह के दमनकर्ता:

दिल्ली → जॉन निकोल्सन
लखनऊ → हेनरी लॉरेन्स
कानपुर → कॉलिन कॉम्पबेल
झांसी → ह्यूरोज

ग्वालियर - 20 जून 1858, विद्रोह को पूरी तरह से दबा दिया गया।

1857 के विद्रोह के बाद:

PARMAR SSC

→ सीधे राजा/ रानी का शासन

1858 का भारत शासन अधिनियम :

ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन खत्म।

सैना में भारतीयों की संख्या कम की गई।

(पील आयोग)

गवर्नर जनरल को वायसराय बना दिया।

↓

पहला वायसराय- कैनिंग

जनरल का सचिव- नयी पद

↳ 15 सदस्यीय परिषद

1857 के विद्रोह की असफलता के कारण :

- सीमित क्षेत्रीय और सामाजिक आधार
- समन्वय और नेतृत्व की कमी
- राजनीतिक दृष्टिकोण का अभाव

1857 के विद्रोह पर टिप्पणियाँ :

→ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (First war of Independance) - वीडी सावरकर

→ 1857 में, कुंवर सिंह के नेतृत्व में जगदीशपुर में अंतरिम सरकार की स्थापना की।

→ वीरपांड्या कट्टाबोम्मन - तमिलनाडु राज्य से

→ Poverty and Unbritish Rule in India - दादा भाई नौरोजी

↳ ब्रिटिश शासन के आर्थिक प्रभाव की तीखी आलोचना की है।

दक्कन विद्रोह - 1875

रामोसी किसान बल - 1879

(वासुदेव बलवंत फड़के

↳ महाराष्ट्र

पबना विद्रोह - 1873-76

ईशान चंद्र रॉय, जमींदारों के उत्पीडन के खिलाफ एक प्रतिरोध आंदोलन।

PARMAR SSC

PARMAR SSC

"भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस"

कांग्रेस से पहले गठित संगठन :

वंगभाषा प्रकाशिका सभा : 1836 में,
राजा राम मोहन राय ने साथियों के साथ

ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन : 1866 में
दादा भाई नौरोजी ने

पूना सार्वजनिक सभा : 1870 में
MG रनाडे ने

इण्डियन लीग : 1875 में
शिशिर कुमार घोष ने → अखबार - अमृत बाजार पत्रिका

इण्डियन एसोसिएशन : 1876 में
सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, आनन्द मोहन बोस

बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन : 1885 में
फिरोजशाह मेहता, KT तेलांग, बदरुद्दीन तैयबजी

मद्रास महाजन सभा : 1884 में → एम. वीरराघवाचारी, जी सुब्रमण्यम, पी आनंद चार्लू

→ भारतीय सिविल सेवा (ICS) परीक्षा पास करने वाले पहले भारतीय - सत्येन्द्र नाथ टैगोर

दादा भाई नौरोजी : ब्रिटिश संसद के सदस्य बनने वाले पहले व्यक्ति (भारतीय)
↳ लिबरल पार्टी से

- पहले व्यक्ति जिन्होंने भारत के राष्ट्रीय आय की गणना की।
- सर्वप्रथम गरीबी रेखा को दिया।
- रस्त गोफ्तार पत्रिका → पारसी समुदाय के लिये
- किताब → Poverty and Unbritish Rule in India
  ↳ धन निष्कासन सिद्धांत दिया।

3 बार कांग्रेस अध्यक्ष (1886, 1893, 1906)
उन्हें 'भारत का वयोवृद्ध पुरुष' कहा जाता है।

- 'स्वराज' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।

PARMAR SSC

कांग्रेस का गठन:

संस्थापक → एलन आक्टोवियम ह्यूम
- पक्षी विशेषज्ञ
- ICS उत्तीर्ण
- भारतीय पक्षी विज्ञान के जनक

पहली बैठक: 1885 में पूना में होनी थी, परन्तु प्लेग फैलने से नहीं हुयी।

1885 में, गोकुलदास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में, बम्बई

72 लोगों ने भाग लिया (महिला X) मुसलमान = 2

इलबर्ट बिल : 1884 इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल

नाम → कर्टेने इल्बर्ट के नामपर

बिल का प्रचार → रिपन ने

→ वरिष्ठ भारतीय मजिस्ट्रेटों को भारत में ब्रिटिश विषयों से जुड़े मामलों की अध्यक्षता करने की अनुमति देने की मांग की गयी थी।

विभिन्न सिद्दांत:

- सैफ्टी वाल्व का सिद्दांत → लाला लाजपत राय ने (यंग इंडिया)
- षडयंत्र सिद्दांत → R.P. दत्त
- तड़ित-चालक का सिद्दांत → गोपाल कृष्ण गोखले

→ कांग्रेस बनने के समय वायसराय → डफरिन

→ कांग्रेस को राजद्रोह की फैक्ट्री कहा

कांग्रेस के महत्वपूर्ण सत्र:

प्रथम अधिवेशन: 1885, बम्बई में

अध्यक्ष- व्योमेश चन्द्र बनर्जी

72 लोग शामिल

दूसरा: 1886 में, कलकत्ता

अध्यक्ष - दादा भाई नौरोजी

434 लोग

PAPMA PSSC

तीसरा : 1887 में, मद्रास में
अध्यक्ष- बदरुद्दीन तैयबजी (प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष)

चौथा : 1888, इलाहाबाद में
अध्यक्ष- जार्ज यूल (पहला अंग्रेज अध्यक्ष)

1896 में : कलकत्ता में
पहली बार वंदे मातरम गाया गया
↓ लिखा — बंकिम चन्द्र चटर्जी
→ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने

1901 में : कलकत्ता में
प्रथम बार गांधी जी की उपस्थिति

1905 में : बनारस में (स्वदेशी)
अध्यक्ष- गोपाल कृष्ण गोखले

1906 में : कलकत्ता में
अध्यक्ष- दादा भाई नौरोजी
4 प्रस्ताव →
- बंगाल विभाजन रद्द करना
- बहिष्कार
- राष्ट्रीय शिक्षा
- स्वदेशी

1907 में : सूरत में
कांग्रेस का विभाजन →
- गर्म दल
- नरम दल

अध्यक्ष- रासबिहारी घोष

1911 में : कलकत्ता में,
पहली बार राष्ट्रगान गाया गया।
→ लिखा — रवीन्द्रनाथ टैगोर

1916 में : लखनऊ में
अध्यक्ष- अम्बिका चरण मजूमदार
कांग्रेस का विभाजन रद्द हो गया।

लखनऊ समझौता / पैक्ट → मुस्लिम लीग + भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

PARMAR SSC

1917 में : कलकत्ता में
अध्यक्ष- एनी बेसेंट (प्रथम महिला अध्यक्ष)

1924 में : बेलगांव (कर्नाटक) में
अध्यक्ष- महात्मा गांधी → एकमात्र अधिवेशन जिसमें गांधी जी ने अध्यक्षता की।

1925 में : कानपुर में,
अध्यक्ष- सरोजिनी नायडू (दूसरी महिला एवं प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष)

1929 में : लाहौर में
अध्यक्ष- जवाहर लाल नेहरु → 26 जनवरी 1930 → पहला स्वतंत्रता दिवस

1931 में : करांची में
अध्यक्ष- सरदार पटेल

1937 में : फैजपुर में, पहला गांव में अधिवेशन
अध्यक्ष - जवाहर लाल नेहरु

1938-1939: गांधी Vs सुभाष चंद्र बोस

→ जन्म - 23 जनवरी (पराक्रम दिवस)

1938 में

हरिपुरा (गुजरात) में अधिवेशन आयोजित किया गया और सुभाष चंद्र बोस को कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।

1939 में

त्रिपुरी (MP) में अधिवेशन आयोजित किया गया और सुभाष चंद्र बोस को पुनः अध्यक्ष चुना गया, लेकिन गांधी जी बोस के पक्ष में नहीं थे, जिसके कारण बोस ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा।

सुभाष चंद्र बोस Vs पट्टाभि सीतारमैया

→ 1939 में राजेंद्र प्रसाद अध्यक्ष चुने गये।

PARMAR SSC

मदन मोहन मालवीय - कांग्रेस के सर्वाधिक बार अध्यक्ष बने।

जेबी कृपलानी - अध्यक्ष जिन्होंने अस्वतंत्र भारत के अंतिम सत्र की अध्यक्षता की।

कांग्रेस के सबसे युवा अध्यक्ष- अबुल कलाम आजाद

"गवर्नर जनरल"

विलियम बेंटिक : (1828-1835) भारत के प्रथम गवर्नर जनरल

- 1829: सती प्रथा का अंत
- ठगी का दमन
- सर्किट न्यायालयों को समाप्त किया।
- आधुनिक शिक्षा का जनक - मैंकुले मिनट (1835)

मेटकाफ (1835-1836) : भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता

डलहौजी (1848-1856) :

- हड़प नीति
- पहली रेल लाइन - 1853 (मुम्बई से थाणे, 34 KM)
- विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856
- डाक अधिनियम, टेलीग्राफ लाइनें पूरे भारत में फैली
- वुड डिस्पैच - 1854 (मैग्नाकार्टा)

मेयो (1869-1872) : उनके समय में पहली जनगणना हुई (1872)

↳ पूर्ण नहीं, लेकिन समन्वित जनगणना

- भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण

↳ शेर अली अफरीदी

PARMAR SSC

लिटन (1876-1880) : • शस्त्र अधिनियम, 1878
• वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, 1878 लाया गया।
• प्रथम समाचार पत्र - 'बंगाल गजट'
↳ जेम्स ऑगस्टस हिक्की

↓
पहला दिल्ली दरबार (1877)

रिपन (1880-1884) : • इल्बर्ट बिल विवाद
• वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट निरस्त & शस्त्र अधिनियम (1882)
• 1st समकालिक/ पूर्ण जनगणना (1881)
• स्थानीय स्वशासन के जनक
• हंटर कमीशन (1882) → शिक्षा से संबंधित
• फैक्ट्री अधिनियम (1881)

वॉरेन हेस्टिंग (1773-85): • बंगाल का पहला गवर्नर जनरल
• रेगुलेटिंग एक्ट 1773
• पिट्स इंडिया एक्ट (1784)

• प्रथम आंग्ल- मराठा युद्ध : 1775-82
→ सालबाई की संधि (1782)

• दूसरा आंग्ल- मैसूर युद्ध : 1780-84
→ हैदर अली ---- टीपू सुल्तान

• एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल - 1784

कार्नवालिस (1786-93): भारतीय सिविल सेवा का जनक, दरोगा प्रणाली

• तीसरा मैसूर युद्ध : (1790-92)
↳ श्रीरंगपट्टनम

• स्थायी बंदोबस्त - 1793
• मृत्यु - भारत
• मकबरा - गाजीपुर

PARMAR SSC

जॉन शोर (1798-98)

वेलेजली (1798-1805):
- 2nd मराठा युद्ध : 1803-05
- 4th मैसूर युद्ध : 1799

- बेसिन की संधि - 1802
  - बाजीराव II

हेस्टिंग (1813-23):
- 3rd मराठा युद्ध : 1817-19
- आंग्ल नेपाल युद्ध : 1814-16
  - सागौली की संधि

- रैयतवारी प्रणाली - 1820
  (मुनरो & रीड)

→ मिंटो I - अमृतसर की संधि (1809)
  - रणजीत सिंह Vs अंग्रेज

मिंटो (1807-13):

ऑकलैंड (1836-42): प्रथम अफगान युद्ध (1838-42)
  - रणजीत सिंह का निधन

हार्डिंग प्रथम (1844-48): प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध (1845-46)
  - लाहौर की संधि

कैनिंग (1856-57): 1857 का विद्रोह
  - EIC समाप्त
  - भारत के प्रथम वायसराय

- 1858 - भारत शासन अधिनियम - वायसराय
- IPC, CrPC

डफरिन: कांग्रेस का गठन

PARMAR SSC

कर्जन (1899-1905):
- बंगाल का विभाजन
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम
- कलकत्ता निगम अधिनियम
- कर्जन किचनर विवाद
- युवा पति मिशन

हार्डिंग II (1910-16): तीसरा दिल्ली दरबार
↳ राजा जॉर्ज पंचम के सम्मान में

राजधानी परिवर्तित : कलकत्ता ⟶ दिल्ली

मिंटो II (1905-10):
- मुस्लिम लीग का गठन (1906) (आगा खाँ द्वारा)
- सूरत विभाजन

चेम्सफोर्ड (1916-21):
- भारत सरकार 1999 में
- मोंटेग्यू चैम्सफोर्ड सुधार
- रौलेक्ट एक्ट
- जलियावाला बाग हत्याकांड

रीडिंग (1921-1926)

→ 1929 में, कांग्रेस ने लाहौर में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की।
→ भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना - 1876, आनंद मोहन बोस
→ 1947 में कांग्रेस के अध्यक्ष - जेवी कृपलानी
→ दिसंबर 1907 में सूरत में राष्ट्रवादी प्रतिनिधियों के सम्मेलन की अध्यक्षता - श्री अरविंदो
→ पूर्ण स्वराज की मांग को अपनाया गया - लाहौर अधिवेशन
→ असहयोग आंदोलन - नागपुर अधिवेशन 1920
→ भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना - 1876 में
→ अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के पहले अध्यक्ष - लाला लाजपत राय
→ ऑस्ट्रेलिया & कनाडा जैसे स्वशासित उपनिवेशों के मॉडल पर ब्रिटिश साम्राज्य में 'स्वराज्य' या स्वशासन का दावा 1905 में कांग्रेस के मंच से प्रस्तुत - गोपाल कृष्ण गोखले

PARMAR SSC

बंगाल विभाजन:

Bengal (1905-1911)

	Bengal (1905-1911)	Eastern-Bengal & Assam (1905-1911)
Area (Km²)	366,692	275,938
Population (Mn)	54	31
Muslims (Mn)	9	18
Muslims (%)	16.67	58.06

1905 में, कर्जन द्वारा (1899-1905) →

कारण- प्रशासनिक सुविधा के आधार पर
लेकिन मुख्य उद्देश्य- बंगाल को कमजोर करना।

बंगाल की जनसंख्या → कुल ब्रिटिश भारत की जनसंख्या का 1/4 भाग
↳ राष्ट्रवादी गतिविधियों का मुख्य केंद्र

कर्जन की क्रांतिकारी नीतियाँ:

- कलकत्ता कार्पोरेशन अधिनियम 1899
- सरकारी गोपनीयता अधिनियम 1904
- भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम 1904
- बंगाल विभाजन 1905

बंगाल {
- पश्चिमी बंगाल - हिन्दू बहुसंख्यक
- पूर्वी बंगाल - मुस्लिम बहुसंख्यक

घोषणा- जुलाई 1905
लागू - अक्टूबर 1905

PARMAR SSC

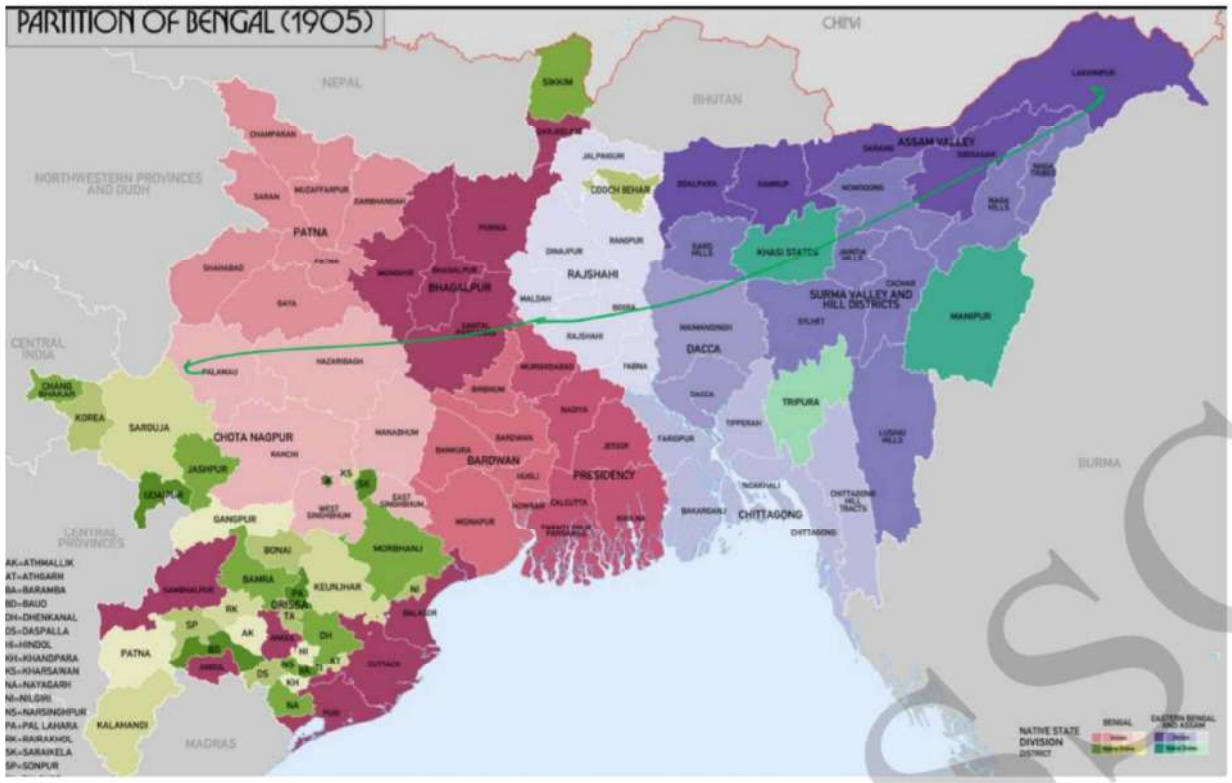

कांग्रेस का 1905 का अधिवेशन: बनारस में

अध्यक्षता - गोपाल कृष्ण गोखले

मुख्य लक्ष्य - विभाजन विरोधी आंदोलन / स्वदेशी आंदोलन

↓

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया गया।

7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउनहॉल में स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा की गई।

1906 का अधिवेशन: कलकत्ता में

अध्यक्ष - दादा भाई नौरोजी

4 प्रस्ताव { स्वराज (लक्ष्य)
बहिष्कार
स्वदेशी
राष्ट्रीय शिक्षा → राष्ट्रीय शिक्षा परिषद

सूरत विभाजन: 1907 में

अध्यक्ष - रास बिहारी घोष

गरम दल नरम दल

नरम (उदारवादी) { सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
के के मित्रा
गोपाल कृष्ण गोखले

→ उदारवादियों द्वारा अपनाये गए तरीके

{ समाचार पत्र निकाले, पर्चे बाटे जाये
पब्लिक मीटिंग करो।

PARMAR SSC

गरमदल { लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल, अरविन्दो घोष

- विदेशी शासन के प्रति घृणा : क्योंकि इससे कोई आशा नहीं मिल सकती थी अतः भारतीयों को अपना उद्धार स्वयं करना चाहिए।
- स्वराज राष्ट्रीय आंदोलन का लक्ष्य होगा।
- सीधी राजनीतिक कार्यवाही की आवश्यकता है।
- जनता में सत्ता को चुनौती देने की क्षमता पर विश्वास।
- व्यक्तिगत बलिदान की आवश्यकता है और एक सच्चे राष्ट्रवादी को इसके लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

चरमपंथियों (गर्मदल) द्वारा अपनायें गये तरीके :

- बहिष्कार किया जाए
- समिति बनायी जाए → स्वदेश बान्धव समिति बनायी गयी
- राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र खोले
- स्वदेशी कम्पनी खोली

अश्विनी कुमार दत्ता ने 1907 में बरीसाल में

→ स्वदेशी स्टीम नेवीगेशन कम्पनी

V.O. चिदम्बरम् पिल्लई ने - तमिलनाडु में

- गणपति मेला व शिवाजी उत्सव किया (महाराष्ट्र)

→ **बाल गंगाधर तिलक :** लोकमान्य कहा जाता है।

'भारतीय अशांति का जनक' कहा → वैलेन्टाइन चिरोल ने

2 पत्रिकायें { मराठा (अंग्रेजी में), केसरी (मराठी में)

विभाजन विरोधी आंदोलन के दौरान समाचार पत्र :

हितवादी	संजीवनी	बंगाली
↓	↓	↓
बिपेन्द्रनाथ टैगोर	कृष्ण कुमार मित्र	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी या गिरीश चन्द्र घोष

PARMAR SSC

अवनींद्र नाथ टैगोर : उन्होंने 1905 में भारत माता की छवि चित्रित की। यह पेंटिंग भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राष्ट्रवाद का प्रतीक थी।

↓

इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट → 1907

→ लोगों ने एक-दूसरे को राखी बांधी → एकजुटता दिखाने के लिये

→ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने एक गाना लिखा → अमार सोनार बांग्ला

↓

बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत

→ स्वदेश गीतम् लिखा → सुब्रमण्यम भारती ने

→ लोगों ने वन्दे मातरम् गाना शुरु किया लेकिन सरकार ने निषेध किया।

नेता :

पुणे व बम्बई से → बाल गंगाधर तिलक

दिल्ली से → सैय्यद हैदर रजा

मद्रास से → V.O. चिदम्बरम् पिल्लई

पंजाब से → लाला लाजपत राय

गाजर और छड़ी नीति- अंग्रेजों द्वारा अपनाया गया मॉडल।

↓

अच्छे व्यवहार व्यवहार के लिए एक इनाम

↳ खराब व्यवहार के लिए एक नकारात्मक परिणाम

मुसलमानों की प्रतिक्रिया :

- विभाजन विरोधी आंदोलन को सपोर्ट नहीं कर रहे थे।
  - ↳ कारण - सपोर्ट न करने से ढाका (मुस्लिम बहुसंख्यक) क्षेत्र मिल जायेगा।
- विभाजन विरोधी आंदोलन के विरोध में एक पार्टी बनायी गयी।

↓

30 दिसंबर 1906 को

मुस्लिम लीग

संस्थापक - नवाब सली मुल्ला, आगा खाँ

PARMAR SSC

भारत शासन अधिनियम 1909 :

मार्ले - मिण्टो सुधार अधिनियम
- सचिव
- वायसराय

- मुस्लिम के लिये पृथक निर्वाचन होगा।
  - मिण्टो लेकर आया
  - सांप्रदायिकता का जनक
- भारत की वायसराय की कार्यपालिका में एक भारतीय होगा।
  - पहले भारतीय → सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा

विभाजन का निरस्तीकरण :

- 1911 में बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया।
- वायसराय हार्डिंग - II → दिल्ली दरबार बुलाया
  - असम, बिहार व उड़ीसा को अलग राज्य का दर्जा
  - राजधानी - दिल्ली होगी (1912 में)
  - राजा जार्ज V के सम्मान में

दिल्ली दरबार
- पहला - 1877 → लिटन द्वारा
- दूसरा - 1903 → कर्जन द्वारा
- तीसरा - 1911 → हार्डिंग II द्वारा

- लाला लाजपत राय → विदेश चले गये
- बाल गंगाधर तिलक → 6 वर्ष की सजा → मांडले जेल
- विपिन चंद्रपाल, अरविंदो घोष → सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्त

क्रांतिकारी गतिविधियाँ :

- 1902 में, अनुशीलन समिति → बंगाल में
  - सतीश चन्द्र बासु ने बनायी
  - जतिन्द्रनाथ बनर्जी, बरीन्द्र कुमार घोष
- पटना में अनुशीलन समिति → सचिन सान्याल द्वारा

PARMAR SSC

- 1879 में, रामोसी पेजेंट फोर्स → महाराष्ट्र में
  वासुदेव बलवंत फड़के ने

- 1890 : शिवाजी और गणपति उत्सव का आयोजन

- 1897 : चापेकर बंधुओं (दामोदर हरी चापेकर & बालकृष्ण हरि चापेकर) द्वारा W.C. रैंड की 22 जून 1897 को हत्या।
  ↳ प्लेग कमिश्नर

- 1899 में, मित्रमेला समिति → पूना में
  सावरकर बंधुओं द्वारा

- 1904 में, मित्रमेला को अभिनव भारत में मिला दिया गया।
  ↓
  V.D. सावरकर ने बनाया

- 1908 में, अलीपुर बॉम्ब षड्यंत्र
  ↳ मणिकटोला बॉम्ब षड्यंत्र भी कहा जाता है।

  प्रफुल्ल चाकी → आत्महत्या कर ली।
  कन्हैयालाल दत्ता
  सत्येन्द्र नाथ बोस
  खुदीराम बोस
  } मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किंग्स्फोर्ड को मारने की योजना बनाई

  खुदीराम बोस / कनाईलाल दत्ता
  ↓ मुजफ्फरपुर जेल मे फांसी
  ↳ उस गवाह को मार डाला जिसने उन्हें बम फेंकते देखा था।

- 1905 में, भारतीय होमरूल सोसायटी, इण्डिया हाउस } → श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में
  ↓
  समाचारपत्र - Sociologist (समाजवादी)

- 1909 में, मदन लाल ढींगरा ने कर्जन वैली / वायली को लंदन मे मारा।

PARMAR SSC

- 1909: एएमटी जैक्सन की अनंत लक्ष्मण कन्हारे द्वारा हत्या।
  - ↳ नासिक

- 1910 : इंडिया हाउस (USA)
  - ↳ तारकनाथ दास & जीडी कुमार

- 1907 में, मैडम भीकाजी कामा → जर्मनी के स्टुटगार्ड में भारत का झण्डा फहराया
  - विदेशी भूमि पर भारत का झण्डा फहराने वाली पहली भारतीय
  - समाचार पत्र → वंदे मातरम

- 1915 में, बर्लिन समिति → वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय ने
- 1913 में, **गदर पार्टी** → सैन फ्रांसिस्को में (USA)
  - ↳ लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना, बर्का तुल्ला, भाई परमानन्द करतार सिंह

- कामागाटामारु कांड : 1914
  - ↳ जापानी जहाज

  सिख व्यापारी ने किराये पर लिया था।

  यात्रा: जापान, फिर हांगकांग और सिंगापुर से कनाडा तक

  {1914 - पहला विश्व युद्ध शुरु

अजीत सिंह:
- भगत सिंह के चाचा
- अंजुमन-ए-मुहिभान-ए-वतन (गुप्त समिति) → लाहौर
- भारत माता पत्र प्रकाशित किया

क्रांतिकारी गतिविधियों की वकालत करने वाले समाचार पत्र:

संध्या & युगांतर (बंगाल)	काल (महाराष्ट्र)	पंजाबी (पंजाब)

↳ लाला लाजपत राय

PARMAR SSC

भारत रक्षा अधिनियम 1915 : गदरवादियों का दमन करना

↳ बाद में स्थायी अधिनियम द्वारा प्रतिस्थापित : रौलेट एक्ट

1914, तीन खंड :
- नरमपंथी
- गरमपंथी
- क्रांतिकारी

नरमपंथी, गरमपंथी → एक कर्त्तव्य के रूप में प्रथम विश्व युद्ध का समर्थन, ब्रिटिशों का

क्रांतिकारी → मौके का फायदा उठाओ।

होमरूल लीग : 1916 में

बाल गंगाधर तिलक	एनी बेसेंट
HQ - पूना	HQ - मद्रास
शाखायें - कम	शाखायें - ज्यादा
अप्रैल 1916	सितम्बर 1916
महाराष्ट्र (बम्बई को छोड़कर) कर्नाटक, मध्य प्रांत,	मद्रास, बम्बई में

एनी बेसेंट → New India, कॉमनवील पत्रिकाएँ

↓ 1920 में, गांधी जी इसी होमरूल लीग को स्वराज्य सभा में बदल देते हैं।

PARMAR SSC

- वैलेन्टाइन चिरोल → 'भारतीय अशांति का जनक' → तिलक
  - पुस्तक - Indian Unrest

लखनऊ अधिवेशन: 1916 में

अध्यक्ष - अम्बिका चरण मजूमदार

गरमदल व नरम दल एक हो गयें — मुख्य भूमिका
- बाल गंगाधर तिलक
- एनी बेसेन्ट

- **लखनऊ पैक्ट:** कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य
- जिन्ना को हिंदू-मुस्लिम एकता का जनक बोला → सरोजनी नायडू नें
- अल हिलाल → मौलाना अबुल कलाम आजाद
  - → इंडिया विन्स फ्रीडम (पुस्तक)
- 'कॉमरेड' के लेखक - मोहम्मद अली जौहर

MCQ's:

- शस्त्र अधिनियम- जिसने भारतीय को हथियार रखने की अनुमति नही दी - 1878 में
- 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता धार लेन पर स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक घोषणा की गयी थी।
- अल्लूरी सीताराम राजू - आंध्रप्रदेश के आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी।

PARMAR SSC

गांधी का अभ्युदय

- जन्म - 2 अक्टूबर 1869 कच्छ
- पिता - करमचन्द गांधी
- माता - पुतली बाई

पूरा नाम - मोहनदास करमचंद गांधी

दक्षिण अफ्रीका में गांधी :

→ नटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना

↳ दक्षिण अफ्रीकी और भारतीयों के विरुद्ध नस्लीय भेदभाव

→ फीनिक्स फार्म (1904) और टॉलस्टॉय फार्म (1910) की स्थापना की।

↓ जॉन रस्किन की पुस्तक Unto the last से प्रभावित होकर

सत्याग्रह की नई तकनीक विकसित हुई

दक्षिण अफ्रीका में :

→ गांधीजी विवाह पंजीकरण अधिनियम के खिलाफ सत्याग्रह में शामिल थे।

→ उन्होंने भारतीयों के प्रवास पर प्रतिबंध के खिलाफ अभियान का नेतृत्व भी किया और जब दक्षिण अफ्रीका में हिंदू विवाहों को मान्यता नहीं दी गई।

भारत में गांधी :

→ गांधीजी भारत 9 जनवरी 1915 को वापस आयें।

↓ राजनैतिक गुरु

↳ गोपाल कृष्ण गोखले

↳ (9 जनवरी) प्रवासी भारतीय दिवस

PARMAR SSC

- 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन के दौरान गांधीजी पहली बार सार्वजनिक रूप से उपस्थित हुए।
- BHU के संस्थापक - मदन मोहन मालवीय

चम्पारण सत्याग्रह : राजकुमार शुक्ला ने गांधी जी को आमंत्रित किया।

- 1917, बिहार में
- प्रथम सविनय अवज्ञा आंदोलन

तिनकठिया पद्धति : 3/20 भूमि पर नील की खेती करनी होती थी।

चंपारण कृषि अधिनियम : इस अधिनियम ने तिनकठिया प्रणाली और अबवाब कर को भी निलंबित कर दिया गया।

- चंपारण सत्याग्रह में शामिल अन्य लोग- राजेन्द्र प्रसाद
  मजहर-उल-हक
  जे. बी. कृपलानी
- भारत में गांधीजी का पहला सत्याग्रह : चंपारण सत्याग्रह यह एक सफल आयोजन था।

अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन : अनुसुइया साराबाई ने आमंत्रित किया।

- 1918 में, गांधी जी की प्रथम भूख हड़ताल
- प्लेग बोनस : 70% - 80%

अहमदाबाद में मिलों के मजदूरों ने आर्थिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जब मील मालिकों ने प्लेग बोनस देना बंद कर दिया।
50% वेतन वृद्धि की मांग की।

PARMAR SSC

खेड़ा सत्याग्रह:

- 1918
- गुजरात
- पहला असहयोग आंदोलन

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने गांधी जी को आमंत्रण दिया।

→ किसानों का अंग्रेज सरकार की कर-वसूली के विरुद्ध एक सत्याग्रह (आंदोलन) था।

→ खराब फसल व प्लेग के कारण किसानों ने कर देने से मना कर दिया।
(फसल की उपज 25% से कम थी)

यह गांधीजी का पहला असहयोग आंदोलन था।

1928 के बारडोली सत्याग्रह में महिला प्रतिभागियों द्वारा वल्लभभाई पटेल को दी गई 'सरदार' की उपाधि।

भारत शासन अधिनियम 1919:

→ मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार

मोंटेग्यू - सचिव
चेम्सफोर्ड - वायसराय

- प्रथक निर्वाचन मुस्लिमों के साथ-साथ
- पारसियों व एंग्लो इंडियन को भी दिया

सरकार
- केन्द्र
- प्रांतों में → द्वैध शासन
  - आरक्षित → (गवर्नर)/राज्यपाल द्वारा अपनी कार्यकारी परिषद के माध्यम से प्रशासित
    जैसे- भू-राजस्व, पुलिस, वित्त
  - स्थानांतरित → विधान परिषद के मंत्रियों द्वारा प्रशासित
    जैसे- कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा

- द्वैतशासन लागू कर दिया।
- केन्द्र में भी द्विसदनीय विधानमण्डल की शुरुआत

PARMAR SSC

रॉलेक्ट सत्याग्रह : 1919

रॉलेक्ट एक्ट → सरकारी नाम

The Anarchical and Revolutionary Crime act of 1919

सिडनी रॉलेक्ट की अध्यक्षता में

{ अराजक और क्रान्तिकारी अपराध अधिनियम

'गांधी जी ने इसे काला कानून कहा।'

→ किसी भी भारतीय पर अदालत में बिना मुकदमा चलाए उसे जेल में बंद कर सकता था।
अपराधी को उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करने वाले का नाम जानने का अधिकार भी समाप्त कर दिया गया।

1915- भारत रक्षा अधिनियम

"नो दलील, नो वकील नो अपील सीधा जेल"

- जिन्ना, मदन मोहन मालवीय, मजहर-उल-हक ने अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम के विरोध में इस्तीफा दे दिया था।

6 अप्रैल → सत्याग्रह लागू कर दिया गया।

9 अप्रैल → गिरफ्तार कर लिया गया { डॉ० सत्यपाल, सैफुद्दीन किचलू

13 अप्रैल → बैसाखी का दिन → अमृतसर में → जलियावाला बाग हत्याकांड

- अमृतसर के जलियाँवाला बाग में लोग दो कारणों से एकत्रित हुए थे:

→ बैसाखी के कारण

→ सैफुद्दीन किचलू और डॉ. सत्यपाल की गिरफ्तारी के कारण।

जनरल डायर ने एकमात्र निकास द्वार बंद कर दिया और भीड़ पर गोलियां चला दी।

उधम सिंह → ने माइकल ओ डायर को गोली मारी → आरोपी

↓ 1920

राम मोहम्मद सिंह आजाद नाम रखकर लंदन में शहीद हुये।

PARMAR SSC

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि लौटा दी।
गांधी जी ने अपनी 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि लौटा दी। (बोअर युद्ध के दौरान मिली)

- स्वर्ण मंदिर में अरुण सिंह कोलजी ने रेजिनाल्ड डायर को 'सिख' की उपाधि दी, जिसके कारण बाद में 1920 में गुरुद्वारा सुधार आंदोलन शुरू किया गया।

हंटर आयोग: जलियावाला बाग हत्याकांड के लिए।

- रेजिनाल्ड डायर के कार्यों की जांच के लिए हंटर आयोग की स्थापना की गई, लेकिन कोई दंडात्मक कार्यवाही नहीं की गई।

क्षतिपूर्ति अधिनियम → मॉर्निंग पोस्ट नाम का फंड।
↓ क्षतिपूर्ति अधिनियम: वाइट वाशिंग बिल
↓ मॉर्निंग पोस्ट: डायर के लिए
रुडयार्ड किपलिंग ने भी इसमें धन लगाया था।

खिलाफत आन्दोलन:

कारण: प्रथम विश्व युद्ध जीतने के बाद तुर्की में बैठे खलीफा को हटा दिया गया था।

↓ खिलाफत समिति बनायी गयी
- मौलाना अली
- शौकत अली

अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन 1919 - दिल्ली
↓ अध्यक्ष - गांधी जी
→ कांग्रेस & बी.जी. तिलक द्वारा विरोध।

अबुल कलाम आजाद भी शामिल थे।

मौलाना हसरत मोहानी ने नारा दिया - 'इंकलाब जिंदाबाद', बाद में भगतसिंह द्वारा लोकप्रिय हुआ।

1920
- कलकत्ता में खिलाफत आंदोलन अपना लिया
- नागपुर अधिवेशन में

कांग्रेस कार्यसमिति का गठन किया गया। → 15 सदस्य
बहुत ही ज्यादा कानूनी तरीके से काम करेंगे।

कांग्रेस ने खुद को अतिरिक्त संवैधानिक जनसंघर्ष घोषित किया।
↓
इस्तीफा दिया- एम.ए. जिन्ना, एनी बेसेंट, बी.सी. पाल

PARMAR SSC

- भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति संघ - सुरेन्द्रनाथ बनर्जी द्वारा गठन

असहयोग आंदोलन : हिन्दू + मुस्लिम एकता

तिलक स्वराज फंड - 1921
↳ तिलक की स्मृति में

स्थानीय आंदोलन :

- एका आंदोलन UP (1921), मदारी पासी द्वारा
- मोपिला विद्रोह (1921) → मालाबार विद्रोह
- महंत को हटाने के लिए सिख आंदोलन (1921)

अवध किसान आंदोलन → एक किसान आंदोलन भी शुरु हुआ।

→ खिलाफत आंदोलन में असहयोग आंदोलन का समर्थन:

↓ प्रसार

- राष्ट्रीय स्तर पर स्कूल और कॉलेज स्थापित किए गए।
- जैसे - जामिया मिलिया, काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ
- विदेशी कपड़े जलाए गए।
- स्वराज फंड के माध्यम से 1 करोड़ रु एकत्र किये गए।

असहयोग आंदोलन के बाद :

5 फरवरी 1922 : चौरी-चौरा हत्याकाण्ड (चौरी-चौरा, गोरखपुर का एक गाँव है)

↓

स्थानीय विरोध प्रदर्शन के कारण पुलिस स्टेशन में आग लग गई, जिससे 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।

गांधी जी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। (1922 में जेल चले गये)

PARMAR SSC

बारडोली में कांग्रेस अधिवेशन में असहयोग आंदोलन को आधिकारिक रूप से स्थगित कर दिया गया। इसके बाद राजनीतिक शून्यता पैदा हो गई।

परिषदों का बहिष्कार किया गया
↓
अपरिवर्तनवादी ← राजेंद्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल, एम.ए. अंसारी
↓
रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केन्द्रित किया जैसे - आश्रम, स्कूल बनवाये।

परिषदों में प्रवेश
↓
परिवर्तनवादी → CR दास, मोतीलाल नेहरू, अजमल खान
↳ गांधी ने इस विचार का विरोध किया।

1922 गया अधिवेशन: दिसंबर, परिवर्तवादियों ने अपनी अलग पार्टी बनाई
↓
अखिल भारतीय खिलाफत स्वराज पार्टी (1 जनवरी 1923)
→ सी आर दास (अध्यक्ष)
मोतीलाल नेहरू (सचिव)
↓
सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक - 1928

स्वराज पार्टी 2 भागों में विभाजित हो गयी।
- उत्तरदायी
- गैर-उत्तरदायी

1925 में, CR दास की मृत्यु के बाद।

→ 1924 में बेलगाम अधिवेशन में कांग्रेस के भीतर स्वराज पार्टी को स्वीकार किया गया।

PARMAR SSC

PARMAR SSC

समाजवाद, साइमन और सविनय अवज्ञा आंदोलन

समाजवाद का सिद्धांत: कार्ल मार्क्स → समाज से धनी वर्ग को हटाने का एकमात्र विकल्प - जन संघर्ष है।

समाजवाद के कारण: कार्ल मार्क्स की विचारधाराएँ भारत में भी फैलने लगी।
↳ रूसी विद्रोह (1917)

पार्टियों का गठन:

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी: 1920 में, ताशकंद, उज्बेकिस्तान में
1925 में औपचारिक रूप से कानपुर में गठन
गठनकर्ता: एम एन रॉय

1924 में, कानपुर बोल्शविक केस
- SA डांगे
- मुजफ्फर अहमद
- शौकत उस्मानी
- नलिनी गुप्ता

1929 में, मेरठ षड्यंत्र केस

AITUC: ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस → 1920 में
- नारायण मल्हर जोशी
- लाला लाजपत राय → पहले अध्यक्ष
- दीवान चमन राय
- जोसेफ बैपटिस्टा

जाति आंदोलन: बॉम्बे मिल हैंड्स एसोसिएशन → 1884, नारायण मेघाजी लोखंडे

आत्म सम्मान आंदोलन → EV रामास्वामी नायकर

महद सत्याग्रह (महाड़) → डॉ० भीमराव अम्बेडकर - 1927
↓
केरल में इनको पेरियार नाम से जाना जाता है।

बहिष्कृत हितकारिणी सभा → दलितों के कल्याण के लिए, डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा, 20 जुलाई 1924, बम्बई

1930, उत्तर भारत में, मंदिर प्रवेश आंदोलन, B.R. अम्बेडकर

PARMAR SSC

उपन्यास & पुस्तकें :

- बंदी जीवन → सचिन सान्याल
- पाथर डाबी → शरतचन्द्र चटर्जी
- फिलॉस्फी ऑफ बॉम्ब → भगवतीचरण वोहरा

उत्तर प्रदेश, बिहार & पंजाब मे :

हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन : 1924 कानपुर मे गठन

(HRA)

↳ रामप्रसाद बिस्मिल
जोगेश चन्द्र चटर्जी
सचिन सान्याल

↓

काकोरी एक्शन : 1925

काकोरी गांव (लखनऊ)

↳ रामप्रसाद बिस्मिल
अस्फाक उल्ला खान
रौशन सिंह
राजेन्द्र लाहिड़ी
} फांसी की सजा

HRA —परिवर्तित→ HSRA → हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन
1928 फिरोजशाह कोटला, दिल्ली

↳ चंद्रशेखर आजाद
भगत सिंह
सुखदेव
राजगुरु

- पंजाब नौजवान सभा → 1926
  ↳ भगतसिंह ने

- 1928 : लाला लाजपत राय → • पंजाब केसरी
  - लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन का विरोध किया और 'साइमन वापस जाओ' का नारा लगाया।

- 1928 → भगतसिंह, राजगुरु & सुखदेव
  ↳ स्कॉट की जगह सॉन्डर्स को मार दिया गया।
  ↳ लाहौर में, लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए।

- 1929 → केन्द्रीय विधानसभा में बम फेंका। उद्देश्य: बहरों को सुनाना
  - ↓ सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक के खिलाफ ← राष्ट्रवाद विरोधी
  - → भगत सिंह
  - → बटुकेश्वर दत्त

- **लाहौर षड्यंत्र केस:** 23 मार्च 1931 को फांसी दी गयी।
  - शहीद दिवस
  - → भगतसिंह, राजगुरु & सुखदेव

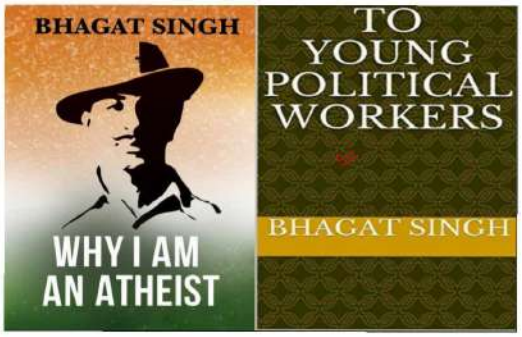

27 फरवरी 1931:
→ चंद्रशेखर आजाद ने आत्महत्या कर ली।

1929: इरविन को मारने की कोशिश की गई।

अल्फ्रेड पार्क → चंद्रशेखर आजाद पार्क

बंगाल में:

चिटगांव शस्त्रागार लूट: 1930
नेतृत्वकर्ता - सूर्यसेन (मास्टर दा)

शामिल महिलायें-
- प्रीतिलता वाडेकर
- कल्पना दत्ता
- सुनीति चन्देरी
- वीना दास

PARMAR SSC

भारत शासन अधिनियम 1919 : मांटेग्यू- चेम्सफोर्ड सुधार

10 वर्ष बाद (लेकिन) ↓

1927- साइमन कमीशन बनता है।
pm- स्टैनले बाल्डविन

साइमन आयोग: 1928 में साइमन कमीशन भारत आया।
'साइमन वापस जाओ' के नारे लग रहे थे।

7 सदस्यीय समिति थी → सभी अंग्रेज

'साइमन वापस जाओ' नारा दिया
↳ युसुफ अली

कांग्रेस का मद्रास अधिवेशन : 1928 (अध्यक्ष - एम ए. अंसारी)
↳ साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय
↳ विशेष सत्र (केवल आपातकाल में)

साइमन कमीशन के प्रति प्रतिक्रिया:

- सचिव - बर्किन हेड (भारतियों को चुनौति दी)
- नेहरू रिपोर्ट → मोती लाल नेहरू (1928)
  ↳ **मांगे:** पृथक निर्वाचन क्षेत्र की समाप्ति/
  डोमिनियन दर्जे की मांग।

समर्थन किया: अम्बेडकर
हिंदू महासभा → 1915, मदन मोहन मालवीय

इंडियन इंडिपेंडेंस लीग → 1928, जवाहर लाल नेहरू
सुभाष चंद्र बोस

सिफारिशें:

- द्वैध शासन व्यवस्था का उन्मूलन।
- भारत में संघीय शासन प्रणाली ४ लागू की जानी चाहिए।
- विस्तारित मतदान अधिकार

PARMAR SSC

- पृथक मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र।
- सिंध को बम्बई से अलग करने को अस्वीकार कर दिया।
- सीमांत क्षेत्र की समान दर्जे की मांग को भी नजरअंदाज कर दिया गया।
- केन्द्रीय असेंबली में एक तिहाई मुस्लिम सीटों को अस्वीकार कर दिया गया।

- मुस्लिम लीग ने → दिल्ली प्रस्ताव
- मोहम्मद अली जिन्ना ने → जिन्ना 14-सूत्री मांग
- कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में → साइमन आयोग का बहिष्कार किया गया
  ↓
  अध्यक्ष- MA अंसारी

कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन → नेहरू रिपोर्ट को अपनाया गया।

इरविन का घोषणापत्र/ दिल्ली घोषणापत्र :

लंदन में गोलमेज सम्मेलन इरविन द्वारा

कांग्रेस ने दिल्ली घोषणापत्र जारी किया
↓
डोमिनियन स्टेट्स कब लागू होगा ?

→ सबसे पहले भारत के लिए डोमिनियन स्थिति की मांग की - तेज बहादुर सप्रू
एम आर जयकर

लाहौर अधिवेशन : 1929, अध्यक्ष- जवाहर लाल नेहरू

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार
- पूर्ण स्वराज का लक्ष्य निर्धारित किया गया।
- 26 जनवरी 1930 को पहला स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे।
- 30 दिसंबर 1930 को रावी नदी के तट पर झण्डा फहराया गया।
  'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगाये गये।
- "इंकलाब जिंदाबाद" → मौलाना हसरत मोहानी ने नारा दिया।
- गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।

31 जनवरी 1930 : गांधी जी की मांगें।

PARMAR SSC

गांधीजी ने अपनी ग्यारह मांगें रखीं और कहा कि यदि 11 मार्च 1930 तक उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं तो वे 12 मार्च 1930 को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू कर देंगे। उनकी ग्यारह मांगें थीं:

1. सेना और सिविल सेवाओं पर व्यय कम करें।
2. पूर्ण शराबबंदी। 10. भू-राजस्व कम करें 50% तक
3. सीआईडी में सुधार। 11. नमक कर समाप्त किया जाए।
4. लाइसेंस जारी करने की अनुमति देने के लिए शस्त्र अधिनियम में बदलाव किया जाएगा।
5. सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करें।
6. डाक आरक्षण बिल स्वीकार करें।
7. रुपया-स्टर्लिंग विनिमय अनुपात कम करें।
8. विदेशी वस्त्र पर सुरक्षात्मक टैरिफ।
9. तटीय नौवहन को भारतीयों के लिए आरक्षित किया जाए।

दांडी मार्च: 12 मार्च - 6 अप्रैल 1930 (240 मील)

साबरमती से दाण्डी तक पैदल यात्रा की।
↳ नवसारी/नौसारी जिला

78 लोग शामिल हुये।
↓
नमक कानून तोड़ा

गांधी जी ने धरसाना पर धावा मारने का निर्णय लिया
↳ 4 मई, गिरफ्तार हुये

नमक सत्याग्रह का प्रसार: कांग्रेस कार्यसमिति ने

रैयतवाड़ी क्षेत्र में → राजस्व नहीं देंगे।
जमींदारी क्षेत्र में → चौकीदारी कर नहीं देंगे।
मद्य प्रांत में → वन हानि की अवज्ञा

अन्य राज्यों में नेतृत्वकर्ता (नेता):

तमिलनाडु → सी. राजगोपालाचारी (तिरुचिरापल्ली से वेदरन्यम)
मालाबार → के. कलप्पन (वाइकोम सत्याग्रह)
उड़ीसा → गोपालबन्धु चौधरी
बिहार → अम्बिकाकान्त सिन्हा
↓
नाखस पॉड से नमक कानून के लिये नियुक्त किया गया
पेशावर → खान अब्दुल गफ्फार खान / बादशाह खान
↳ लालकुर्ती आंदोलन ↳ सीमांत गांधी
↳ खुदाई खिदमदगार आंदोलन चलाया

PARMAR SSC

धरसाना → सरोजिनी नायडू महिलाओं की भागीदारी

मणिपुर व नागालैण्ड → रानी गैडिनलियू

लामबंदी के रूप :

- प्रभात फेरी बनायी गयी
- वानर सेना
- मंजिरी सेना

कमला देवी चटोपाध्याय →
अकेले पुरुषों के लिए प्रतिबंध मत करो।

- वकील अपनी वकालत/अभ्यास छोड़ सकते हैं।
- सरकारी कर्मचारी इस्तीफा दे सकते हैं।

गांधी-इरविन समझौता : इरविन ने कहा- सविनय अवज्ञा आंदोलन खत्म किया जाए व गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया जाये।

14 फरवरी 1931 :

गांधी जी की माँगे :

- राजनीतिक कैदियों को रिहा करो जो हिंसा के दोषी नहीं हैं।
- आन्दोलन के दौरान जब्त सम्पत्ति को वापस किया जाये।
- भारतीयों को समुद्र किनारे नमक बनाने का अधिकार दिया जाये।

कराची अधिवेशन : 29 मार्च 1931
अध्यक्ष - सरदार पटेल

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय
- सविनय अवज्ञा आंदोलन को खत्म करेंगे।
- पूर्ण स्वराज का वास्तविक अर्थ बताया गया।
- मौलिक अधिकार एवं राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम को अपनाया गया।

गोलमेज सम्मेलन :

↳ साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करने के लिये।

- प्रथम गोलमेज सम्मेलन → 1930
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन → 1931 → गांधी + कांग्रेस ने भाग लिया।
- तृतीय गोलमेज सम्मेलन → 1932

→ भीमराव अम्बेडकर तीनों गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने वाले एकमात्र व्यक्ति थे।

PARMAR SSC

भारत छोड़ो आंदोलन:

सांप्रदायिक पुरस्कार: 16 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड द्वारा भारत में उच्च वर्ग, निम्न वर्ग, मुस्लिम, बौद्ध, सिख, भारतीय ईसाई, एंग्लो इंडियन, पारसी और दलित आदि के लिये अलग-अलग चुनाव क्षेत्र के लिए ये अवार्ड दिया।

→ गांधी जी ने इसका विरोध किया।

→ अम्बेडकर जी ने समर्थन किया।

'दलित वर्गों' के लिए पृथक निर्वाचिका भी लाई गई (1932)

└→ गोलमेज सम्मेलन में अम्बेडकर जी द्वारा पहली बार

पूना समझौता: 1932

गांधी जी ने यरवदा जेल में रहते हुये आमरण अनसन की शुरुआत कर दी।

अखिल भारतीय अस्पृश्यता लीग - महात्मा गांधी (संस्थापक)

हरिजन सेवक संघ की स्थापना ←

↓ हरिजन पत्रिका (साप्ताहिक)

→ पूना समझौते पर गांधी जी की जगह मदन मोहन मालवीय ने साइन किये थे।

अम्बेडकर और गांधी/ मदन मोहन मालवीय के मध्य

समझौता - अंग्रेजों द्वारा सांप्रदायिक निर्णय वापस लिया जायेगा और सीटों के आरक्षण में वृद्धि की जाएगी, पृथक निर्वाचिका का परित्याग किया जाएगा।

भारत शासन अधिनियम 1935:

→ द्वैध शासन को समाप्त कर दिया गया। (प्रांतों से)

→ केन्द्र में द्वैध शासन लागू किया गया।

→ अखिल भारतीय महासंघ की बात कही।

PARMAR SSC

6/11 प्रांतो में → द्विसदनीय विधायिका

1937 चुनावों में → कांग्रेस को बहुमत मिला 716/1161

↳ सभी प्रांतो में बहुमत सिवाय- बंगाल, असम, पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र

कांग्रेस अधिवेशन :

1936 में : लखनऊ में

अखिल भारतीय किसान सभा का गठन - 1936

↳ स्वामी सहजानन्द सरस्वती (संस्थापक)

1934 में : कांग्रेस समाजवादी पार्टी

- जे॰पी॰ नारायण
- राम मनोहर लोहिया
- आचार्य नारायण देव
- मीनू मसानी

1937 में : फैजपुर में

↳ पहला गांव में होने वाला अधिवेशन

महाराष्ट्र (जलगांव जिला)

1938 में : हरिपुरा में (गुजरात)

↳ अध्यक्ष - सुभाष चन्द्र बोस

राष्ट्रीय योजना समिति - 1938 में

गठन - सुभाष चन्द्र बोस ↳ पहले अध्यक्ष - जवाहर लाल नेहरू

1939 में : पट्टाभिसीतारमैया (हार) → गांधी का बयान - यह सीतारमैया की नहीं बल्कि मेरी हार है।

Vs

सुभाष चन्द्र बोस (जीत)

↳ कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया।

PARMAR SSC

ऑल इण्डिया फॉरवर्ड ब्लॉक → सुभाष चन्द्र बोस

उन्नाव, उत्तर प्रदेश
(कांग्रेस के भीतर)

1939 द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत

मित्रराष्ट्र	धुरी राष्ट्र
ब्रिटेन	जर्मनी → एडोल्फ हिटलर (नाजी जर्मनी) + सोवियत संघ (USSR) पोलैंड पर हमला किया।
USA	इटली
रूस	जापान

{ हिटलर की आत्मकथा - मीन कैम्फ (Mein Kampf)

- कांग्रेस ने वायसराय को प्रस्ताव दिया - Offer
  - ↓ लिनलिथगो
  - संविधान सभा की माँग
  - जिम्मेदार सरकार की माँग

अक्टूबर 1939: कांग्रेस के मंत्रियों ने इस्तीफा दिया

कारण - बिना भारतीयों से पूछे उन्हें द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल कर लिया गया था।

- मुस्लिम लीग ने 22 दिसंबर 1939 को मुक्ति दिवस की घोषणा की।
- तत्कालीन PM : द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन के विंस्टन चर्चिल।

1940: अगस्त प्रस्ताव: अंग्रेजों ने डोमिनियम राज्य का प्रस्ताव रखा।

↳ गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया { 1. विनोबा भावे, 2. जवाहर लाल नेहरू, 3. ब्रह्म दत्त

(कांग्रेस & मुस्लिम लीग द्वारा अस्वीकृत)

- गांधी जी ने डोमिनियन स्टेटस को 'एक सफल असफल बैंक पर पोस्ट डेटेड चेक' बताया था।

PARMAR SSC

1942 - क्रिप्स मिशन : सर स्टैफोर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता में

- डोमिनियन राज्य के दर्जे के साथ एक भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव अंग्रेजी सरकार ने रखा।
- संविधान निर्मात्री परिषद द्वारा निर्मित संविधान जिन प्रांतों को स्वीकार नहीं होगा, वे भारतीय संघ से पृथक होने के अधिकारी होंगे।

क्रिप्स मिशन के प्रस्ताव :

- संविधान सभा का गठन
- डोमिनियन स्थिति के साथ भारतीय संघ
- नये संविधान की स्वीकृति
- ब्रिटिश सत्ता का जारी रहना।

कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक, वर्धा (महाराष्ट्र) में हुई।

जुलाई 1942 में : वर्धा में भारत छोड़ो आंदोलन को अपनाया गया।

↓

कांग्रेस ने ग्वालिया टैंक सम्मेलन में इसकी पुष्टि की गयी।

भारत छोड़ो आंदोलन : 1942 में

बिना किसी नेतृत्व (नेता) का आंदोलन

- → अरुणा आसफ अली ने आगे बढ़ाया
- → गांधी जी ने 'करो या मरो' का नारा दिया
- → ग्वालिया टैंक मे भारतीय ध्वज फहराया।

भूमिगत गतिविधियाँ :

ऊषा मेहता → भूमिगत रेडियो चलाया - बॉम्बे

समानान्तर सरकारें स्थापित हुई

- बलिया → चित्तू पांडे
- तामलुक → जातिया सरकार
- सतारा → प्रति सरकार (YB चौहान, नाना पाटिल)

- → पहले दिन सभी नेता गिरफ्तार कर लिए गए।
- → यह एक नेतृत्वविहीन आंदोलन था।
- → अरुणा आसफ अली ने कांग्रेस कार्यसमिति की अध्यक्षता की।

PARMAR SSC

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गांधीजी द्वारा की गई अपीलें :

- सरकारी कर्मचारी इस्तीफा न दें, बल्कि कांग्रेस के प्रति वफादार रहें।
- सैनिक : इस्तीफा न दें और अपने देशवासियों पर गोली न चलाएं।
- किसान: यदि जमींदार अंग्रेजों के प्रति वफादार हैं तो उन्हें कर नहीं देना होगा।
- रियासतों से की गई अपीलें: यदि शासक सरकार विरोधी हैं तो उसका समर्थन करें।

→ मुस्लिम लीग व हिन्दू महासभा समर्थन में नहीं थे।

- 23 मार्च 1943 → मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान दिवस मनाया गया।

- CR सूत्र अथवा राजाजी सूत्र → सी. राजगोपालाचारी : 1944 → विफल
- देसाई लियाकत पैक्ट → भूलाभाई देसाई (कांग्रेस) & लियाकत अली खान (मुस्लिम लीग) द्वारा (1944)

अगस्त 1945 : हिरोशिमा और नागासाकी (जापान के दो शहर) में क्रमशः 16 अगस्त और 9 अगस्त को बम गिराए गए।
हिरोशिमा पर गिराए गए बम को 'लिटिल बॉय' के नाम से जाना जाता है।

- वैवेल योजना → 1945 में शिमला सम्मेलन

भारतीय राष्ट्रीय सेना & सुभाष चन्द्र बोस :

स्थापित → सिंगापुर में
कैप्टन मोहन सिंह
रास बिहारी बोस
सुभाष-चन्द्र बोस → जर्मनी में हिटलर से मिलते हैं। → ओनल्डो मजोटा नाम से

- 1921 में : बोस ICS छोड़कर भारत लौट आए। उन्होंने 1943 में आजाद हिंद फौज (फ्री इंडिया लीजन / टाइगर लीजन) की स्थापना की (बाद में इसे INA में मिला दिया गया)

- रास बिहारी बोस → जापान से 'आर्डर ऑफ द राइजिंग सन' पुरस्कार प्राप्त किया।

PARMAR SSC

15 अगस्त → जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया।

18 अगस्त → सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई (माना जाता है)

सुभाष-चन्द्र बोस { तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा
जय हिन्द
दिल्ली चलो }

↓

सर्वप्रथम गांधी जी को 'राष्ट्रपिता' कहा। (सिंगापुर रेडियो के माध्यम से)

महिला रेजिमेंट का गठन: रानी लक्ष्मीबाई नाम से।

INA परीक्षण

1st → तीन लोगो के खिलाफ

नवंबर 1945 लाल किले में पहला मुकदमा
- → प्रेम कुमार सहगल
- → सह नवाज खान
- → गुरबख्श सिंह ढिल्लन

{पाकिस्तान शब्द रहमत अली द्वारा दिया गया।}

14 फरवरी 1946 को रॉयल भारतीय नेवी की HMS तलवार ने विद्रोह कर दिया।

(रॉयल इंडियन नेवी विद्रोह) ↓ जहाज पर लिखा → 'अंग्रेजों! भारत छोड़ो'

कैबिनेट मिशन:

PM - क्लीमेंट एटली

3 सदस्यीय समिति भेजी गयी → पाकिस्तान की मांग को इस मिशन ने स्वीकार नही किया।

1. स्टेफर्ड क्रिप्स
2. AV अलेक्जेंडर
3. जॉन पेथिक लॉरेन्स → अध्यक्ष

16 अगस्त - सीधी कार्यवाही दिवस

↓

कलकत्ता मे हिंसक हत्यायें (नुवाखली में)

जिन्ना ने मुसलमानों को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनानें का निर्देश दिया।

(नोआखाली में)

↓

15 अगस्त 1947 को गांधी जी यही थे

PARMAR SSC

जून 1947 → भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947

↓

माउंटबेटन योजना

↳ भारत का अंतिम गवर्नर जनरल

- सी राजगोपालाचारी, बाद में स्वतंत्र भारत के अंतिम गवर्नर जनरल बने।

विभाजन योजना ↵

- इंदिरा गांधी (तत्कालीन PM) के कार्यकाल में पश्चिमी पाकिस्तान, पूर्वी पाकिस्तान से अलग हुआ। (1971)

↓ अब बांग्लादेश

↓

शिमला समझौता (1972) पर हस्ताक्षर

भारत और पाकिस्तान

↓ ↓

इंदिरा गांधी — जुल्फिकार भुट्टो (तत्कालीन पाकिस्तान के राष्ट्रपति)

- सुभाष चन्द्र बोस को देशभक्तों का देशभक्त कहा - महात्मा गांधी ने

राजनीतिक गुरु ↳ चितरंजन दास

→ भारत छोड़ो आंदोलन के एकमात्र शहीद जिन्हे फांसी दी गई - कुशल कोंवर

→ सरोजिनी नायडू → भारत कोकिला → गांधी ने

→ नाथूराम गोडसे → फांसी पर चढने से पहले भारत के पुनः एकीकरण होने तक अपनी राख को अक्षुण्ण रखने और पुनर्मिलन के बाद उन्हे सिंधु नदी मे बहाने की इच्छा व्यक्त की थी।

→ शहीद लक्ष्मी नायक → उड़ीसा से

→ महात्मा गांधी ने अजातशत्रु → डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को बोला।

→ India of my dreams → महात्मा गांधी के भाषणो & नोट्स का संग्रह

PARMAR SSC

→ एक झंडा सभी देशो के लिए एक आवश्यकता है। लाखों लोग इसके लिये मर चुके है महात्मा गांधी ने

→ जिला प्रमुख के सीधे नियंत्रण और इसके पेरोल पर जमींदारी थानेदारों के स्थान पर दरोगा प्रणाली की शुरुआत की - कार्नवालिस ने

PARMAR SSC

भक्ति & सूफी आंदोलन

भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषताएं :

- अनुष्ठान और बलिदान त्याग दिया।
- एकेश्वरवादी (एकल ईश्वर की पूजा)
- ईश्वर या तो साकार है या निराकार है।

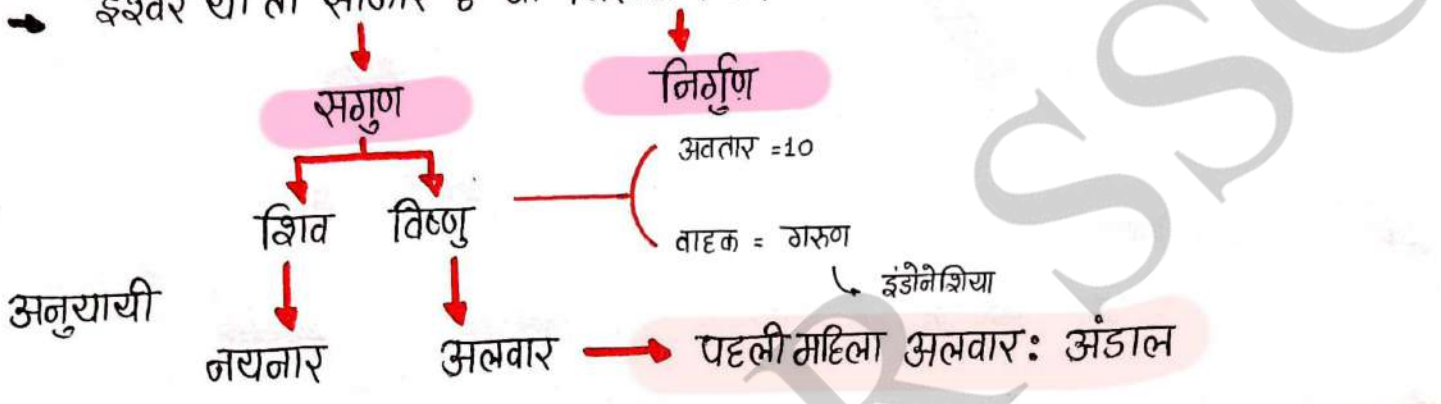

भक्ति आंदोलन की प्रवर्तक

भक्ति आंदोलन :

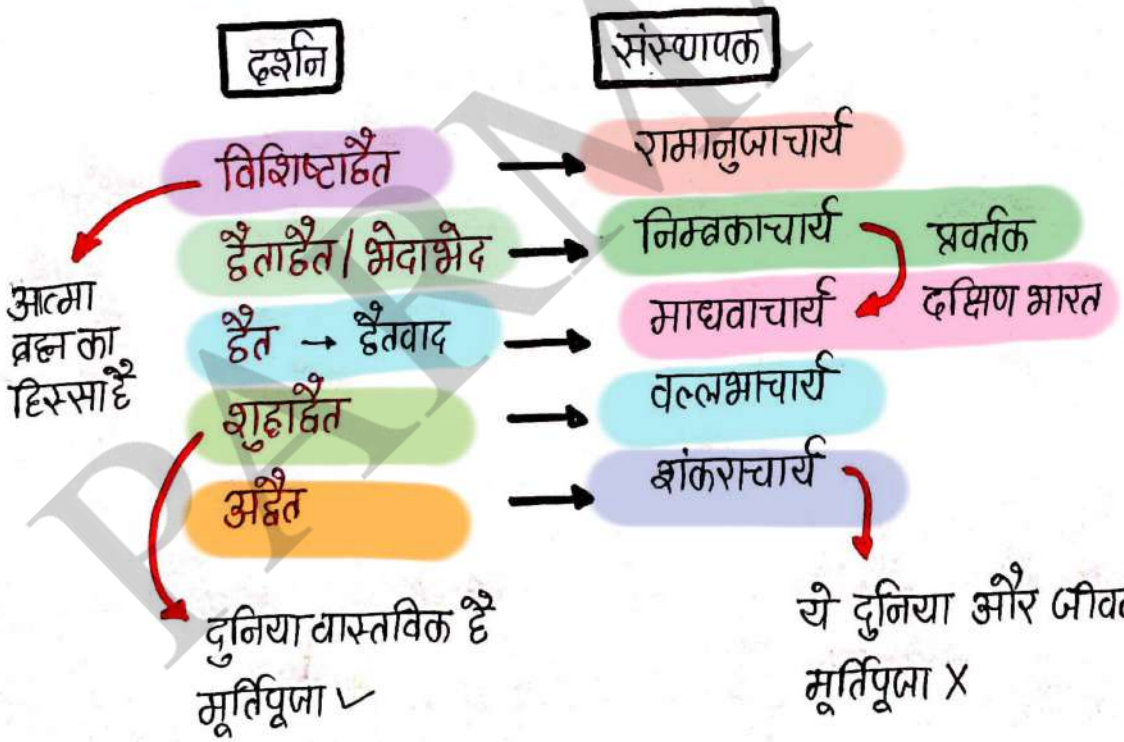

भक्ति आंदोलन के संत :

PARMAR SSC

- **रामानुजाचार्य** → विशिष्टवाद के संस्थापक
  1017 - 1137 AD
- **रामनन्द** → निर्गुण शाखा से संबंधित (उत्तर भारत)
  शिष्य - कबीरदास
- **कबीरदास** → इनके दोहे हिन्दू व मुस्लिम धर्म की आलोचना करते है।
  (1440 - 1510) निर्गुण शाखा से संबंधित उपदेशों का संकलन = बीजक

- **गुरुनानक** → 1469 - 1538 AD
  निर्गुण शाखा से संबंधित
- **चैतन्य** → 1486 - 1533 AD
  गौड़िया के राजा
  बंगाल मे भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक → बंगाल वैष्णववाद

- **विद्यापति** → पदावली का संग्रह
  ↳ राधा & कृष्ण की प्रेम गाथाएं
- **पुरंदर दास** → कर्नाटक संगीत के पिता
  ↳ दक्षिण भारत का संगीत , कर्नाटक
- **वल्लभाचार्य** → शुद्धअद्वैतवाद सिद्धांत दिया।
  पुष्टिमार्ग दर्शन दिया।
  उन्होने कहा- "राम & कृष्ण , विष्णु के अवतार है।"
- **मीराबाई** → 1498 - 1546
  राणासांगा की बहू (मेवाड़)
  राठौर राजकुमारी अनुयायी - रैदास / रविदास की
  कृष्ण की भक्त → अपना पूरा जीवन कृष्ण की भक्ति मे लगाया।
- **सूरदास** → 1489 - 1563
  वह अंधे थे।
  आगरा से
  अपना पूरा जीवन कृष्ण की भक्ति मे लगाया।

PARMAR SSC

- **तुलसीदास** → राम के भक्त
  (1532-1623)
  प्रसिद्ध रचनायें → रामचरितमानस
  → कवितावली
  → गीतावली
- **दादू दयाल** → निर्गुण भक्ति शाखा से
  (1544 - 1603)
  दादू पंथ के संस्थापक
- **शंकरदेव** → असम में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक
  (1449-1568)
  सत्रिया नृत्य के संस्थापक
  बोरगीत दिया।
- **त्यागराज** → राम के भक्त, तमिलनाडु (1767-1847)

महाराष्ट्र के भक्ति संत :

- **ज्ञानेश्वर/ज्ञानदेव** → महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के संस्थापक
  (1271-1296)
  भगवद्गीता पर टीका लिखा → भावारथदीपिका (भावार्थदीपिका)
- **नामदेव** → वारकरी संप्रदाय के संस्थापक
  ↓
  विट्ठल → विष्णु
  (1270-1350AD)
  अभंगों की रचना की।
- **एकनाथ** → 1533-1599AD
  लेखक- भावार्थ रामायण
- **तुकाराम** → लिखा- अभंग, 1598-1650 AD
  ↳ भगवान को समर्पित गीत
- **रामदास** → 1608-1681 AD
  लिखा- दसबोध
  ↳ उनके उपदेशों का संकलन

PARMAR SSC

कर्नाटक के भक्ति संत :

बसवन्ना :

- शिव
- जाति प्रथा / वैदिक रीति-रिवाजों के विरुद्ध

- लिंगायत / वीरशैव संप्रदाय की स्थापना की।
- प्रारम्भ में वह जैन थे और बारहवीं शताब्दी में चालुक्य राजा के दरबार में मंत्री थे।

सिख गुरु :

सिख धर्म का युग :

- 1469 में नानकदेव के जन्म से लेकर गुरु गोविंद सिंह के जीवन तक।
- 1708 में गुरुगोविंद सिंह की मृत्यु के समय, उन्होंने सिख धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की उपाधि दी।

1. **गुरुनानक →** 1469 - 1539
   जन्म - तालवण्डी / ननकाना साहिब (पाकिस्तान)
   मृत्यु - करतारपुर
   लंगर व्यवस्था की शुरुआत की। सिख धर्म की स्थापना की।

   अस्पृश्यता को खत्म करने की 3 चीजें शुरु की -
   - लंगर - सामुदायिक रसोई
   - पंगत - खाना
   - संगत - निर्णय लेना

   वह मुगल सम्राट बाबर के समकालीन थे।

2. **गुरु अंगद देव →** 1539 - 1552
   गुरुमुखी लिपी के संस्थापक

- नानक देव की रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में गुरुमुखी लिपि में संकलित किया।

PARMAR SSC

3. गुरु अमरदास साहिब → • 1552 - 1574
• अकबर के समकालीन

• सिखों के लिए आनंद कारज विवाह समारोह की शुरुआत की गई।

• पुरुषों और महिलाओं के लिए धार्मिक मिशनों की मंजी और पीरी प्रणाली स्थापित की।

Golden Temple

4. गुरु रामदास → • 1574 - 1581
• अमृतसर के संस्थापक

• उन्होंने सिखों के पवित्र शहर अमृतसर में प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर का निर्माण शुरू कराया।

• उन्होंने मुस्लिम सूफी मिंया मीर से हरमिंदर साहिब की आधारशिला रखने का अनुरोध किया।

5. गुरु अर्जुन देव → 1581 - 1606
आदिग्रंथ का संकलन
स्वर्णमंदिर के निर्माण को पूरा किया।
↳ सुंदरीकरण → राजा रणजीत सिंह
जहांगीर द्वारा मार दिया गया।

• उन्होंने सिखों के धर्मग्रंथ आदिग्रंथ का संकलन किया।

• जहाँगीर (खुसरो) ने उसी उन्हें फांसी पर चढ़ाने का आदेश दिया। इस प्रकार, उन्हे शहीदन-दे-सरताज (शहीदों का ताज) कहा गया।

6. गुरु हरगोविन्द साहब → 1606 - 1644
अकाल तख्त का निर्माण, 1609

• गुरु अर्जन देव के पुत्र और 'सैनिक संत' के रूप में जाने जाते थे।

• धर्म की रक्षा के लिए हथियार उठाने वाले प्रथम गुरु।

• उन्होंने मुगल शासकों जहांगीर और शाहजहां के खिलाफ युद्ध छेड़े।

PARMAR SSC

7. गुरु हर राय साहिब → 1644 - 1661
औरंगजेब के समकालीन

- उन्होंने मुगल शासक शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह को शरण दी, जिन्हे बाद में औरंगजेब द्वारा प्रताड़ित किया गया।
- सम्राट औरंगजेब के साथ संघर्ष से परहेज किया और अपने प्रयासों को मिशनरी कार्यों के लिए समर्पित किया।

8 गुरु हरकृष्ण साहिब → 1661 - 1664
औरंगजेब के समकालीन

- गुरु हर कृष्ण सबसे छोटे गुरु थे (5 वर्ष की आयु में)
- वह औरंगजेब के समकालीन थे और उसे इस्लाम विरोधी ईश्वरनिंदा के आरोप में दिल्ली बुलाया गया था।
- चेचक से मृत्यु हो गई।

9 गुरु तेग बहादुर साहिब → 1665 - 1675
औरंगजेब द्वारा मार दिया गया।

- उन्होंने आनन्दपुर शहर की स्थापना की।
- उन्होंने मुगल शासक औरंगजेब द्वारा हिंदू कश्मीरी पंड़ितों के जबरन धर्म परिवर्तन का विरोध किया और इसके लिए उन्हें प्रताड़ित किया गया।

10 गुरु गोविन्द सिंह साहिब → 1675 - 1708
अंतिम गुरु
खालसा पंथ की शुरुआत

- उन्होंने 1699 में खालसा की स्थापना की, जिससे सिखों को अपनी सुरक्षा के लिए संत-सैनिक संघ में बदल दिया गया।

PARMAR SSC

- मानव रूप में अंतिम सिख गुरु और उन्होंने सिखों की गुरुपद की जिम्मेदारी गुरु ग्रंथ साहिब को सौंपी।
- वजीर खान (सरहिंद के मुगल शासक) द्वारा भेजे गए दो अफगानों द्वारा हत्या कर दी गई।

गुरु ग्रंथ साहिब :

- गुरु ग्रंथ साहिब (जिसे आदि ग्रंथ भी कहा जाता है) सिखों का धर्मग्रंथ है।
- यह ग्रंथ गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है और इसमें सिख गुरुओं द्वारा कहे गए वास्तविक शब्द और छंद शामिल है।
- इसे किसी जीवित व्यक्ति की बजाय सिख धर्म का सर्वोच्च आध्यात्मिक अधिकारी और प्रमुख माना जाता है।

सूफी आंदोलन :

- दार-उल-काफिर
  - काफिर की भूमि (जहाँ केवल हिन्दु रहते)
    - परिवर्तन किया
    - इस्लाम की भूमि → दार-उल-हर्ब
    - कैसे ?
      - जिहाद के जरिये (धार्मिक युद्ध)
        - जो जिहाद करता है। → मुजाहिद (जिहाद पर जन्नत मिलती)

- ख्वाजा अली हुजविरी → 11वीं शताब्दी
  दाता गंज बख्श (अन्य नाम)
- शेख बहाउद्दीन जकरिया → 1182 - 1262
  सुहरावर्दी सिलसिला के संस्थापक
  मुल्तान में प्रमुख खानगाह की स्थापना की।

PARMAR SSC

→ ख्वाजा मुईनुद्दीन / मोइनुद्दीन चिश्ती

→ चिश्ती संप्रदाय के संस्थापक

चिश्ती संप्रदाय के अन्य संत :

→ शेख हामिउद्दीन नागौरी (1192-1274)

ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी → शिष्य- कुतुबुद्दीन ऐबक

↳ इनके ही नाम पर ऐबक ने कुतुबमीनार की नींव रखी। (1206)

बाबा फरिउद्दीन / गंज-ए-शंकर → 1175-1265AD
बाबा फरीद के नाम से प्रसिद्ध

शेख निजामुद्दीन औलिया → 1236 - 1325 AD
महबूब-ए-इलाही नाम से प्रसिद्ध

सरयद मोहम्मद गेसू दराज →

बन्दनवाज / बंदानवाज नाम से प्रसिद्ध

शेख नसीरुद्दीन महमूद → बाद में उन्हें चिराग-ए-दिल्ली के नाम से जाना गया।

शेख बदरुद्दीन समरकन्दी → फिरदौसी संप्रदाय के संस्थापक

सूफी शब्द	अर्थ
• तसाव्वुफ	→ सूफीवाद
• शेख/पीर/मुर्शिद	→ आध्यात्मिक शिक्षक
• मुरीद	→ अनुयायी
• खलीफा	→ उत्तराधिकारी

PARMAR SSC

- खानकाह → वे स्थान जहाँ सूफी गुरुओं ने अपनी सभाएँ आयोजित की
- समा → संगीतमय गायन / पवित्र गीतों का पाठ
- रक्सा → नृत्य
- फना → खुद ही में खो जाना
- जियारत → तीर्थ यात्रा

विष्णु अवतार : मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिम्हा, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण या बलराम, बुद्ध या कृष्ण, कल्कि /

- अमीर खुसरो → शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य
  - तूती-ए-हिंद
- नाथपंथी, सिद्ध और योगी (भक्ति धर्म): पूर्वी भारत
- पंजाब, भारत में निरंकार (निराकार) रूप में ईश्वर की पूजा पर जोर दिया: बाबा दयाल दास
- गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिखों ने मुगलों के खिलाफ विद्रोह किया/
- खुसरो (जहाँगीर के पुत्र) को सहायता प्रदान की थी: गुरु अर्जुन देव जी ने/

→ मध्ययुगीन सूफी परंपरा के संदर्भ में 'वाली' शब्द का अर्थ- भक्त
→ भगवतगीता का सर्वप्रथम अंग्रेजी अनुवाद- चार्ल्स विल्किंस
→ 19 वीं शताब्दी में मध्यभारत में सतनामी आंदोलन- गुरु घासीदास
→ तानसेन के गुरु- गुरु हरिदास
→ गुरु रविदास = मोची संत

PARMAR SSC

PARMAR SSC